किछु वैज्ञानिक/तकनीकी शब्दक परिचय

कार्बन नैनोट्यूब–साधारण कोयला, हीरा आ ग्रेफाइट कार्बन तत्वक प्रकृति मे उपलब्ध रूप छिऐक। एकर अतिरिक्त वैज्ञानिक लोकनि द्वारा नैनो (10^{-9} मीटर) आकार मे किछु रूप बनाओल गेल। नैनोट्यूब ओही क्रम मे एक रूप छिऐक जे बेलनाकार नली सदृश होइत छैक। एकर सतहे पर कार्बन परमाणु रहैत छैक। एकर विशेष गुण जेना कि मजगूती, ताप आ विद्युत चालकता आदि एकरा बहुत उपयोगी पदार्थ बना देलकैए।

ग्राफीन कम्पोजिट–ग्राफीन मात्र एक परमाणु मोट कार्बनक विशेष रूप छिऐक जकर गुण नैनोट्यूबक तुलना मे बहुते नीक छैक। कम्पोजिट बनबै लेल कोनो पदार्थ, जेना विशेष प्लास्टिक, फाइवर ग्लास आदिक तहे तहे ग्राफीनक टुकड़ी लगा देल जाइत छैक। एहन कम्पोजिट बहुत मजगूत आ अन्य भौतिक गुण सँ युक्त होइत छैक।

साइबोर्ग (Cyborg)–एकटा काल्पनिक स्थिति छिऐक जाहि मे मनुष्यक मस्तिष्क कें एकटा शक्तिशाली कम्प्यूटर मे नकल कऽ लेल जाइत छैक। ओहि कम्प्यूटर मे कृत्रिम ज्ञान (artificial intelligence) सँ बनाओल न्यूरल नेटवर्क ओहिना काज करए लगतैक जेना मनुष्यक मस्तिष्क मे उपस्थित न्यूरॉनक बीच तरंगक संचार होइत छैक। फलस्वरूप ओ कम्प्यूटर कोनो रोबोट मे लगा देला सँ ओ रोबोट मनुष्यक प्रतिरूप बनि जेतैक।

सोनार (SONAR)–एहि शब्दक विस्तृत रूप भेल Sound Navigation And Ranging. ई तकनीक विशेषतः जलक भीतर जेना कि समुद्र मे पनडुब्बी आदिक मार्ग बतेबा लेल, समुद्र मे नुकाएल कोनो वस्तुक स्थिति जनबाक लेल प्रयुक्त होइत छैक। एहि विधि मे जलक भीतर ध्वनि तरंग छोड़ल जाइत छैक आ लक्ष्य बला वस्तु सँ परावर्तित तरंगक अध्ययन कऽ कए ओकर स्थिति, दूरी अथवा गहराइ आदिक जानकारी प्राप्त कएल जाइत छैक।

विशेष जानकारी लेल देखू हमर पुस्तक 'विज्ञानक बतकही' दूनू भाग।

झाँकी

खिस्सा शुरू होइत अछि गाम माहीपुर सँ। गाम मे हल्ला भऽ गेलै जे बड़की पोखरि मे एकटा फुटबॉल जकाँ कोनो चीज हेलि रहल छै, कखनहु कए ओहि मे सँ सापक लपलपाइत जीह जकाँ किछु बहराइत छै जाहि सँ ओ माछ पकड़ि लैत छै। किछु लोक कें लगलै जे ओ जीव माछ खा लेलकै किन्तु किछु अन्य लोक देखलक जे माछ कें ओ जीव फेर पानि मे फेकि दैत छलै। बहुत रास धिया पूता सब हेलि कए ओकरा पकड़बाक कोशिश केलक मुदा ककरो पकड़ि मे नहि एलै। ओ पोखरि मे एमहर सँ ओमहर फतिंगा जकाँ फनैत रहैत छल। ओकर रंगो क्षणे-क्षणे बदलि रहल छलै। जखने कियो ओकरा लग पहुँचै, ओ डुबकी लगा लैत छल आ उपर उठैत छल ओहि ठाम जाकए जतए ओ लोक सब सँ बहुत दूर रहैत छल। एक बेर तऽ पानिक भितरे तरुण कें पएर लग आबि गेलै। ओ पकड़ए चाहल मुदा ओकरा लगलै जेना ओहि गेंद मे नागफेनीक गाछ जकाँ असंख्य छोट छोट काँट होइ, ओकर हाथ सँ खून बहऽ लगलै आ ओहि जन्तु कें ओ पकड़ि नहि सकल। किछु गोटे ओहि गोलाक फोटो मोबाइल सँ लऽ लेलक। फोटो मे मात्र एकटा कारी वृत्त देखाइत छलै।

जखन पोखरि मे बहुत रास लोक जमा भऽ गेलै तखन ओ गोला एकाएक चिड़ै जकाँ पाँखि पसारि उपर उड़ि गेलै। ओहि गेंद सँ पाँखि कोना बहरेलै से कियो नहि बुझलकै। लोक देखिते रहि गेल। आश्चर्य ईहो लगलै जे पाँखि सँ लाल रंगक प्रकाश एना बहरा रहल छलै जेना ओहि मे असंख्य छोट छोट एलईडीक लड़ी बैसाओल होइ। एक गोटेक मोबाइल मे इहो फोटो आबि गेल रहै। ओ जन्तु उपर उड़िते चल गेल अनन्त आकाश मे।

एहन जन्तु तऽ पूर्व मे कियो कहियो देखनहि नहि छल। आइ जे देखने छल सब ओकरा अपना अपना हिसाबें वर्णन करए लागल। कियो कहै जे ओ जेना स्टीलक बनल गोला छलै। ओकरा बहुत रास छोट छोट छिद्र छलै जे आँखि जकाँ लगैत छलै।

गोला मे असंख्य काँटक अनुभव तऽ तरुण कें भैए गेल छलै मुदा आन जे कियो पानिक उपर देखलकै ककरो ओहन काँट नहि देखाएल रहै। किछु गोटेक अनुसार ओ गोला तऽ एकदम चिक्कन छलै। ओ पानि मे डुबकी लगबै काल काँट बहार कऽ लैत छल जेना साही अपन काँट पसारि लैत छै। ई तऽ मात्र अनुमाने छलै। जतेक फोटो लेल गेल ताहि मे ने तऽ असंख्य छिद्रे देखाइत छलै आ ने एकोटा काँटे।

दोसर दिन सब ठेकना कए बैसल रहल। लड्डू बाबू अपन पुरना दुनाली बन्दूक निकालि कए साफ कएलनि आ टोटा भरि कए चल गेलाह पोखरि पर जे आइ कोनो तरहें ओहि जन्तुक शिकार करबाके अछि। लोक टकटकी लगौने चारू कात बैसल रहल। अकस्मात उपर मे देखलक जे पोखरि मे एकटा नहि, पूरे पाँचटा एके समान गोला उतरलै आ एमहर-ओमहर कूदऽ फानऽ लगलै। एतेक गोलाक बीच पोखरि मे पैसि कए एकोटा कें पकड़ब सम्भव नहि छलै। किछु गोटे जाल खसेबाक विचार केलनि तऽ किनको सहथ फुरेलनि। मुदा जखने लड्डू बाबू बन्दूक सरिएलनि कि एकटा गोला उड़ि कए हुनका झटका दैत उड़ि गेल। ओकरा संग आन गोला सेहो ककरो माथ छुबैत ककरो कान लग घनघनाइत उड़ि गेल। लोक ठकमकाएले रहि गेल। तखने जेना ओ पाँचो गोला अकास मे उड़ैत गाबए लागल गोसाओनिक गीत "जय जय भैरवि....।" किन्तु लोक सब जे सुनलक से एहि बात पर एकमत नहि छल जे सत्ते मे ओ गोला सब गोसाओनिक गीत गाबि रहल छल आ कि ओहिना कोनो हल्ला कऽ रहल छल जे लोक कें गीत जकाँ बुझा रहल छलै। एक गोटे मजाक केलक–"हँ रौ, हमर बाबा कहथिन जे जखन ट्रेन चलै छै तखन ओ जय-जय-काली, जय-जय-काली' बजैत रहैत छै। तहिना अकासक ओ हल्ला तोरा गोसाओनिक गीत जय-जय-भैरवि.... बुझा रहल छौ।" लोक देखलक जे हल्ला अथवा गीत खतम भेलै आ पाँचो गोला बहुत उपर उड़ि गेलै। आब ओहि सबसँ बहुत तेज घनघनेबाक आवाज निकलि रहल छलै जेना हजारो मच्छर ककरो कान लग आबि गेल होए। ई तऽ नवका आश्चर्य छलै। कालि जखन ओ जीव पोखरि मे छल तखन तऽ ओकरा देह सँ कोनो तरहक आवाज नहि निकलि रहल छलै। आइ ओकर पाँखि सेहो बदलल लगैत छलै आ ओहि सँ विभिन्न रंगक प्रकाश बहराइत छलै। जाबत लोक सब किछु बूझए, ओ जीव उपरे मे लागल गोल चक्कर बनबए आ बहुत तेजी सँ घटैत-बढ़ैत घेरा मे चक्कर काटए। आब ओकरा देह सँ जे आवाज निकलि रहल छलै से आर तेज भऽ गेलै। जतेक बेसी वेग सँ ओ गोल चक्कर मे उड़ैत छल, ओकर आवाज ओतेक बेसी तेज भऽ जाइ। संगहि पाँखि सँ बहराइत प्रकाश सेहो बेसी इन्द्रधनुषी भऽ गेलै। होइत होइत आवाज एक बेर तऽ एतेक तेज भऽ गेलै जे सबकें लगलै कान

फाटि जेतै। तखने पाँखिक प्रकाश सेहो एतेक तेज भऽ गेलै जेना सूर्य लग मे आबि गेल होथि। लोक कें चकचोन्ही लागऽ लगलै। सब अपन आँखि आ कान बन्द कऽ लेलक। लड्डू बाबू फेर अपन बन्दूक उठा कए कोशिश केलनि जे कहुना उपरे मे ओकरा पर निशाना साधी मुदा एतेक तेज भगैत वस्तु पर निशाना कोना साधल जा सकैत छलै? घनघनेनाइ तेज भइए रहल छलै, कियो किछु बूझि नहि रहल छल कि एतबे मे ओ सब उड़ि गेल से बिलाइए गेल। सब लोक निराश भेल अपन अपन आङन गेल। आइ तेज प्रकाशक कारण ककरो फोटो नहि लेल भेलै।

आब ई जीव ओहि गाम मे चौक चौराहा पर चर्चाक विषय भऽ गेल। एखन तक प्रत्यक्षदर्शी किछुए लोक छल। अनका एहि जीवक वर्णन सुनि कए दू तरहक भाव अबैत छलै–अतीव आश्चर्यक आ नहि तऽ ओतबे अविश्वासक। अविश्वास केनिहारक संख्या मुदा बढ़लै नहि कारण कोनो एक गोटे तऽ देखने छलै नहि। पोखरि मे हेलैत ओहि वस्तु कें करीब बीसो गोटे देखने छलै, बहुतो फोटो सेहो मोबाइल मे छलै लोकक जिज्ञासा शान्त करबाक लेल। दोसर दिन सेहो ओतबे लोक रहै ओकर शिकार करबा लेल तैयार जखन ओ सब कें चकमा दैत बिला गेल छलै। ओहि दिन ककरो फोटो लेल नहि भेल छलै। एहि गामक लोक ओहि अजीब वस्तुक नाम रखलक "उड़नछू गोला"।

ओहि दू दिनक बाद जेना सब किछु शान्त भऽ गेलै। लोक शनैः शनैः बिसरए लागल। करीब एक मासक बाद एहने खिस्सा पाँच किलोमीटर दूर कनकटोली गाम सँ सुनबा मे एलै। माहीपुरक चौक सँ उठैत ओ खिस्सा पहिनहि कनकटोली सेहो पहुँचि गेल छलै। लोक ताक मे छल ओहि उड़नछू गोला के। गोला ओहि गामक बगल मे सरपतिया चऽर के बड़का झील मे उतरल छलै। जखने गौआँ के सुनबा मे एलै, लोक दौड़ि गेल जाल, सहथ, बन्दूक, गुलेती आदि विभिन्न मछमारा, चिड़ैमारा हथियार लऽ कए। झील मे गोला ओहिना घुमैत कुदैत आ बीच-बीच मे माछो पकड़ैत। ओतेक पैघ झील मे गोला पर कोनो तरहक आक्रमण करब बहुत कठिन छलै। एक बेर जखन गोला कने कछेर दिस एलै, ओतए एकटा होशियार लोक बन्दूक लऽ कए ओहि गोला पर गोली चला देलकै। ओहि गौआँ सबके कहब छलै जे बन्दूक चलबिते ओहि गोला सँ एकटा प्लेट जकाँ बहरेलै आ गोली कें रोकिए नहि लेलकै, गोली ओहि प्लेट सँ टकरा कए तेना कए आपस एलै जे बन्दूक चलौनिहारक कानक निचला भाग कें छुबैत चल गेलै। एक गोटे ओहि प्लेटक फोटो मोबाइल मे लऽ लेबा मे सफल भेल। तकर बाद ओ गोला पानि मे जे डुबकी लगौलक से निपत्ते भऽ गेल। माहीपुर आ कनकटोलीक घटना मे पैघ अन्तर ई भेलै जे पहिलुक

बेरक गोला उपर अकास मे उड़ैत चल गेल रहै आ दोसर बेरक गोला पनिडुब्बी जकाँ झीलक भीतरे बिला गेलै।

कनकटोलीक चतुर पंडित कलपू कें एहि मे नीक अवसर देखेलनि। ओ माहीपुरक अपन चेला खोखन कें बजा कए किछु मंत्रणा केलनि। तकर बाद कनकटोली बजार आ माहीपुर चौक पर प्रचार होमए लगलै जे ई गोला वरुण देवताक रूप छलनि। आ कनकटोली मे वरुण देवता हाथ उठा कए गोली रोकने छलखिन। अस्तु, एकर प्रभाव गाम घर मे की भेलै से बाद मे कहब।

एमहर खबरि आब प्रशासन तक सेहो पहुँचि गेलै। मुदा ककरो किछु बूझऽ मे नहि अबै जे की कएल जाए। ओ जीव सब दिन कोनो ठेकनाएल जगह पर तऽ अबै नहि जे ओकरा फँसेबाक कोनो ओरिआओंन कएल जइतै। संगहि दूनू गाम सँ जे किछु सुनबा मे एलै ताहि सँ इहो अन्दाज भइए गेलै जे ओकरा फँसाएब कि पकड़ब आसान काज नहि छलै। लोक कें कोनो अन्दाज नहि छलै जे कोन गोला उड़ि जाइत छलै आ कोन डुबकी लगा लैत छलै। एहन स्थिति मे स्थानीय प्रशासन एकर रिपोर्ट तैयार केलक जे पुरना उड़न तस्तरी (unidentified flying object, UFO) बला खिस्सा सँ मिलैत जुलैत छलै, ओहि मे मोबाइल सँ लेल गेल फोटो सब लगा देलकै आ गृह मंत्रालय कें पठा देलक। एतबे सँ सब अपन कर्तव्यक इतिश्री बुझलक। रिपोर्टो एहन छलै जे गृह मंत्रालय मे ककरो सुगबुगी नहि भेलै।

करीब तीन चारि मास बीत गेलै। लोक सब उड़नछू गोलाक घटना कें बिसरए लागल छल कि फेर एक राति विचित्र दृश्य देखलक। ई दृश्य एहन छलै जे कोनो एक दू गामक लोक नहि, करीब पचीस किलोमीटर के घेरा मे बसल सब गाम देखलक, संगहि जिला प्रशासनक अधिकारीगण सेहो देखलनि।

लोक सब सुतली राति चौंकि कए उठल आ अकास देखि विस्मित रहि गेल। अकास एना आलोकित छलै जेना रातिए मे सूर्य उगि गेल होथि। ओकर रंग सेहो क्षणे-क्षणे बदलि रहल छलै। सबसँ विस्मयकारी बात भेलै जे बिजली गुल भऽ गेलै आ सबटा मोबाइल आ लैंडलाइन बला टेलीफोन आदि काज करब बन्द कऽ देलकै। एना मात्र दस मिनट रहलै आ तकर बाद जेना एकाएक सब किछु अपन पुरना स्थिति मे आबि गेलै। बिजली विभाग कें अपना सिस्टम मे कोनो गड़बड़ी नहि बुझेलै। एहि घटना सँ ओहि उड़नछू गोला सब कें कोनो सम्बन्धो छलै कि नहि सेहो लोक कें बुझबा मे नहि एलै।

आब जिला प्रशासन चिन्तित भऽ गेल। पहिलुक घटना सब विचित्र जरूर छलै किन्तु खतराक संकेत बला नहि। आब जे भेलै ताहि मे तऽ खतराक संकेत स्पष्ट

छलै, कारण जे कोनो शक्ति, ओ कोनो शत्रु देशक होइ आ कि अन्य ग्रहक, संचार व्यवस्था कें अस्तव्यस्त करबा पर लागल छलै। सेहो चोरा नुका कए नहि, अपन विकराल रूप अकास मे पसारने। स्थिति एहन भऽ गेलै जे कोनो आक्रमणक समय सेनाक मदतिओ लेब सम्भव नहि छलै कारण खबरि करबाक सब साधन कें निष्क्रिय करा देल जाइत छलै।

एहि बेर जिला प्रशासन पैघ रिपोर्ट तैयार केलक आ खाली पठा कए छोड़ि नहि देलक, अपितु गृह सचिव संग मीटिंग सेहो कएलक आ हुनका एहि विस्मयकारी घटनाक जानकारी देलक। सरकार मे आब सबतरि चिन्ता पसरि गेलै। सेना कें आ अंतरिक्ष विभाग कें एलर्ट कऽ देल गेल।

फेर सब किछु शान्त भऽ गेलै। जाबत घटनाक पुनरावृत्ति नहि होइतै ताबत कोनो तरहक जाँच करब सम्भवे नहि छलै। विश्व मे एहि सँ पहिने उड़न तस्तरी बला घटना जतेक भेल छलै से भारत मे नहि देखाएल छलै। आब जे घटना देखेलै से सबसँ अलग छलै। पहिने लोक अकास मे किछु देखने छल, ओहि बारे मे कतेको भ्रांति सेहो पसरल छलै, जे देखलक ओहि व्यक्ति कें लोक मनोवैज्ञानिक रूपें सम्मोहित बता देलक। घटनाक प्रामाणिकता पर बहुत तरहक संदेह सेहो व्यक्त कएल गेल छलै। मुदा एखन जे भारतक मिथिला क्षेत्र मे भऽ रहल छलै ओकरा पर सन्देहक कोनो सबाले नहि उठैत छलै।

एहि बीच सेना आ अंतरिक्ष विभागक संयुक्त टीम मिलि कए कनकटोलीक हाइ स्कूल मे एकटा यंत्र बैसौलक जकर संकेत मुख्यालय कें नियमित रूपें पठाओल जाए लगलै। मुदा ने घटनाक पुनरावृत्ति भेलै आ ने ओहि यंत्र मे कहियो किछु पकड़ेलै। शनैः शनैः लोक एकरा प्रति उदासीन भऽ गेल।

तकर करीब दू सालक बाद एकटा एहन घटना भेलै जकर कोनो संकेत फेर हाइ स्कूलक ओहि यंत्र मे नहि पकड़ेलै। साँझक समय, माहीपुर मे पाँचम कक्षाक बालिका अनु अपना छत पर एकसरे खेलाइत छल कि ओकरा आगू मे उपर सँ चॉकलेटक एकटा पैकेट खसलै। ओकरा बड़ आश्चर्य भेलै। पैकेट उठा कए देखऽ लागल कि सुनलक जेना बगल सँ कियो बाजि रहल होइ—"अनु, खा ले, डराइक कोनो बात नहि।" ओ चारू कात तकलक, आवाज कतए सँ एलै से पता नहि चललै। ओ किंकर्तव्यविमूढ़ भेल ठाढ़े रहल कि कने कालक बाद फुटबॉल सन एकटा गोला ओकरा पएर लग आबि गेलै। आ शुरू भेल नवका खेला।

दोस्ती

अनुक पएर लग ओ गोला छलै। ओहि सँ फेर आवाज भेलै—"चॉकलेट खा ले, कोनो डर नहि, ई तोरा गामक दोकानक चॉकलेट सँ नीके छै।" आब अनु कें आश्चर्य भेलै जे ई कोन तरहक चॉकलेट छिऐ आ किएक एहि गोला सँ एहन आवाज निकलि रहल छै। ओकरा डरो भेलै मुदा अपना कें सम्हारने रहल। ओ पूछि बैसल—"की हम ई चॉकलेट पापा-मम्मी कें देखा कए खा सकैत छी?" गोला सँ फेर आवाज भेलै—"जरूर, सब मिलियो कए खा सकैत छें, खाली पैकेटक कागत हमरा ओदारि देबऽ दे आ हुनका सब कें ई नहि बतबिहै जे चॉकलेट कतऽ सँ एलै।" एतबा कहलाक बाद अनु देखलक जे चॉकलेटक पैकेट सँ लपेटल रंगीन छपुआ कागत अपनहि उड़ि गेलै। गोला सँ फेर आवाज एलै—"हम तोरा संग दोस्ती करए एलहुँ, एतए बैसि कए लूडो-तास खेलैतहुँ, की विचार छौ तोहर?" अनु असमंजस मे पड़ि गेल। गोला बाजल—"हम बूझि रहल छियै तों असमंजस मे पड़ि गेल छें। कोनो बात नहि, आइ हम जाइ छी। यदि तोरा इच्छा हेतौ हमरा संग दोस्ती करैके आ लूडो-तास-शतरंज खेलाइके तऽ बिना ककरो कहने कालि एही समय छत पर एकसरे आबि जइहें। यदि कियो आन रहतौ तऽ हम उतरबे नहि करबौ। हम उपर मे अदृश्य भेल उड़ैत रहबौ आ यदि तों एकसरे रहमे तखने हम उतरबौ।" एतबा बाजि ओ गोला उपर उड़ि गेल आ बिला गेल।

अनु हाथ मे चॉकलेट रखने बड़ी काल तक छत पर ठाढ़ रहल आ उपर दिस तकैत रहल। उपर मे गोला कतहु देखाइ नहि पड़ि रहल छलै। ओकरा एखनहु सब किछु सपना जकाँ लागि रहल छलै। ओ बहुत असमंजस मे छल। ओ किएक हमरे सँ दोस्ती करए चाहैत छल? कोन जीव छल ओ? अकास मे कोना उड़ि गेल ओ? चॉकलेटक पैकेट सँ कागत किएक ओ हटा देलक? ओकरा संग दोस्ती केला सँ कतेक खतरा छै? यदि बिनु बुझने चॉकलेट खा लिअए आ किछु भऽ जाइ? यदि

ओहि मे जहरे मिलाएल होइ? आ नहि तऽ बेहोस करबाक कोनो दवाइए? अनु आब अपन अलग कोठरी मे एकसरे सुतैत छल। यद्यपि ओ छिटकिली लगा कए सुतैत छल मुदा की पता, ई जन्तु कोनो रस्तें कोठरी मे आबि जाए आ ओकरा संग कोनो दुर्व्यवहारे करए आ कि उठा कए लइए जाए? अनेको एहन खिस्सा नित्य समाचार सब मे सुनबा मे अबैत छलै। मुदा बेर बेर ओ हमरा किएक आश्वस्त कऽ रहल छल? की कोनो कुकुर कें चॉकलेट चिखा कए जाँचि लिअए जे किछु होइछै कि नहि? की पापा-मम्मी कें एहि घटनाक बारे मे सब बात बता दै? यदि ओ गोला बूझि जाइ आ कालि फेर नहि आबए तखन? किएक ओ हमरा मना कऽ देलक ककरो कहै सँ? ओ जन्तु मैथिली बाजब कतऽ सिखलक? ओकर आवाज तऽ मनुष्ये जकाँ छलै मुदा रूप किएक एहन छलै? ओ गोला लूडो-तास कोना खेलेतै? ओकरा हाथ तऽ छैके नहि।

अनुक मोन मे अनेको प्रश्न उठि रहल छलै मुदा एकर उत्तर देनिहार कियो नहि। ओ नियारलक जे चॉकलेट नहि खाएत आ कालि तक ओहि जन्तुक फेर अबैक प्रतीक्षा करत। एहि बीच ओ ककरो सँ कोनो तरहक चर्चा नहि करत आ कालि छत पर एकसरे ठाढ़ रहत। ओकर पापा शैलेशजी कनकटोली मे स्टेट बैंक मे काज करैत छलखिन आ कोनो दिन छओ बजे साँझ सँ पहिने घर नहि अबैत छलखिन। ओकर मम्मी विभारानी दुपहरिया मे बेसी काल आङनबाड़ी केन्द्र पर बच्चा सबकें मिथिला चित्रकला सिखबैत छलखिन। घर पर कहियो रहबो केली तऽ आराम केलनि तें स्कूल सँ आबि टिफिन केलाक बाद छत पर एकसरे एबा मे कोनो समस्या नहि छलै।

अगिला दिन अनु लूडोक पासाक संग छत पर पहुँचि गेल आ उपर दिस ताकऽ लागल। ओकरा एकटा चिड़ै उड़ैत देखाइ पड़लै। ओएह चिड़ै छत पर उतरैत गोला बनि ओकरा लग बैसि गेलै। ओहि सँ आवाज निकललै—"कह चॉकलेट केहन लगलौ?"

अनु घबरा गेल। ओकरा ई तऽ कोनो अनुमाने नहि भेल छलै जे ओहि जन्तु कें चॉकलेट बला बात मोने हेतै आ ओ पूछिओ सकैत छल। पहिने ओ सोचलक कोनो बहन्ना बना दियै। फेर सोचलक, सत्ते बात बाजि दी। ओहि जन्तु कें जे करबाक हेतै से करओ। सएह सोचि ओ उत्तर देलकै—"हम चॉकलेट नहि खेलियै, रखले छै एखन तक।"

"जरूर तोरा शंका भऽ गेल हेतौ जे ओहि मे किछु मिलाएल छै।"

"हँ, सएह बात भेलै।"

"ठीक छै, जो लेने आ ओ चॉकलेट, एखन हम दूनू गोटे बाँटि कए खाएब। तोरा

सामने मे हमहूँ खाएब तखन तऽ तोरा विश्वास भऽ जेतौ ने जे एहि मे कोनो जहर नहि मिलाएल छै।"

"लेकिन हम तऽ तोरा शरीरक बारे मे किछु नहि बुझैत छियौ, तों कोन तरहक प्राणी छें, कोन तरहक जहर सब पचा सकै छें से हम कोना बुझबै? तों बेहोस नहि हेमे आ हम एतहि बेहोस भऽ जाइ आ तों हमरा उठा कए भागि जाइ तखन?"

"ठीक छै, पहिने एतुके कोनो कुकुर बिलाड़ि कें खुआ कए तऽ बूझि सकै छिही ने, सएह कर। यदि ओ मरतै नहि कि बिमार नहि पड़तै तखन तऽ तोहर डर भगतौ। तों अपन हिस्सा बाद मे एकसरे खइहें।"

अनु कें ई आइडिया नीक तऽ बुझेलै किन्तु एहू मे झंझट छलै, कतऽ ओ एहन कुकुर कि बिलाड़ि ताकत जकरा चॉकलेट खुआ देला पर ओकरा पर नजरि राखि सकए। आ कतेक काल नजरि राखत जे ओ बिमार पड़लै कि मरलै। अनु बड़का दुविधा मे पड़ि गेल। की करत ओ? ओ एकटा बहन्ना बनेलक–"पहिने लूडो खेला ले, तखन चॉकलेट खेबाक बात पर विचार करबै।" एहि बात पर ओ जन्तु कोनो प्रतिकार नहि केलकै।

अनु पासा पसारलक आ अपन चालि चलए लागल। ओ देखलक जे ओहि गोला सँ एकटा हाथ जकाँ यन्त्र बहरेलै, ओही सँ ओ गोला लूडो खेलाए लागल। लूडो खेलेबाक लूरि ओकरो नीक छलै। अनु कें सब किछु आश्चर्यचकित कऽ रहल छलै। ओकरा अपन अनेक प्रश्न रोकल नहि भेलै। ओ पूछि बैसल–"तोहर देश कतए छौ आ चॉकलेट तों कतए सँ अनलें? आ मैथिली बाजब तों कतए सिखलें?"

ओहि गोला सँ पहिने हँसी छुटलै जेना ओ अनुक अज्ञानता पर हँसल हो। फेर ओहि सँ आवाज बहरेलै–"पहिने तों कह जे हमरा संग दोस्ती स्वीकार केलें कि नहि?"

अनु कने ढिठगर भऽ कए बाजल–"बिना परिचय के दोस्ती कोना कएल जा सकतै?"

"ठीक कहैत छें तों। अच्छा कह बच्चा मे परी बला खिस्सा सब तऽ सुनने छिही ने?"

"हँ, अनेको एहन खिस्सा छलै जाहि मे राजकुमार आ राजकुमारी भेंड़, बकरी, सुग्गा, मैना आदि रूप मे रहैत छलै आ समय एला पर ओ अपन असली रूप मे प्रकट भऽ जाइत छलै।"

"ठीके कहैत छें, मुदा मोन छौ जे ओ समय कखन अबैत छलै?"

"जखन ओहि जन्तु मे प्रेम भाव आबि जाइत छलै। ब्यूटी जखन बीस्ट सँ प्रेम करए लगलै तऽ बीस्ट तुरत्ते राजकुमार बनि गेलै। ओ सब शापित रहैत छल ने, से जखने ओकरा सँ कियो प्रेम करबा लेल तैयार होइत छलै, ओकर शाप कटि जाइत छलै आ ओ अपन पूर्व रूप मे राजकुमार अथवा राजकुमारी बनि जाइत छल।"–अनु बाजि गेल।

ओकरा आश्चर्य लागि रहल छलै एहि बात पर जे ई गोला सेहो कोनो शापित ज़न्तु तऽ ने छै। ओ पूछि बैसल–"तोहूँ कोनो शापित जन्तु छें की?"

"हम एकर उत्तर एखन नहि देबौ, आइ हम सब खाली कने काल लूडो खेला ली, बस एतबे। तों चॉकलेट अपनहि खा लिहें।" एतबा बाजि ओ लूडोक चालि चलए लागल। अनु आब खेल मे मगन भऽ गेल। सामने मे बैसल गोला लूडो खेला रहल छलै। अनु जीत रहल छल।

दूटा गेम खेल भेलै। दूनू गेम अनु जीत गेल। तकर बाद गोला बाजल–"तों बहुत नीक खेलाइत छें। आब आइ एतबे, हम चलै छी। कालि फेर हम एबौ यदि तों एकसरे छत पर रहमे तखन।" एतेक कहि ओ गोला अकास मे उड़ि कए बिला गेल।

अनु कने काल तक अकास दिस तकैत रहल। गोला बिला गेलै। ओकर मोन कने उदास भऽ गेलै। एखन तक ओ गोला कोनो तरहें ओकरा दुष्ट जन्तु नहि लागल छलै। मुदा अपन परिचयो तऽ ओ नहिए देलकै। फेर ओकरा खियाल एलै चॉकलेट के। आब ओकरा कोनो उपाय नहि सूझि रहल छलै जे चॉकलेट कें की करए। खा लेत तऽ डर बनले छलै, नहि खाएत तऽ कालि ओ गोला फेर पुछबे करतै। ओकरा मोन मे विश्वास भऽ गेलै जे चॉकलेट मे कोनो हानिकारक चीज नहि हेतै। ओ नीचा उतरल आ नुका कए चॉकलेटक एक टुकड़ी तोड़ि मुह मे लेलक। सत्ते ओकर स्वाद अपूर्व छलै। एहन चॉकलेट ओ कहियो नहि खेने छल। बाकी ओ राखि देलकै। एक मोन भेलै जे पापा-मम्मी कें सेहो चॉकलेट चिखा दिएनि मुदा हुनकर प्रश्नक ओ कोन जबाब दितए से सोचि छोड़ि देलक। ओ एखन निश्चिन्त छल जे अगिला चारि पाँच घंटा तऽ सुतबाक जरूरति नहि छै आ एहि बीच यदि किछु हेतै तऽ मम्मी पापा ओकर उपाय करथिन।

राति मे सुतबा काल ओ खूब नीक जकाँ केबाड़क छिटकिली लगेलक, खिड़की सब सेहो आइ बन्द कऽ देलक आ सूति रहल। निन्न ओकरा नहि भऽ रहल छलै। ओ चहा कए उठि जाइ छल, खाली एतबे बुझबा लेल जे ओ होश मे अछि आ चॉकलेटक कोनो खराप प्रभाव एखन तक नहि भेलैए। भोड़बा मे आँखि लगलै तऽ सपना मे देखलक जे ओएह गोला ओकरा लग ठाढ़ छै आ बेर बेर ओकरा बुझा रहल छै जे डरेबाक कोनो बात नहि छै। राति बीत गेलै। चॉकलेटक कोनो खराप असरि

ओकरा नहि बुझेलै। भोर मे ओ निश्चिन्त भऽ कए पूरा चॉकलेट खा लेलक। स्कूल गेल, आबि कए समय पर लूडो लऽ कए छत पर चल गेल आ अकास दिस ताकऽ लागल। आब ओकरा प्रतीक्षाक समय पहाड़ जकाँ लागि रहल छलै। तखने सामने मे एकटा चॉकलेटक पैकेट खसलै आ संगहि गोला सेहो उतरि गेल।

एहि बेरक चॉकलेट सादा कागत मे लपेटल छलै। गोला बाजि उठल—“चॉकलेट केहन लगलौ?” आइ अनु कें बहन्ना बनबैक कोनो काज नहि छलै। ओ चॉकलेट खेबाक अपन अनुभव बता देलकै। फेर गोला सँ आवाज एलै—“आइ दोसर रंगक चॉकलेट दैत छियौ, इहो बहुत नीक छै। आब कह तों हमरा संग दोस्ती करबा लेल तैयार भेलें कि नहि?”

अनु अपन प्रश्न दोहरा देलक—“तोहर परिचय तऽ किछु नहि भेटल हमरा। कोन देश सँ तों अबैत छें, एहन रूप किएक बनेने छें ई सब हम किछु नहि बुझलियै ने।”

“अच्छा समय एला पर सब बूझि जेबही। चल लूडो निकाल, जल्दी जल्दी दू गेम खेला ली।”

अनु लूडोक पासा पसारलक आ गेम शुरू केलक। आइ ओकरा गोलाक चालि किछु बदलल लागि रहल छलै। ओ खाली छओ फेकि रहल छल आ अनुक गोटी सब सँ बहुत आगू चल गेल छल। पहिल गेम गोला जीत लेलक। अनुक मोन उदास भऽ गेलै। जेना गोला ई बात बूझि गेल होइ, ओकरा टोकि देलकै—“हारि गेला सँ मोन उदास भऽ गेलौ ने।” अनु कें लगलै जेना ओकर चोरि पकड़ा गेल होइ। ओ अपना कें सम्हारैत बाजल—“नहि नहि, कालि हम दूनू गेम जीत गेल रही, आइ तों जीत गेलें तऽ एहि मे उदास हेबाक कोनो बात नहि छै। खेल मे तऽ एना होइते रहैत छै।”

दूनू गोटे खेलाइत रहल। आइ गेम जल्दी जल्दी खतम भऽ रहल छलै। चारि गेम खेल भऽ गेलै आ चारू मे अनु हारि गेल। तखन गोला बाजल—“आइ हम चलैत छियौ। चॉकलेट खा लिहें।” आ एकाएक गोला उड़ि कए बिला गेल।

अनु चॉकलेट देखलक, सादा कागत पर किछु लिखल तऽ छलै नहि। मुदा एहि कागत कें छूला पर कने दोसर रंगक लगलै, ओ सोचलक कागत कें राखि लेत। कहियो मम्मी कि पापा कें जरूर देखाओत। ओ कागत ओदारि चॉकलेट बहार केलक। एतेक तऽ ओकरा विश्वास भैए गेलै जे बिना कोनो डर के ओ चॉकलेट खा सकैत छल। ओ छते पर आधा चॉकलेट खा लेलक। अजुका चॉकलेटक स्वाद दोसरे रंगक छलै मुदा सत्ते बड़ नीक।

अगिला दिन गोला प्रस्ताव देलकै शतरंज खेलेबाक। अनु शतरंज कने मने

सिखने छल ततबे, ओकरा डर भेलै जे एहि खेल मे ओ सब दिन गोला सँ हारिते रहत। गोला जेना फेर ओकर मनोभाव बूझि गेलै। ओ बाजि उठल—“हम बूझि गेलियौ तोहर असमंजस, कोनो बात नहि, हम तोरा शतरंज नीक जकाँ सिखा देबौ।” आब अनु उत्साहित भेल, नीचा सँ शतरंजक पासा उठा अनलक। गोला संग ई खेल खेलएबा मे ओकरा बहुत आनन्द आबि रहल छलै। जखने कोनो गलती चालि चलबाक विचार करए, गोला बूझि जाइ आ ओकरा सही चालि बुझा दै। करीब एक घंटाक बाद गोला एकाएक उड़ि गेलै।

गोलाक संग शतरंजक प्रैक्टिस शुरू होइते अनु साँझ मे जिद कऽ कए आधा घंटा पापाक संग शतरंज सेहो खेलाए लागल। अनुक चालि पर पापा कें कने आश्चर्यो भऽ रहल छलनि मुदा सोचलनि जे भऽ सकैछ अनु स्कूल मे सेहो प्रैक्टिस करैत होअए। अनु हुनका कहि देलकनि जे एहि बेर वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता मे शतरंज खेलाए चाहैत अछि। ई जानि पापा आश्वस्त भेलाह आ मोन सँ ओकरा सिखबए लगलखिन।

अनु कें लागऽ लगलै जे गोला सत्ते मे ओकर दोस्त भैए गेल छै। आब छत पर शतरंज खेलाएब प्रतिदिनक रुटीन भऽ गेलै। अनु सब दिन समय पर छत पर चल जाइत छल आ व्यग्रता सँ गोलाक प्रतीक्षा करए लगैत छल। गोला सब दिन ओकरा लेल नव नव प्रकारक चॉकलेट लेने अबै। जेना जेना दिन बीतैत गेलै, अनु ओहि गोलाक संग शतरंजक अतिरिक्त कहियो कए तास सेहो खेलाए लागल। दुपहरिया मे गोलाक संग आ साँझ मे पापाक संग खेलाइत शतरंज मे अनु जल्दीए बहुत एक्सपर्ट भऽ गेल।

छत पर गोलाक संग खेल चलैत रहलै। सब दिन अनु कें नव नव स्वाद आ रूपरंगक चॉकलेट भेटैत रहलै। ओ चॉकलेटक कागत जमा करैत रहल आ चॉकलेटक आनन्द उठबैत रहल।

अनु सब दिन छत पर केबाड़क अढ़ मे बैसैत छल मुदा गोला कें पूरा छत नजरि मे अबिते छलै। एक दिन छत पर किछु भेलै जाहि सँ गोला किछु सेकण्ड लेल आश्चर्यचकित भेल मुदा अनु कें किछु बुझबा मे नहि एलै। बीच बीच मे छत पर गोला कें एहन घटना देखऽ मे अबैत रहलै मुदा ओ अनठेने रहल। ओकरा लेल तऽ कोनो तरहक हानि नहिए भऽ रहल छलै।

जहिया गोला कें छत पर पहिल बेर किछु विस्मय भेल छलै तकर दू तीन दिन बाद अनु राति मे देखलक जे चॉकलेटक पैकेट जेना उघारि कए फेर मोड़ि कए राखल होइ। चॉकलेट टूटल नहि छलै मुदा कियो छूने छलै जरूर। अनु डरा गेल। निश्चिते

पापा कि मम्मी ओकर सब बात बूझि गेलखिन आ हुनके दूनू मे सँ कियो अनुक राखल चॉकलेट कें जँचैक लेल खोलि देखखिन। मुदा अनु हुनका सब सँ पूछत कोना? यदि पूछत तखन एतेक दिन सँ चलैत खेला आ तकरा नुकौने रहबाक अपराधक सम्बन्ध मे की उत्तर देत? अनु चुप्पे रहल।

एखनो तक अनु कें ओहि जन्तुक देश भेषक पता नहि बूझल भेल छलै मुदा आब ओकरा बिना दुपहरिया काटब असम्भवे लगैत छलै। शतरंज ओ नीक जकाँ सीख लेने छल। पापा तऽ अधिक काल ओकरा सँ हारि जाइत छलखिन, एमहर एकाध बेर ओ गोला सँ सेहो जीत गेल छल। से गोलाक प्रतीक्षा व्यग्रता सँ करैत छल। जाबत ओ गोला छत पर आबि नहि जाइ, अनु बहुत उदास रहैत छल। अन्त मे करीब दू मासक बाद एक दिन जखन गोला उतरलै तऽ अनायासे अनुक मुह सँ निकलि गेलै– “हम तोरा संग दोस्ती करबा लेल तैयार छी।” एतबा सुनिते गोलाक रूप बदलि गेलै आ अनुक आगू मे किछु दोसरे जन्तु ठाढ़ भऽ गेलै।

डुप्लिकेट

अनु कें विश्वासे नहि भऽ रहल छलै सामनेक जन्तु कें देखि कए। गोला बिला गेल छलै आ ओकरा सामने मे ठाढ़ छलै एकदम हूबहू ओकरे सन देखबा-सुनबा मे, ओकरे सन कपड़ा आ चप्पल पहिरने एकटा लड़की, ओकर डुप्लिकेट आ कि जौआँ बहिन। नै ओकरा सँ कनियो पैघ नै कनियो छोट, जेना अनु कोनो अएना मे अपना कें देखि रहल होअए। आब एहि जन्तु कें कोनो अंग मसीनी नहि लागि रहल छलै। एकदम अनुक प्रतिरूप, मनुक्खे सन। एखन यदि ओकर मम्मी-पापा देखितथिन तऽ हुनको सब कें चिन्हल नहिए जइतनि जे एहि दूनू मे असली अनु कोन छलै आ डुप्लिकेट कोन।

अनु सोचऽ लागल जे यदि ई जन्तु खिस्सा बला शापित व्यक्ति रहैत तऽ ओ अपन मूल रूप मे प्रकट होइतए, कोनो दोसर बच्चा कि युवक आ कि बूढ़े-पुरान, मुदा ई तऽ हमर प्रतिरूप बनि गेल। अनु सोचलक जे मम्मीक स्मार्टफोन लऽ कए एकर फोटो लऽ ली, मुदा फेर बुझेलै जे ओ तऽ ओकर अपने फोटो हेतै, तखन लाभे की? कने काल तऽ अनु आश्चर्यचकित भेल ठाढ़ रहल तकर बाद ओकरा पुछलकै– “हम तोरा संग दोस्ती करब स्वीकार कऽ लेलियौ, आबहु तऽ तों अपन परिचय दे।”

सामने मे ठाढ़ ओकर डुप्लिकेट बाजल–“जरूर, तोरा बड़ आश्चर्य लगैत हेतौ हमरा देखि कए जे एनमेन तोहर डुप्लिकेट कोना हम बनि गेलिऐ। अच्छा, पहिने हमरा संग कने करिया झुम्मरि खेला ले।” एतबा कहि ओ जन्तु अनुक हाथ पकड़ि कए जेना नाचए लागल। अनु कें ओकर हाथ अपने हाथ जकाँ कोमल बुझेलै, कोनो अन्तर नहि। ओ अनु कें कोरा मे सेहो उठा लेलकै। मुदा जखन अनु ओकरा अपना कोरा मे उठबैक कोशिश केलक तखन ओकरा ओ जन्तु बहुत भारी बुझेलै। ओकरा बुते ओ जन्तु नहिए उठलै। ओहि जन्तुक ओजन सेहो अनु कें रहस्ये लागि रहल छलै। कने काल तक ओ दूनू एहिना नचैत खेलाइत रहल।

ओ डुप्लिकेट बाजल—“रूप तऽ देखि लेलही, मुदा एहि सँ ई अन्दाज नहि लगा ले जे हमर उमेर सेहो तोरे जकाँ मात्र दस-एगारह बरख अछि।”

“तोहर उमेर कतेक हेतौ?”

“सौ सवा सौ साल सँ बेसिये बूझि ले।”

“बाप रे, एतेक बूढ़ ! हमर परबाबाक उमेरक छी अहाँ यौ।” अनुक सम्बोधन बदलि गेलै से गोला लक्ष्य केलक। ओ बाजि उठल—“बाबा, परबाबाक बात छोड़, हम दूनू दोस्त भेल छी, ओहिना बाज, हमरा सएह नीक लागत।”

“अच्छा, तोहर देश कतए छौ?”

“आगूक जे किछु परिचय हम देबौ से तों कोना विश्वास करबही? हम जे किछु कहबौ से तों बुझबही कोना? हमर देशक चर्चा भूगोलक कोनो किताब मे लीखल नहि भेटतौ आ ने एहन कोनो नक्शा बनलै जाहि मे हम तोरा ओ जगह देखा सकबौ। तोरा लगतौ जे हम ठकि रहल छियौ। तों ककरो यदि हमर बात कहबो करबही तऽ ओकरा विश्वास नहिए हेतै कारण तों कोनो सबूत सेहो नहि देखा सकबही।”

“मुदा किछु सुनियै तऽ”, अनु बाजल।

“मानि ले, हम तोरा कहियौ जे हमर देश अछि एही पृथ्वी पर मुदा जलक भीतर। बूझि ले जेना कोनो पैघ टापू बहुत दिन पहिने समुद्र मे डूबि गेल होइ आ एहि धरतीक लोक ओकरा बारे मे बिसरि गेलै। हमर देश पृथ्वी पर समुद्रक भीतर एहन ठाम अछि जतए कोनो मनुक्खक आबा जाही नहि छै। मनुक्ख कें हमरा सबहक बारे मे कोनो जानकारी नहि छै।”

“मुदा तों चिड़ै जकाँ उपर किएक उड़ि जाइ छिही सब दिन?”

“पहिने ई बता जे हमर बात पर विश्वास कोना करबही? ई सब बात झुठो भऽ सकैत छै, मात्र कपोल कल्पना, एकटा गप्पीक गप हँकनाइ। एकर सबूत तऽ हम किछु देखा नहि सकबौ। सबसँ नीक होइतै जे तों हमरा संग चलि कए सब किछु देखि लितें।”

“से तऽ ठीक मुदा हमर प्रश्नक उत्तर तऽ दे जे अकास मे किएक उड़ै छिही जखन तोरा जलक भीतरे रहबाक छौ?”

“ईहो खिस्सा सुनि ले, निश्चिते ओ आर बेसी कपोल कल्पना लगतौ। हमरा देश मे अपनहि लोक बहुत रास वैज्ञानिक विकास केलक आ कतेको रूप परिवर्तन करब सिखलक। हम उपरे उपर उड़ि कए आसानी सँ समुद्र मे ओ जगह ताकि लैत छी जतए हमरा देश जेबाक सुरंग बनल छै। ओतए जाकए सीधे नीचा उतरि जाइत छी। दोसर बात जे हमरा देशक लोक सब बहुत दिन सँ अंतरिक्ष यात्रा करैत रहल। एही

क्रम मे अंतरिक्ष मे सेहो एकटा ग्रह तकलक जतए एहिना समुद्र छै। ओतहु जा कए हम सब बसि गेलहुँ। हम सब जल सँ बहराइ छी, अकास मे उड़ि जाइ छी, ओहि ग्रह पर जा कए अपन समाज सँ भेंट कऽ लैत छी आ फेर घुरि कए चल अबै छी जलक भीतर अपना देश। आइ तक कोनो मनुक्ख कें किछु पता नहि चललै। चलबो नहि करतै। आब हम सब अपनहि मनुष्य सँ दोस्ती करए आबि रहल छी आ ओकरा अपन देश देखबा लेल प्रेरित कऽ रहल छी।”

अनु कें विश्वासे नहि भऽ रहल छलै ई सब सुनि कए। कोन देश मे ई जन्तु रहैत छै? ओतए जा कए देखि सकत ओ? समय कतेक लगतै? पापा-मम्मी सँ बिना पुछने कोना जा सकत ओ? ओ पूछि देलकै—“कतेक समय लगतै जाइ अबै मे आ ओतए देखबा मे?”

“जाइ अबै मे बेसी समय नहि लगतौ, बहुत रस्ता छै, दसो मिनट मे पहुँचल जा सकैत छै। मुदा ओतए ठीक सँ किछु देखबा लेल तऽ समय लगबे करतै, जहिना कोनो टूरिस्ट जगह पर लोक कें देखबा मे समय लगिते छै।”

“की हम स्कूलक समय मे ओतए जा कए आबि सकै छी?”—अनु मोने मोन सोचि रहल छल जे एक दिन स्कूल नहि जाकए चुपेचाप एकरे संग चल जाएत।

“ठीक छै, बेसी तऽ नहि तैयो एतेक तऽ पता लागिए जेतौ जे हमर बात सत्य छल कि झूठ।”

“तोहर देश मे हम सब कोना जा सकबै? हमरा बुते गोला आ कि चिड़ै बनल तऽ पार नहि लागत।”

“ओकर चिन्ता नहि कर, ओ लूरि हमरा सीखल अछि कोना धरतीक उपर बसनिहार मनुक्ख कें अपना रूप मे आनि लियै आ कि फेर ओकरा मानव रूप मे बदलि दियै। एहि काज लेल हमरा तैयार भऽ कए आबऽ पड़त।”

“यात्रा मे कोनो तरहक खतरो छै?”

“हम तोहर दोस्त भेलियौ, वचन देलियौ, कोनो खतरा नहि। ओहुना हमरा देश मे अपराधी नहि होइत छै।”

“यदि हम मम्मी-पापाक संग प्रोग्राम बनाबी?”

“आरो बढ़ियाँ, हमर तऽ काजे अछि बेसी टूरिस्ट कें अपन देश देखाएब।”

“ठीक छै, हम सब कोना फेर प्रोग्राम बना सकब?”

“जखन तोरा मोन होउ हमर देश देखबाक, तखन हमरा बजा लिहें। एहि लेल तीन दिन तक जाहि समय तोरा यात्रा करबाक होउ ताहि समय मे लाल, पीयर आ हरियर रंगक झंडा जकाँ गुड्डी बना कए छत पर सँ उड़ा दिहै। हमरा खबरि भेटि जाएत। चारिम

दिन हम पहुँचि जेबौ तोरा लऽ जेबा लेल। यदि मम्मी-पापा कें संग लऽ जेबाक विचार करहिं तऽ सब दिन अलग सँ कारी रंगक गुड्डी सेहो उड़बिहें। तखन हम बूझि जेबै जे यात्रीक संख्या बेसी छै, ओही हिसाबें तैयार भऽ कए आएब।"

"ठीक छै, आइ हम सब तास नहि खेलाएब की?"

"नहि, एकटा आर खेला देखा दैत छियौ, कने मूड़ी घुमा कए ठाढ़ रह जाबत हम नहि कहियौ एमहर तकबा लेल।"

अनु मूड़ी घुमा लेलक। करीब एक मिनट के बाद आवाज एलै–"देख हमरा दिस।"

अनु घूमल तऽ आरो आश्चर्यचकित भऽ गेल। ओकरा सामने ओएह डुप्लिकेट ठाढ़ छलै मुदा आब ओकर कपड़ा बदलि गेलै। चप्पल सेहो बदलि गेलै। अनु कें मोन पड़लै जे पहिल दिन ओ एहने कपड़ा आ चप्पल पहिरने छल। ओ जन्तु अनु कें अपनहि मोन पारि देलकै जे ई ड्रेस ओ पहिल दिन पहिरने छल जखन गोला सँ भेंट भेल छलै।

अनु कें किछु बुझबा मे नहि आबि रहल छलै जे एहि गोला मे कोन यंत्र सब भरल छलै जाहि सँ ओकर पहिल दिनक फोटो उतारने गेल। आ कोना कए एतेक रास ड्रेस ओ जमा केने रहल।

"हमर गोला सँ एहन रूप मे बदलि जाएब आ विभिन्न ड्रेस मे तोरा सामने आएब जरूर तोरा बहुत रहस्यमय लागल हेतौ मुदा एकरो व्याख्या हम एतए कोना कऽ सकबौ? एहि मे जे यंत्र आ लूरिक उपयोग भेलै से सब किछु हम एतए खोलि नहि सकब ने तोरा बुझा सकबौ। ओकरो लेल हमरा अपना देशक इलाका मे जाए पड़त। जल्दीए प्रोग्राम बना ले।"

एतेक कहि एकाएक ओ डुप्लिकेट हाथ पसारि कए अकास मे उड़ि गेल। अनु उपर तकिते रहि गेल।

अनु इहो पूछि नहि सकलै जे फेर ओ ओहिना लूडो खेलाइ लेल छत पर औतै कि नहि। आब ओकर मोन उदास भऽ गेलै। पछताए लागल जे बेकारे ओहि गोला सँ दोस्ती करब स्वीकार केलक। यदि से नहि केने रहैत तऽ ओहुना ओ गोला नित्य लूडो कि तास कि शतरंज खेलाए लेल एबे करितै।

एही चिन्ता मे अनु डूबल रहल आ एक मास बीत गेलै। एहि एक मास मे ओकरा ओहि गोला सँ ने कहियो भेंट भेलै आ ने अकासे मे ओ किछु देखि सकल। ओ सोचि रहल छल जे पहिने एक बेर स्कूलेक समय मे एकसरे गोलाक देश देखि आओत। ताहि लेल लाल पीयर आ हरियर रंगक गुड्डी बनबैक विचार केनहि छल कि अगिला दिन स्कूल मे एकटा विचित्रे खिस्सा सुनलक।

नव खेल

सुशील अनुक स्कूल मे दू किलास सीनियर छल। कनकटोली थाना इलाका मे नामी क्रिकेट आ फुटबॉल खिलाड़ी। ओकरा नेतृत्व मे पछिला दू वर्ष सँ प्रखंड स्तर पर माहीपुर मिडिल स्कूल दूनू खेल मे चैम्पियन बनैत रहल छलै। आइ ओ टिफिन टाइम मे संगी सब कें अपन अद्भुत खिस्सा सुना रहल छलै। खिस्सा एकटा उड़नछू गोलाक बारे मे छलै तें समूचा स्कूलक बच्चा ओकरा घेरि लेलकै सुनै लेल।

करीब एक सप्ताह पहिलुक घटना छिऐ। सुशील गामक मैदान मे क्रिकेटक बॉल आ बैट लऽ कए ठाढ़ छल आन संगी सब के अबैक प्रतीक्षा करैत कि तखने एकटा गोला अकास सँ उतरलै आ ओकरा हँसैत पुछलकै–"ककर प्रतीक्षा कऽ रहल छें सुशील?" एकरा तऽ विश्वासे नहि भेलै जे आवाज एलै कतए सँ, ओकरा नाम लऽ कए के बजौलकै? चारू कात तकलक तऽ कने दूर मे भेटलै ओ गोला।

सुशील कें मोन पड़ि गेलै किछु वर्ष पूर्व मे भेल एहने गोला सब के उत्पात। ओकरा बड़ तामस उठलै, मोन भेलै जे ओहि गोला कें एकटा बड़का किक मारए जे ओ मैदानक ओहि पार जा कए खसए। एतबा सोचि ओ अपन पएर उठौनहि छल कि गोला उड़ि कए आबि गेलै ओकरा माथ पर। ओ बैट उसाहलक गोला कें मारै लेल, तऽ गोला सँ कनेटा हाथ बहरेलै आ बैट कें पकड़ि लेलकै। तकर बाद ओ बाजल–"देख, हमरा संग दोस्ती करमे तऽ बहुत नफा मे रहमे। हम नवका नवका खेल सिखा देबौ। एखन तों संगी सबके प्रतीक्षा कऽ रहल छें क्रिकेट खेलाइ लेल। तोरा देशक क्रिकेट खेला मे बाइसटा खेलाड़ी चाहियौ, हम एहन क्रिकेट खेला सिखा देबौ जाहि मे दुइए गोटे सँ खेला सकैत छें। आन संगी नहियो एतौ तऽ कोनो बात नहि, हम आ तों ई नवका क्रिकेट खेला सकैत छी।"

सुशील कने सोचए लागल। एहि गोला मे किछु गुणो भऽ सकैत छै से ओकरा नहि बूझल छलै। ओ गोला संग दोस्तीक प्रस्ताव पर कोनो विचार नहि केलक मुदा

क्रिकेटक नवका नियम सिखबा लेल तैयार भऽ गेल। ओकरा मोन मे इहो विचार छलै जे किछुए काल मे ओकर दोसर संगी सब पहुँचिये जेतै तखन एहि गोला कें मारि भगाओत। मुदा गोला ओकरा सँ बेसी बुधियार बहरेलै। ओ कहलकै–"आइ नहि, कालि तों एकसरे कने पहिने मैदान मे आबि जो, जखन दोसर संगी सब कें अबैक समय नहि भेल रहतै। तखने हम ओ खेल सिखा देबौ। ओना तऽ तों आ कि तोहर कोनो संगी हमरा पकड़ि नहिए सकमे, तैयो हम तोरा संग एकसरे मे बात करबौ।" एतबा कहि ओ गोला अकास मे उड़ि गेल।

सुशील अकास दिस तकिते रहि गेल। ओकरा बुझबे मे नै अबै जे गोला कोना ओकर मोनक बात बूझि गेलै। ओहि दिन ओकरा खेल मे मोन नहि लगलै। संगी सब पुछबो केलकै ओकर बदलल मनोदशाक कारण मुदा ओ कोनो बहन्ना बना कए टारि देलकै।

ओ सोचैत रहल खाली गोलाक बारे मे। कखनहु विचारए जे चुपेचाप सब संगी कें बता देतै जे अगिला दिन जखन गोला कें अबैक समय हेतै तखन ओ सब नुका कए कतहु रहत आ सब मिल कए ओहि गोला कें पकड़बाक कोशिश करत। फेर ओकरा मोन पड़ि जाइ गोलाक कहलाहा गप आ संगहि पहिलुक घटना जे कियो उड़नछू गोलाक शिकार करबा मे सफल नहि भेल छल।

अनु ध्यान सँ सुशीलक खिस्सा सुनि रहल छल। ओ सोचऽ लागल जे ओकरो पहिल दिन जखन गोला सँ भेंट भेल छलै तखन एहिना कहने छलै। की दूनू गोला एके छलै? मुदा एखन ओ चुप्पे रहल। सुशील अपन खिस्सा सुनबैत रहलै।

गोला सँ पहिल बेर भेंट भेलाक अगिला दिन सुशील संगी सब कें बता देलकै जे खेल कने देरी सँ शुरू करत आ अपने करीब आधा घंटा पहिने मैदान मे पहुँचि गेल। मैदान एकदम खाली छलै। ओ तुरत्ते देखलक अकास दिस, गोला उतरि रहल छलै। आइ ओ गोला कें कोनो तरहें कष्ट पहुँचेबाक विचार छोड़ि देलक।

गोला उतरिते बाजल–"हम उपरे सँ देखि लेलियौ जे तों एकसरे छें। बहुत नीक। आब कने काल हमर खेलक नियम सूनि ले तखन हम ओकरा खेलेबाक लूरि सेहो सिखा देबौ।

पहिल बात जे एहि नवका क्रिकेट मे मैदानक आकार, पिचक आकार, विकेट आदि ओहिना छै जेना कि तोरा सब कें बूझल छौ। सबसँ पैघ अन्तर छै जे जखने बौलर गेंद फेकैत छै ठीक तखने बैट्समैन सेहो अपन बैट फेकि दैत छै ओही दिशा मे जेम्हर सँ गेंद आबि रहल छै।"

सुशील कें हँसी छूटि गेलै। ओ बाजल–"वाह रे वाह, जखन बैट्समैनक हाथ मे

बैट रहबे ने करतै तखन गेंद कें विकेट उड़बै सँ के रोकतै?"

गोला बाजल–"पहिने हमर पूरा नियम सूनि ले। बॉल आ बैट दूनू एक दोसरा दिस आबि रहल छै। यदि उपरे मे ओ दूनू भीड़ गेल तऽ सबसँ नीक। तखन दूनू खिलाड़ी कें चारि-चारि अंक भेटतै। एकरा रन नहि, अंक बुझही।

गेंद बैट मे छुबै अथवा नहि छुबै, बैट्समैन अपन बैट कें पकड़ै लेल दौड़त आ बॉलर अपन गेंद कें पकड़ै लेल दौड़त। जे पहिने अपन बैट कि गेंद पकड़ि लेत तकरा एक अंक भेटतै। तकर बाद दूनूक रोल बदलि जेतै, बैट्समैन भऽ गेल बॉलर आ बॉलर बनि गेल बैट्समैन।

एहिना एक घंटा खेल चलतै। जकरा बेसी अंक भेलै से जीत गेल।"

एतबा कहि गोला कने रुकि गेल सुशीलक प्रतिक्रिया देखबा लेल। सुशील सोचि रहल छल ई खूब ठकलक। पहिने तऽ ई सम्भवे नहि छै जे उपरे मे बैट आ बॉल एक दोसरा कें छूबि लै। दोसर बात जे बैट भारी होइते छै, जल्दीए कतहु खसि पड़तै, बॉल बहुत दूर चल जेबे करतै। तखन हमेशा जे बैट्समैन रहत तकरा पहिने बैट भेटि जेतै आ एक अंक सेहो। एहि तरहें खेलक अन्त मे दूनू कें बरोबरिए अंक रहतै कारण दूनू गोटे बेराबेरी बैट आ गेंद फेकलक। एहि खेला मे कोन मजा औतै?

सुशील कें गुमसुम देखि गोला बाजि उठल–"तोरा एहि खेल मे मजा नहि एलौ ने?"

आब सुशील अपन प्रतिक्रिया ओकरा बता देलकै–"एना नियम रखला सँ दूनू कें एके समान अंक भेटतै, जीत-हार हेबे नहि करतै। तखन खेल मे कोना मजा औतै?"

गोला आगू बढ़ल–"हम अपन गेंद लेने आएल छी, कने खेला कए देखि ले, तखन अन्दाज लागि जेतौ।"

सुशील बैट लऽ कए पिचक एक छोड़ पर गेल, गोला अपन ओही रूप मे दोसर छोड़ पर रहल। जखने सुशील बैट उठा कए फेकलक, गोला सेहो अपन गेंद फेकि देलक। सुशीलक आश्चर्यक कोनो ठेकान नहि रहलै जखन ओ देखलक जे ओकरा बैट मे भूर करैत गोलाक गेंद ओकर विकेट लग जा कए रुकि गेलै। बैट दूर चलि गेलै। गोला फुर्ती सँ अपन गेंद उठा लेलक। सुशील कें बैट पकड़ै मे देरी लागिए गेलै। एहि खेप सुशील कें भेटलै चारि अंक आ गोला कें भेटलै पाँच अंक। ओ बुझिए नहि रहल छल जे गोलाक गेंद सँ बैट मे भूर कोना भऽ गेलै आ ओकर गेंद विकेट लग कोना रुकि गेलै।

अगिला खेप सुशील अपन बला गेंद फेकलक। गोला ओकरे बला बैट फेकलक।

फेर बैट आ गेंद उपर मे भिड़बे केलै आ गोला द्वारा फेकल बैट ओहि कातक विकेट लग ठाढ़ भऽ गेलै जखन कि सुशीलक फेकल गेंद चल गेलै बाउन्ड्री लग। गोला दौड़ि कए बैट उठा लेलक। गोला कें फेर पाँच अंक भेटलै आ सुशील कें चारिए। एहि दुइए खेप मे ओकरा बुझा गेलै जे ओ हारि रहल छल।

आब सुशील कने रुकि गेल। ओ सोचए लागल जरूर एहि खेला मे किछु लूरि गोला सिखने अछि जे ओकरा नहि बूझल छै। गोला बैट फेकओ कि गेंद, ओ सामनेक विकेट सँ आगू नहि जाइत छै। ओ मोने मोन एकटा तरीका सोचलक गोला कें धोखा देबाक–अगिला खेप ओ बैट कें एतेक कम जोर सँ फेकत जे बैट पिचक बीचे मे खसि पड़तै। गोलाक गेंद कें उपर मे नहि छूतै, कोनो बात नहि, ओ दौड़ि कए बैट उठा लेत आ एक अंक पाबि लेत। तहिना जखन गेंद फेकत तखनो विकेटक लगे मे राखि देत आ जल्दी उठा लेत।

अगिला खेप गोला फेर अपन गेंद लेलक आ सुशील अपन बैट जाहि मे भूर भेल छलै। जहिना ओ सोचने छल, तहिना एकदम हल्लुके सँ बैट कें फेकलक। बैट खसलै तऽ जरूर पिचक बीच मे मुदा ओकरा आश्चर्य लगलै जे गोलाक गेंद सेहो ओतहि खसि पड़लै आ जाबत ओ बैट उठाबए ताहि सँ पहिनहि गोला बहुत फुर्ती सँ अपन गेंद उठा लेलक। एहि बेर गोला कें भेटलै एक अंक, सुशील फेर हारि गेल।

आब गोला खेल रोकि देलक। ओ सुशील कें बुझेलक–"देख, तों जतेक हल्लुक बुझलही ततेक हल्लुक ई खेला छै नहि। बैट आ गेंद फेकबाक प्रेक्टिस करए पड़ैत छै जे कोना कए फेकला सँ सामने बलाक गेंद आ कि बैट कें कनिए छुबैत अगिला विकेट लग खसि पड़ै। बेसी जोड़ सँ टक्कर लगतै तऽ ओकर दिशा अनिश्चित भऽ जेतैक, आ बैट, गेंद पूरा मैदान मे कतहु जा सकैत छै।

एकटा आर नियम छै जे तोरा एखन तक नहि बतौलियौ–यदि कियो बैट आ कि गेंद कें एतेक हल्लुक सँ फेकत जाहि सँ ओ पिचक बीच तक नहि पहुँचै तऽ एहि फेकब कें फाउल मानल जाइत छै। तखन ओकरा जुर्माना लगैत छै दू अंक के आ ओकर अंक घटि जेतै। आब हम सब आजुक खेला एतहि रोकि दैत छी, तों अपन समय पाबि एकसरे अथवा कोनो संगीक संग जेना हम सिखेलियौ तेना प्रेक्टिस करिहें।"

गोला विदा होमए लागल तऽ सुशील ओकरा गेंद देखेबाक लेल कहलकै। गोला अपन गेंद सुशीलक हाथ मे राखि देलकै। गेंद ततेक हल्लुक छलै जे सुशील कें विश्वासे नहि भऽ रहल छलै। कोना एतेक हल्लुक गेंद ओकर मोटगर बैट मे भूर कऽ देलकै? ओ सोचलक जे गेंद लऽ कए भागि जाइ। फेर तुरत्ते खियाल एलै जे ओकरा मोनक भाव गोला बुझिये जेतै आ पहिनहि सम्हरि जाएत। ओ विचार छोड़ि देलक। गोला हँसऽ लगलै। सुशील कें बुझा गेलै जे गोला फेर ओकर चोरि पकड़िए लेलकै। ओ लजा गेल। ओ किछु कहितए तै सँ पहिने गोला सुशील कें कहलकै–"कालि दोसर बैट लबिहें, हम कालि तोरे गेंद आ बैट सँ खेलेबौ। मुदा शर्त ओएह जे एकसर रहमे तखने।" एतबा कहैत गोला अकास मे उड़ि गेल।

सुशील असमंजस मे पड़ि गेल। ओकर दुष्ट स्वभाव बेर बेर कोनो तरहें गोला कें पकड़बाक स्कीम बनबै मे लागि जाए किन्तु ओकरा बुझाइ जे ई काज सम्भव नहि छै। ताबत ओकर संगी सब मैदान मे जुटि गेल छलै। ओ अपन बैट नुका रखलक आ सबहक संग सामान्य भावें खेलाए लागल। साँझ मे चोरा कए दोसर नवका बैट कीन अनलक।

अगिला दिन ओ फेर आधा घंटा पहिने मैदान मे पहुँचल। गोला ओकरा देखिते उतरि गेलै आ खेलेबा लेल तैयार भऽ गेलै। पहिने सुशील बॉल लेलक आ गोला कें बैट देलकै। सुशील किछु अन्दाज लगबैत गेंद फेकलक आ गोला बहुत होशियारी सँ बैट फेकलक। सुशील कें आश्चर्य लगलै जे बैट आ बॉल ठीक बीच मे एहू बेर मिलान कैए लेलकै। बॉल सामनेक स्टम्प सँ कने दूर जा कए खसलै किन्तु बैट ठीक स्टम्प पर। दौड़बा मे गोलाक वेग सुशीलक वेग सँ बहुत बेसी छलै से गोला बैट पहिने उठाइये लेलक। फेर गोला कें एक अंक बेसी भेट गेलै। बैट मे कोनो तरहक क्षति नहि भेल छलै। अगिला बेर जखन गोला बॉल फेकलक आ सुशील फाउलक शर्त कें बचबैत बैट कें कनिये जोर सँ फेकलक तखन बैट तऽ ठीके स्टम्पक बीच मे खसलै मुदा बॉल ओकरा छुबिए टा नहि देलकै, एक कोन झाड़ियो देलकै। गोलाक फेकल बॉल पहिलुके जकाँ स्टम्प पर रुकि गेलै। एहि बेर सुशील कने होशियारी देखौलक आ जल्दी बैट उठबै लेल दौड़ल किन्तु गोला जितिए गेलै।

सुशील फेर जखन बैट हाथ मे लेलक आ झड़ल कोन देखलक तखन ओकरा बड़ आश्चर्य भेलै। गोला ओकर मनोभाव बूझि गेलै। ओकरा बुझेलकै–"आइ हम तोरे बॉल सँ खेला रहल छियौ, ई ओतेक चिक्कन नै छौ तें कोन एना झड़ि गेलै। यदि हमर अपन बॉल रहैत तऽ निश्चिते एक बेर भूर हेबे करितै।"

"लेकिन ई भूर होइछै किएक?"

"अरे एतबो नै बुझै छिही? तेज गति सँ अबैत गोली मोट शीशा मे सेहो छेद कऽ दैत छै कि नहि? जतेक बेसी जोर सँ बैट बॉल सँ टकरेतै ओतबे बॉल के वेग घटतै। तें ने हमर फेकल बॉल स्टम्पक आगू नहि जा पबै छै आ बैट मे किछु चोट लागि जाइछै।"

"तखन तऽ दसे मिनट मे बैट सौंसे थौआ भऽ जेतै, लोक खेलेतै कोना?"

"एतुका बैट कमजोर होइछै। हम सब अपना देश मे जे बैट बनबै छिऐ से कतबो बेर बॉल सँ टकराइ, ओकरा किछु नहि होइछै। बॉल आ बैट दूनू विशेष तरीका सँ बनाओल जाइछै।"

"तों अपना देशक बैट एक बेर देखा ने।"

"बेस, कालि हम बैट आ बॉल दूनू लेने एबौ, मुदा पहिनहि चेता दैत छियौ, बदमासी नहि करिहें।" एतबा कहैत गोला उड़ि गेल। सुशील झड़लाहा बैट लेने कने काल ठाढ़ रहल। फेर घुरि कए गाम पर चल गेल। साँझ मे जखन संगी सब पुछलकै तऽ मोन ठीक नहि रहबाक बहन्ना बना देलकै। ओ झड़लाहा बैट सँ सामान्य रूपें क्रिकेट नहि खेला सकैत छल। सब दिन एकटा नव बैट कोना कीनत? ई चिन्ता छलै। तें मोन मे किछु विचारलक।

अगिला दिन ओ खाली हाथ मैदान गेल। गोला बैट आ बॉलक संग उतरल। सुशील बेराबेरी ओकर बैट आ बॉल अपना हाथ मे लऽ कए देखलक। अद्भुत छलै ई चीज। बॉल तऽ पहिने ओ देखिये लेने छल किन्तु एतेक हल्लुक आ मजगूत बैट पहिल बेर देखि रहल छल। लगलै जेना क्रिकेटक बैट नहि, टेनिसक रैकेट होइ। एक हिसाबें ओ बैट टेनिसक रैकेट सँ हल्लुके छलै।

खेला शुरू भेल। एतेक हल्लुक बैट सुशीलक हाथ मे जेना कन्ट्रोले मे नहि अबै। ओकरा बुते सोझ दिशा मे फेकले नहि होइ। गेंद तऽ ओ फेकितो छल मुदा बैट फेकबा मे गड़बड़ा जाइ छल। गोला ओकरा बुझेलकै–"सबटा प्रैक्टिस के बात छै। भारी बैट सँ खेलाइत छलें एखन तक, फेर एके दिन मे एतेक हल्लुक बैट कोना फेकल हेतौ?"

गोला ओकरा सिखेबाक कोशिश कऽ रहल छलै मुदा सुशील कें एहि खेला मे कोनो रुचि नहि छलै। ओ निश्चय केलक जे बैट लऽ कए भागत। देखल जेतै।

जखने ओ पड़ेबाक चेष्टा केलक, गोला ओकरा पकड़ि लेलकै आ बैट छीन लेलकै। संगहिं ओकरा सुना देलकै–"तोरा मोन मे दुष्ट भाव आबि गेलौ, आब हम तोरा संग नहि खेलाएब। हमर इच्छा छल तोरा नवका क्रिकेटक संग नवका फुटबॉल सेहो सिखबितियौ किन्तु हाय रे बकलेल, गुरुए संग नङटै शुरू कऽ देलें।" आ गोला अकास मे उड़ि गेल।

सुशील तकिते रहि गेल। तकर बाद फेर तीन चारि दिन ओ एकसरे ओही समय मैदान मे जाइत रहल, ने गोला अकास मे उड़ैत देखेलै आ ने फेर मैदान पर उतरलै। ओ उपस्थित बच्चा सब सँ पूछि रहल छल ककरो एहन उड़नछू गोला सँ भेंट भेल

छलै कि? कोनो बच्चा गोला कें एतेक नजदीक सँ कहियो नहि देखने छल। तरुण बाजि उठल–"पहिल बेर पोखरि मे हम ओहि गोला कें एक क्षणक लेल पकड़ने रहियै। आब सुशील भाइ क्रिकेटो खेला लेलक। अच्छा कह, कतेक गोटे एकरा खिस्सा पर विश्वास केलही?" उत्तर देलकै शिवम–"खिस्सा बनबै मे आ लोक सब कें ठकै मे तऽ पूरा कनकटोली ब्लॉक मे नाम केने अछि सुशील भाइ। ई उड़नछू गोला बला खिस्सा सेहो कोनो ओहने नवका भेड़िया छिऐ।" साधारण परिस्थिति मे एहि टिप्पणी पर सुशील खिसिया जइतै आ ओकरा मारए छुटितए किन्तु आइ ओ शान्त भावें बाजल–"रौ बकलेल, कहलियौ तऽ जे हमरा लग सबूत अछि।" एहि बात पर कियो किछु नहि बाजल।

अनु कें विश्वासे नहि भऽ रहल छलै जे कतेक उड़नछू गोला एमहर आबि रहल छै आ कि ओकरे संगी गोला एकरो संग दोस्ती करबाक कोशिश केलकै। ओकर इच्छा भेलै अपन अनुभव बता देबाक किन्तु फेर किछु सोचि ओ चुप्पे रहि गेल। खिस्सो खतम भेलै आ घंटी सेहो बाजि गेलै।

खेलकूद प्रतियोगिता

समय आबि गेल छलै इलाकाक विभिन्न स्कूल मे वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताक आयोजन करबाक। माहीपुर मिडिल स्कूल लेल ई समय बेसी महत्वपूर्ण रहैत छलै कारण ओकर क्रिकेट आ फुटबॉल टीम ब्लॉक स्तरक चैम्पियन बनिते छल। कोनो कोनो वर्ष तऽ अनुमंडल स्तर तक सेहो पहुँचि गेल छल। एहि दूनू खेल मे पछिला दू वर्ष सँ ओकर स्टार खिलाड़ी छलै सुशील। सुशील कें पूरा छूट छलै अपन टीम चुनबाक आ एहि काज मे ओ कोनो भेदभाव नहि करै छल। खिलाड़ीक गुणवत्ता एकमात्र निर्णायक मापदंड छलै। टीम मे जगह बनेबा लेल कतेको विद्यार्थीक गार्जियन सुशीलक पिता कमलेश सँ पैरवी कराबथि मुदा सब बेकार। पिताक हजार उचित-अनुचित बात सुशील मानि लितनि मुदा टीमक चुनाव मे कोनो हस्तक्षेप बर्दास्त नहि।

टीम चुनबा लेल प्री-सेलेक्सन प्रतियोगिता शुरू भेलै, वर्ग पाँच सँ आठ तक के विद्यार्थी भाग लेबा लेल नाम देबऽ लगलै आ विभिन्न स्तर पर शुरू भेल खेला। पहिने एके क्लासक सेक्सन सब के बीच, फेर चारू क्लास के एक-एक टीम बनल, तकर अपना मे खेला। एवम् प्रकारे करीब दू सप्ताह मे स्कूलक टीम चूनल जाइ आ स्कूलक भीतर कोन क्लासक टीम सबसँ नीक खेलाएल तकरो चुनाव भैए जाइ।

वार्षिक प्रतियोगिता लेल आन खेल सब मे सेहो बच्चा सब नाम लिखौनाइ शुरू केलक। पछिला साल तक अनु एहि खेल सबसँ हटले रहैत छल, ओकरा एहि सब मे कोनो विशेष रुचि नहि छलै। मुदा एहि बेर ओ अपन नाम शतरंज लेल लिखा देलक। सबकें आश्चर्य लगलै। एहि खेल मे सबसँ नामी खेलाड़ी छल आठम कक्षाक लड़की करुणा, सुशीलक जेठ बहिन आ ओही कक्षाक लड़का अमित। शतरंज मे ई दूनू स्कूलक प्रतिनिधित्व जरूर करैत छल मुदा प्रखंड स्तर पर कहियो कोनो प्रतियोगिता जीतल नहि छल।

अनुक नाम सूनि सबकें आश्चर्य लगलै कारण ओकरा स्कूल मे कहियो कियो शतरंज खेलाइत नहि देखने छलै। पहिल स्तरक खेल लेल नाम छँटबाक कोनो काज नहि छलै कारण शतरंज मे बेसी बच्चा नहिए अबैत छलै। कक्षा चारि तक शतरंज मे कोनो बच्चा नहि नाम देने छलै। कक्षा पाँच-छओ आ कक्षा सात-आठ के ग्रुप बनाओल गेल।

अपना किलास मे अनु एकसरे छल। तें ओकरा पहिल खेल खेलाए पड़लै छठम वर्गक प्रीति सँ। प्रीति कने गौरवाह टाइपक विद्यार्थी छल, ओकर बाप गामक मुखिया छलखिन। ओ जूनियरक संग पहिल स्तर के खेल खेलेबा सँ मना कऽ देलकै। बात कने मने सब कें ठीक लगलै कारण स्कूल मे अनु एकदम नवसिखुआ छल, ओकरा कहियो कियो प्रैक्टिस करैत देखने नहि छलै। एकर विपरीत आन बच्चा सब स्कूलक कॉमन रूम मे टिफिनक समय, छुट्टीक बाद जेना तेना किछु प्रैक्टिस करिते छल। एकर खबरि शिक्षक लोकनि कें सेहो भेटैत रहैत छलनि। सबकें प्रायः बुझले रहैत छलै जे कोन खेल मे कोन बच्चा सामिल होएत।

अनु मुह लटकौने घर आएल। साँझ मे पापा कें स्कूलक घटना सब कहलकनि। अनुक शतरंज खेलेबाक लूरिक गवाही ओएहटा दऽ सकैत छलखिन। ओ फोन सँ हेडमास्टर सँ गप केलनि आ हुनका बुझबै के कोशिश केलनि जे अनु ठीके नीक शतरंज खेला रहल अछि, पछिला एक मास सँ स्वयं ओकरा ट्रेनिंग देलखिन आ जरूरति पड़ला पर ओ स्कूल आबि सबहक सामने अनुक संग शतरंज खेलेता।

हेडमास्टर साहेब चेता देलखिन–“शैलेशजी, यदि कनियो ढिलाइ केलिये तऽ अपनहुँ बदनाम होएब आ बेटीक नाम सेहो कटि जाएत।” शैलेशजी उत्तर देलखिन–“अपने निश्चिन्त रहियौ हेडमास्टर साहेब, हमर बेटी एहि बेर सबकें चौंकाओत।” हेडमास्टर साहेब एहि प्रस्ताव कें मानि लेलखिन कारण शैलेशजी कें ओ नीक अभिभावक बुझैत छलखिन, संगहि स्कूलक बैंकक खाता कनकटोली मे ओही बैंक मे रहला कारण हुनका सँ बेसी काल बातचीत होइत रहैत छलनि। नियारल गेल जे अगिला दिन छुट्टीक बाद अनुक पापा स्कूल आबि ओतए किछु शिक्षकक उपस्थिति मे अनुक संग शतरंज खेलेथिन। शिक्षक लोकनि पिता-पुत्रीक बीच खेल देखता जे कोनो रूपें पिता द्वारा पुत्रीक सहायता स्वरूप कोनो गड़बड़ चालि नहि चलल गेल।

खेलक समय हेडमास्टर साहेबक संग खेल शिक्षक आ अनुक क्लासटीचर सेहो आबि गेलखिन। आरो नीक। तीन बाजी खेल भेलै जाहि मे अनु दू बेर जीतलक आ एकबेर पापा जितलखिन। देखनिहार तीनू अतिथि कें कोनो गड़बड़ी नहि बुझेलनि आ अनुक प्रतिभा सँ ओ सब बहुत प्रभावित भेला।

स्कूल मे तैयो प्रीति अपन विचार पर अड़ल रहल। अन्त मे ओही कक्षाक सुनीता, जे पछिला साल प्रीति सँ जीत गेल छल, अनुक संग खेलेबा लेल तैयार भेलै।

एकटा नवसिखुआक संग सुनीताक खेल देखबा लेल स्कूलक भीड़ जमा भऽ गेलै। पहिल गेम अनु जल्दिए हारि गेल। मुदा दोसर गेम मे सुनीता कें बुझा गेलै जे ओकर सामने बैसल प्रतिद्वन्दी कोनो नवसिखुआ नहि, मांजल खेलाड़ी छै। उठापटक चलैत रहलै, शह-मात बढ़ैत रहलै। एतबहि मे अनुक जयजयकार होमए लगलै। प्रीति सेहो खेल देखि रहल छल आ ओकरा विश्वासे नहि भऽ रहल छलै जे एतेक परिपक्व चालि सब अनु कतऽ सिखलक। अनुक पापा नीक शतरंजक खेलाड़ी छला से तऽ गाम मे लोक कें बूझल छलै मुदा अनु जे चालि सब चलि रहल छल से हुनके सिखाएल छनि तै पर बहुतो कें सन्देह भऽ रहल छलै। अन्त मे चारि राउन्डक खेल अनु 3-1 सँ जीत गेल।

प्रीति कें आब कोनो बहन्ना नहि भेटलै। ओ खेल मे भाग लऽ कए हारि जेबा सँ नीक बुझलक वाक-ओवर दऽ देनाइ। अनु ढुकि गेल दोसर ग्रुप, कक्षा सात-आठ के बीच। स्कूले मे नहि इलाका मे तहलका मचि गेल जखन अनु अन्त तक ककरो सँ हारल नहि। हेडमास्टर साहेब बेस गौरवान्वित भेलथि आ अगिला चरण मे आन-आन स्कूलक विद्यार्थी सबहक संग अनु कें खेलेबाक विचार केलनि।

एमहर जाहि खेल मे माहीपुर मिडिल स्कूलक नाम छलै ओकरो तैयारी चलिए रहल छलै। फुटबॉल लेल सुशील अपन टीम चुनि लेने छल। एहि बेरक टीमक विशेषता जे आठम किलासक कोनो विद्यार्थी कें चान्स नहि भेटलै। सबटा खेलाड़ी छठम आ सातम किलासक छल। रिजर्व मे दूटा पाँचम किलासक बच्चा राखल गेल। क्रिकेट मे जरूर आठम किलासक विद्यार्थी सब कें चान्स भेटलै। एहि मे पाँचम किलासक कोनो बच्चा नहि लेल गेल।

ब्लॉक स्तरक प्रतियोगिता लेल पहिल फुटबॉल खेला माहीपुर मिडिल स्कूल आ शिरीपट्टी गामक सूरी समाज इंगलिस स्कूलक बीच भेलै। खेल माहीपुरेक स्कूलक मैदान मे भेलै तें सब देखनिहार निश्चिन्त छल जे माहीपुर मिडिल स्कूल जितबे करतै। पहिल आधा घंटा के खेल मे गोल तऽ कोनो दिस नहि भेलै मुदा माहीपुरक बच्चा सब दबाब बनौने रहल। तकर बाद अचानक ओकरा सबहिक खेल जेना गड़बड़ाए लगलै आ अन्त मे ओ सब दू गोल सँ हारि गेल। सुशील स्वयं बहुते खराप खेलाएल। ओकर मनोभाव कियो बूझि नहि रहल छलै। ओकरा सामने गेंद अबै तऽ लगै जे उड़नछू गोला आबि गेलै, ओकर किक गड़बड़ा जाइ। सब देखनिहारक संग शिक्षक लोकनि बौक भेल ठाढ़ छलाह। कियो किछु बुझिए नहि रहल छलै जे टीम

कें कोन रोग धऽ लेलकै।

तकर बाद तऽ सुशीलक कप्तानीक आलोचना होमए लगलै। क्रिकेट मे सेहो पहिले खेल माहीपुर मिडिल स्कूल कनकटोलीक जवाहर मिडिल स्कूल सँ हारि गेल, सुशील एहू मे बहुते खराप प्रदर्शन केलक। एतहु ओहिना सुशील भयभीत छल। बैट पकड़िए नहि होइ, लगै जेना गोला पीठ पर सवार छै। शॉट मारै काल लगै जे हाथ सँ बैट खसि पड़तै। सुशील किछु बाजि नहि रहल छल मुदा ओकरा दिमाग मे उड़नछू गोलाक संग कएल दुर्व्यवहारक घटना घुरियाइत रहैत छलै। ओकर खेल प्रभावित भऽ रहल छलै। अन्त मे ओ अपनहि दूनू टीम सँ हटि गेल। माहीपुर मिडिल स्कूल एहि वर्ष दूनू खेला मे पछुआइए गेल।

एकर विपरीत शतरंज मे अनु गामक आ अपन स्कूलक नाम लगातार बढ़ौने जा रहल छल। आ अन्त मे ओ दिन आबिए गेलै जे ओ ब्लॉक स्तरक चैम्पियन बनि गेल। स्कूलक हेडमास्टर साहेब शैलेशजी कें बधाइ देलखिन जे हुनकहि ट्रेनिंग के बल पर अनु एतेक नीक प्रदर्शन केलक। असली खिस्सा हुनका नहि बूझल छलनि ने।

ब्लॉक स्तरक चैम्पियन ट्रॉफी लेने जखन अनु घर आएल तखन परिवार मे सब बहुत खुसी छल। भोजन काल मम्मी अनु कें पुछलखिन–"बता अनु, कोना तों एतेक नीक शतरंज खेलाएब सिखलें?" पापा तुरत्ते उत्तर देलखिन–"हमहीं ने सिखेने छलियै।" मम्मी फेर हुनका पुछलकनि–"सत्ते अहाँ कें लगैत अछि जे अहाँक ट्रेनिंग सँ बेटी ब्लॉक चैम्पियन बनि गेल?" ओ एहि प्रश्नक भाव नहि बुझलनि–"अहाँ की कहए चाहैत छी?"

"हम एखने बता दैत छी। अच्छा अनु, बाज दू मास पहिने, जखन तों पापा संग शतरंजक प्रैक्टिस शुरू केलें, स्कूल सँ आबि दुपहरिया मे छत पर की करैत छलही?"

अनु सकपका गेल। ओकरा लगलै जे ओकर चोरि बहुत पहिनहि पकड़ा गेलै। एक बेर ओकरा सन्देह भेल छलै जखन चॉकलेट के पाकिट कने खूजल भेटलै किन्तु ओहि बात पर ओतेक ध्यान नहि देने छल ओ। एखन मम्मीक एकदम तीर जकाँ सबाल सँ ओकर ट्रॉफी जितबाक सब खुसी जेना क्षणे मे बिला गेल होइ। ओकरा चेहरा पर अबैत डरक भाव पापा सँ नुकाएल नहि रहलनि। ओ पूछि बैसलखिन–"कोन रहस्यक बात करै जाइ छी अहाँ सब? एहि खुसीक क्षण मे किएक अनु कें एना डँटैत छिए?"

अनु मूड़ी झुकौने चुपे रहल। बात मम्मी बजलखिन–"डँटैत नहि छिए, रहस्यक बात बतबऽ चाहैत छी। छत पर कोनो विचित्र जन्तु अबैत छलै जकरा संग ई शतरंज

खेलाइत छल। हम कएक दिन देखलियै। हम टोकलियै नहि एहि कारणें जे ओ एकटा नीक गुण सीख रहल छल। अहाँ जखन एकरा शतरंज सिखबै छलियै तखन कोनो बेर सन्देह नहि भेल ने जे एकर बुद्धि बहुत आगू बढ़ि गेल छै। खैर, ओ सब तऽ बीत गेलै, आइ हम सब खुसी छी जे अनु एतेक नीक प्रदर्शन केलक अछि, इलाका मे अपन, परिवारक, गामक आ स्कूलक नाम बढ़ौलक अछि। किन्तु आगू हमरा सबहिक की कर्तव्य छी? की हम सब प्रशासन कें सूचित नहि करियै जे उड़नछू गोला सँ मिलैत जुलैत कोनो अजनवी वस्तु हमरा छत पर अबैत छल आ अनुक संग खेलाइत छल?"

अनुक पापा स्वीकार केलखिन जे जरूर एना करबाक चाही मुदा अनु कें डर लागि गेलै। ओ एकटा बहन्ना बनेलक–"देखियौ पापा, उड़नछू गोला कें एमहर आएब आब कोनो रहस्य नहि रहि गेल छै। सुशील किछु दिन पहिने पूरा स्कूल मे अपन खिस्सा सुना देने छलै, ओ बात कोनो ने कोनो रस्तें जरूर प्रशासन तक पहुँचिए गेल हेतै आ सम्भव छै जे जाँच सेहो शुरू भऽ गेल होइ। तें एखन फेर अपना दिस सँ हम सब एकरा नहिए प्रचारित करी। हम वचन दैत छी जे उचित अवसर एला पर हम सबटा अनुभव प्रशासन कें बताइए देबै।"

एहि आश्वासन पर अनुक मम्मी-पापा राजी भऽ गेलखिन आ बात एतहि समाप्त भेल।

फुसियाहाक गवाही

सुशीलक बताओल घटनाक चर्चा स्कूल सँ होइत इलाका मे सबतरि पसरि गेलै। प्रायः दू वर्ष सँ बेसी समय बीत गेलाक बाद फेर उड़नछू गोलाक चर्चा एहि इलाका मे उठए लगलै। दू वर्ष पहिने पहिल बेर जखन ई गोला एहि गाम मे उतरल छल तखन बेसी काल जल मे बितौने छल आ ओ ककरो सँ बात नहि केने छल। एहि बेरक घटना बेसिए अजगुत छलै। तें प्रशासन तक एकर खबरि पठाएब जरूरी छलै। बात स्थानीय अधिकारी लग सेहो पहुँचल आ हुनका द्वारा जिला प्रशासन तक सेहो।

जिला प्रशासनक तकनीकी विशेषज्ञ लोकनि आबि कए कनकटोली हाइ स्कूल मे लगाओल यंत्रक सब संकेत कें जाँचए लगलाह। ओहि मे एहन कोनो चिन्ह नहि छलै जाहि सँ ई पता चलै जे कोनो पराग्रही जीव अथवा अन्य किछु एहि इलाका मे प्रवेश केलक जकरा देह सँ कोनो प्रकारक रेडियो आ कि माइक्रोवेव तरंग बहराइत होइ अथवा ओ अपना संचार लेल एहि तरंगक उपयोग करैत होए।

समस्या छलै जे घटनाक प्रत्यक्षदर्शी मात्र एक व्यक्ति छल माहीपुर गामक मिडिल स्कूलक सातम कक्षाक विद्यार्थी सुशील। ओकरा बारे मे लोक कें बहुत नीक विचारो नहि छलै। झूठ बजै मे स्कूल आ गाम मे ओ विख्यात छल। ठकि कए लोक कें मूर्ख बनबै मे ओकरा आनन्द अबैत छलै से बात जगजाहिर छल। पछिला तीन चारि साल मे कतेको एहन घटना भेल छलै जाहि मे ओ पकड़ाएल छल। गामक किछु लोक तऽ ओकर नामे राखि देने छलै "भेड़िया आया, भेड़िया आया।"

एहि कारण लोक कें सुशीलक बात पर विश्वास नहि भऽ रहल छलै। किन्तु एहि बेर सुशील अपना बात पर अडिग छल। ओ बेर-बेर सबकें बता रहल छलै ओहि गोलाक बारे मे। ओकरा लग सबूतक रूप मे मात्र ओकर क्रिकेट बैट छलै जाहि मे भूर भेल छलै। मुदा ई एतेक ठोस प्रमाण नहि मानल जा सकैत छलै। सुशीलक चरित्र जेहन छलै ताहि मे ई कोनो असंभव नहि जे ओ अपनहिं सँ बैट मे भूर कऽ देने होइ

अपन सबूत कें प्रामाणिक बनबै लेल।

सबसँ रहस्यमय छल स्कूल मे लगाओल यंत्र मे कोनो तरहक संकेतक अनुपस्थिति। यदि सुशील सत्य बजैत छल तखन यंत्र मे कोनो तरहक संकेत जरूर रहबाक चाहियै। जिला स्तरक कर्मचारी सब कें किछु बुझबा मे नहि एलनि तऽ जिलाधिकारी महोदय राज्यक मुख्य सचिव द्वारा सेना मुख्यालय आ अंतरिक्ष विभागक मुख्यालय कें सेहो एहि घटनाक सूचना पठा देलनि।

अंतरिक्ष विभागक विशेषज्ञ पहुँचि गेलाह कनकटोली हाइ स्कूल पर। हुनका संग सेनाक संचार विभागक तकनीकी विशेषज्ञ सेहो छलाह। दूनू गोटे यंत्र के खोलि-खालि सब तरहें जँचलनि, यंत्र ठीके-ठाक छलै, ओहि मे कोनो खरापी नहि। धरती पर व्यवहार कएल जाइत संचार सम्बन्धी सब तरहक रेडियो आ माइक्रोवेव तरंग पर ओ यंत्र एखनहु संकेत पकड़िते छलै आ आगू मुख्यालय कें पठबिते छलै। ओहि मे प्रयुक्त बैटरी सेहो काज कैए रहल छलै। ओहि मे लगाओल टाइम चार्ट देखला सँ पता चलैत छलै जे मसीन कखनहु बन्द नहि भेल छलै। पछिला दू साल मे जतेक बेर बरखाक मौसम मे बिजली चमकल छलै तकरो संकेत ओहि मे पकड़ाएले छलै। तखन की भेलै जे ओ गोला चारि दिन तक चुपचाप अबैत रहल आ ओकर कोनो संकेत एहि यंत्र मे नहि पकड़ेलै?

सुशील हाइ स्कूल पर बजाओल गेल। ई बात बुझिते ओहि स्कूलक अनेक बच्चा हाइ स्कूल पर आबि गेल। उत्सुकतावश अनु सेहो पहुँचल आ देखऽ लागल खेला।

दूनू विशेषज्ञ सुशील सँ पूछताछ शुरू केलनि। ओ जहिना स्कूल मे अपन संगी सब कें नवका क्रिकेट खेलाक बारे मे बतौने छलै तहिना ओहि विशेषज्ञ लोकनि कें सेहो बता देलकनि। आब ओ सब आर चकित भेलाह। एतेक काल तक ओ जीव आ कि कोनो मसीन धरती पर रहल, सुशीलक संग खेलेलक आ तैयो कोनो तरहक संकेत हुनका यंत्र मे नहि रेकॉर्ड भेलै। ओ जन्तु कि मसीन मैथिली कतए सिखलक? किछु वर्ष पहिने जे गोला सब जल मे हेलैत भेटल छलै आ जकर संकेत पकड़ै लेल स्कूल मे यंत्र लगाओल गेल छलै से गोला आ एखन एतेक दिन बाद जे गोला सुशील कें भेटलै से एके जातिक, एके देशक छलै, अथवा एके छलै कि अन्य? कतेक एहन गोला एहि इलाका मे उतरैत रहल अछि? ओकरा सबकें एहि इलाका मे एबाक उद्येश्य की छै? प्रश्न अनेक आ उत्तर किछुओ नहि।

ने सुशीलक बात पर अविश्वास कएल जा सकैत छलै आ ने यंत्र मे कोनो तकनीकी खरापी भेटि रहल छलै। सुशीलक बैट राखि लेल गेल जे एहि मे भेल छेदक जाँच प्रयोगशाला मे कएल जाएत। यदि कोनो विशेष मसीन सँ छेद भेलै जे कि साधारणतः स्थानीय रूपें उपलब्ध नहि होइ तऽ तकर स्रोत सेहो ताकल जाएत। यंत्र कें बदलि देबाक विचार सेहो कएल जा सकैत छलै, मुदा ई सब निर्णय तऽ उच्चस्तरीय जाँचक बादे लेल जेतै। एतबा सोचि ओ दूनू विशेषज्ञ अपन काज समाप्त कऽ कए घुरबाक प्रोग्राम बनौलनि।

एखन तक अनु सब किछु दूरे सँ देखि रहल छल। ओ बहुत दुविधाक स्थिति मे छल जे की करए। सुशीलक बात पर ओ नहिओ विश्वास करए मुदा ओकर अपन अनुभव तऽ छलैके। उड़नछू गोला एहि इलाका मे उतरैत छलै तकर साक्षी ओहो छल। अनु लग जे चॉकलेटक पैकेट बला सादा कागत सब छलै से कतेक प्रामाणिक सबूत मानल जेतै ओकरा नहि बूझल छलै। किछु लीखल रहितै तऽ अनुमानो कएल जा सकैत छलै मुदा सादा कागत कोन काजक होइतै?

अनु के इच्छा होइ जे अपन अनुभव विशेषज्ञ लोकनि कें बता दिअए। फेर सोचए जे किछु लाभ तऽ हेतै नहि। जखन स्कूलक यंत्र मे कोनो संकेत नहिए भेटि रहल छलै तखन ओकरो बात पर लोक कोना विश्वास करतै? मुदा फेर ओकरा लगै जे सेना आ अंतरिक्ष विभागक नजरि मे ई घटना नहि औतै तऽ की पता देशक सुरक्षा कें सेहो खतरा भऽ सकैत छलै। ई बात सोचि ओ डराइते-डराइते एकसरे हेडमास्टर लग गेल आ हुनका सँ अनुरोध केलकनि जे ओहि विशेषज्ञ लोकनि सँ अलग मे बातचीत करए चाहैत अछि।

हेडमास्टर साहेब चौंकला–"की बात?" अनु हुनका कहलकनि–"श्रीमान अपने सेहो उपस्थित रहबै मुदा हमरा जे किछु कहबाक अछि से हम विद्यार्थी लोकनिक भीड़ मे नहि कहए चाहैत छी, एकान्त चाही, ततबे हमर अनुरोध अछि।"

हेडमास्टर साहेब तुरत्ते दूनू विशेषज्ञ कें अपना कमरा मे बजौलनि। हुनका कहलखिन जे ई बच्चा अपने सब कें किछु कहए चाहैत अछि। आब ओ दूनू सेहो चौंकला। ओ सब तऽ फ्लाइट पकड़बा लेल पटना विदा भऽ रहल छलाह। तैयो बैसए पड़लनि। अनु हुनका अपन खिस्सा शुरू सँ अन्त तक सुना देलकनि। एकटा विचित्र गोला कोना ओकरा छत पर उतरलै, मैथिली बाजि ओकरा सँ दोस्ती करबाक अनुरोध केलकै आ तखन सँ करीब दू मास धरि कोना नित्य आबि ओकरा अनेक रंग आ स्वादक चॉकलेट दैत रहलै आ ओकरा संग लूडो, ताश, शतरंज आदि खेलाइत रहलै, कोना अनु ओकरे सँ एतेक नीक शतरंज सिखलक जे स्कूल मे चैंपियन बनि गेल, कोना एक दिन जखन अनु ओकरा संग दोस्ती करब स्वीकार कऽ लेलकै तखन ओ रूप परिवर्तन कऽ कए अनुक डुप्लिकेट बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल, ओहने कपड़ा पहिरने, कोना करिया झुम्मरि खेलेबा काल ओ अनु कें कोरा मे उठा लेलकै मुदा

जखन अनु ओकरा उठबैक चेष्टा केलक तखन ओ बहुत भारी बुझेलै, सबटा अनुभव ओ सिलसिलेवार रूपें दूनू विशेषज्ञ कें बता देलक।

आब तऽ दूनू विशेषज्ञ बेस गम्भीर भऽ गेलाह। हेडमास्टर साहेब सेहो सोचए लगलाह जे सुशीलक चरित्र तऽ ठकै बला छै तें ओकरा बात पर कमो ध्यान देल जाए मुदा अनु तऽ एहन नहि छल। पुछला पर अनु बता देलकै जे पहिल दिन जखन ओकरा चॉकलेट भेटलै तखन डर भेल छलै खेबा मे आ एक दिन तक नहि खेलक जे कतहु किछु गड़बड़ ने होइ मुदा से सब किछु नहि छलै आ तकर बाद ओ नित्य नव नव चॉकलेट खाइत रहल, कहियो कोनो तरहक स्वास्थ्य सम्बन्धी शिकाएति नहि भेलै। सब बेर गोला चिड़ैक रूप मे अकासे सँ उतरैत छलै मुदा उतरिते ओकर रूप बदलि जाइत छलै। खेलेबा काल ओहि गोला सँ चुट्टा जकाँ हाथ बहराइत छलै। अन्तिम बेर जे ओकरा गोला सँ भेंट भेलै तकरा करीब एक मास बीत गेलै। तकर बाद सँ एखन तक अकास मे कहियो गोला नहि देखाइ देलकै।

ओ गोला अपना देशक बारे मे जे किछु झूठ-साँच बतौने छलै सेहो हुनका सुना देलकनि। मुदा एतए ओ रुकि गेल। ओ सोचलक जे गोला द्वारा बताओल ओकर देश टूर करबाक बात एखन नहिए बाजी। ओकरा एहि बातक विश्वासो नहि छलै जे सत्ते कियो एहि देश सँ ओहि देश तक दस मिनट मे पहुँचियो सकैत छल आ कि ओ गोला ओहिना किछु कहि देलकै। ओकरा फेर बजेबाक जे तरीका छलै विभिन्न रंगक गुड्डी उड़ा कए, सेहो ओ नहि बाजल। एतहु ओ अपनहि निश्चय नहि कऽ सकल जे ई बतौनाइ ठीक हेतै कि नहि?

हेडमास्टर साहेब कने डँटैत अनु कें पुछलखिन जे एतेक दिन तक ओ किएक एहि बातक खबरि ककरो नहि देलकै? अनु एतबे बाजल जे ओकरा लग कोनो ठोस प्रमाण नहि छलै आ दोसर बात जे ओहि गोला सँ जे ओ शतरंज सीखि रहल छल से छुटि जइतै।

अनुक अनुभव सूनि कए दूनू विशेषज्ञ सोच मे पड़ि गेलाह। एहि घटनाक विस्तृत जाँच आवश्यक छलै। ओ दूनू फेर एक बेर यंत्र कें खोललनि आ टाइम चार्ट पर समय मिला कए पछिला दू मास तक के सब संकेतक अध्ययन केलनि मुदा हाथ किछु नहि लगलनि। गोलाक अबैक कोनो संकेत कतहु नहि छलै। अनुक खिस्सा सँ गोलाक सम्भावित देशक किछु जानकारी तऽ भेटलनि किन्तु हुनका अपना ज्ञान मे एहन कोनो जगहक चर्चा विश्व मे आन कियो एखन तक नहि केने छलै। यदि कोनो देश बुझनहु होएत तऽ ओ सुरक्षाक कारणें अनका नहिए बूझए देतै ई निश्चिते।

बीसम शताब्दी मे उड़न तस्तरीक जतेक घटना भेल छलै ताहि सब सँ भिन्न छल एहि गोलाक आएब। उड़न तस्तरी एखन तक भारतीय उपमहाद्वीप मे नहि देखल गेल छलै। अमेरिका आ यूरोप मे जतए किछु देखल गेल छलै ततहु मात्र गोटेक क्षणक लेल, एना घंटा घंटा भरि खेला खेलाइत रहऽ बला नहिए। कोनो उड़न तस्तरी अपन एहन संकेत नहिए छोड़ने छल जेना बैट मे भूर भेल छलै। आ यदि कियो ओहि वस्तु कें देखनहुँ छल तऽ ओकर आवाज तऽ नहिए सुनने छल। एम्हर ई विचित्र वस्तु लोकक रूप धारण करैत छल, करिया झुम्मरि खेलाइत छल, क्रिकेटक नव नियम बना लेने छल, सब किछु विचित्रे। आ सबसँ आश्चर्यजनक छल ओकर मैथिली बाजब।

विशेषज्ञ लोकनि सब सूचना कें नीक जकाँ लीखि पटना विदा भेलाह। सुशीलक बैट संग लइए लेलनि। बैट कें अंतरिक्ष विभागक प्रयोगशाला मे जाँच करबाक छलै। पटना सँ एक गोटे दिल्ली आ दोसर जइतथि बंगलोर अपन अपन विभागक मुख्यालय कें एतुका जाँचक रिपोर्ट देबा लेल। जाइत काल हेडमास्टर साहेब कें संकेत दऽ देलखिन जे एहि दूनू बच्चाक क्रियाकलाप पर चुप्पेचाप नजरि राखल जाए। खास कऽ कए अनुक लेल हुनका सबहक ई अनुमान छलनि जे गोला सँ ओकरा दोस्ती भेल छलै तें कहियो ने कहियो ओ गोला फेर ओकर खोज खबरि लेबा लेल आबि सकैत छलै।

स्कूल सँ आबि अनु अपन मम्मी कें सब बात सुना देलकै। आइ ओकर मोन प्रसन्न छलै जे अपन उत्तरदायित्वक निर्वाह केने छल। अपराधबोधक भार सँ ओ मुक्त भऽ गेल छल। एतबे दिन मे अनु कें लगैत छलै जे कतेक भयंकर बिहारि आबि गेल होअए आ ओ अपनहि एहि बिहारिक केन्द्र मे फँसि गेल होअए। जतेक बात अनु नुका रखने छल ओहि पर कतेक बेर विचार केलक किन्तु ओ निर्णय नहि लऽ सकल जे ककरो एखन बताएब उचित हेतैक। ओकरा ई नहि बूझल छलै जे अन्तिम दिन गोलाक संग भेल ओकर गप मम्मी सुनने छलै की नहि। मम्मी-पापा कें आश्वस्त भऽ गेला पर आ शान्त देखला पर ओहो निश्चिन्त भऽ गेल। तत्काल गुड्डी देखा कए गोला कें फेर बजेबाक विचार ओ स्थगित कऽ देलक। जीवन सामान्य गतिएँ चलए लगलै।

प्रायश्चित्त

अनुक छत पर ओ उड़नछू गोला प्रायः दू मास तक सब दिन अबैत रहलै, नव नव स्वादक चॉकलेट अनु कें दैत रहलै आ ओकरा संग लूडो, तास, शतरंज सेहो खेलाइत रहलै आ अन्त मे दोस्त बनि गेलै। अपना देशक बारे मे सेहो ओ बहुत किछु बता गेलै।

ई खिस्सा बच्चा सबहक बीच सेहो पसरि गेलै। सुशील जखन ई खिस्सा सुनलक तखन ओकरा आश्चर्यो भेलै आ अपना पर तामस सेहो चढ़लै। अपने बेबकूफी सँ ओ चारिमे दिन ओहि गोला कें नाराज कऽ देलक जाहि सँ ओ सुशील कें दुष्ट बतबैत खिसिया कए चल गेलै। यदि ओ बैट लऽ कए भगैक कोशिश नहि केने रहैत तऽ गोला फेर अगिला दिन एबे करितै। चॉकलेट दितै कि नहि से तऽ दोसर बात, किछु नव बात जरूरे ओ सिखबितै जेना नवका क्रिकेट खेलाक नियम सब सिखौने छलै। आब एहि गलतीक कोनो प्रतीकार तऽ छलै नहि।

माहीपुरक चौक पर सेहो चर्चा उठलै आ ओकर पापा कमलेश सेहो ई पूरा खिस्सा सुनलनि। हुनको अपना बेटा पर तामस चढ़लनि। खोखन तऽ अवसरक ताक मे छलाहे। ओ कमलेश कें बुझबए लगलखिन जे सुशील सँ ई बड़ पैघ भूल भेलै जे वरुण देवता संग दुष्ट जकाँ व्यवहार केलक। देवता आब रूसि गेल छथि। खोखन अपन गुरु कलपू पंडितक संग मिल कए एकर प्रचार करब नहि छोड़ने छलाह जे ओ उड़नछू गोला असल मे वरुण देवता छलखिन। शुरू-शुरू मे जखन ओ उड़नछू गोला माहीपुरक पोखरि मे आ किछु दिनक बाद कनकटोलीक बगल मे सरपतिया चऽर मे उतरल छलै तखने सँ कलपू पंडित सुगबुगाए लागल छलाह जे ई वरुण देवताक प्रकोप छिएनि, ओएह गोलाक रूप मे लोक सँ भेंट करए अबैत छथिन। मुदा की कहए चाहैत छथिन? से तऽ ककरो बूझल नहि भेलनि। एकाएक वरुण देवता कें की फुरेलनि जे धरती पर मिथिलाक एहि गाम सब मे टहलए लगलाह आ बच्चा सबहक संग दोस्ती करए लगलाह?

ई बात तऽ कलपू पंडित कें सेहो नहि बूझल छलनि मुदा ओ अपना बात पर अडिग छलाह जे ई वरुण देवताक रूप छिऐनि। कलपू अपन धूर्तइ कें शास्त्रीय रूप दैत एकटा छोटछीन स्तोत्र संग्रह बना लेने छलाह। ओ चाहैत छलाह जे इलाका मे गाम-गाम लोक नवाह कीर्तन जकाँ वरुण देवताक कीर्तन करए। मुदा लोक हुनका विचार पर कान-बात नहि दैत छल।

बीच मे दू साल बीत गेला पर जखन वरुण देवता नहि प्रकट भेल छलखिन तऽ ओ कने चिन्तित भऽ गेल छलाह। आब नवका खिस्सा सबहक संग हुनको नव ऊर्जा भेटि गेलनि। ओ आशान्वित भेलाह।

कमलेशक बेटा सुशील सँ कोनो गलती भेलाक कारण वरुण देवता नाराज भऽ गेलखिन। मुदा एहि लेल आब कएले की जा सकैत छलै? ओ खोखनक बात पर जाइ बला लोक नहि छलाह। कमलेश शुरू मे वरुण देवताक पूजापाठक बात कें टारि देलखिन मुदा गामक किछु आर लोक सब हुनका बुझबए लागल जे कोनो तरहें एकर किछु उपाय करबाके चाही। की पता पूरा गामे पर एकर कोनो प्रभाव पड़ै। बाढ़िक खतरा तऽ छलैके। ओना तऽ माहीपुर गामक अगल-बगलक इलाकाक भूगोले तेहन छलै जे प्रत्येक दोसरा-तेसरा साल पर बाढ़ि आबिए जाइत छलै मुदा आगू यदि जल्दीए एहि तरहक कोनो घटना हेतै तऽ दोख हुनके देल जेतनि जे बेटा वरुण देवताक अपमान केलखिन आ तकर कोनो प्रायश्चित्त नहि केलनि। सुशीलक माए नीक जकाँ डरा गेलीह। ओ बेचारी धर्मभीरु महिला छलीह।

जेना-जेना ई गप आगू बढ़ैत जाइ, सुशील आर दुखी भेल जाए। भूर भेल बैट जे ओकर निसानी छलै सेहो जब्द कऽ लेल गेल छलै। सब तरहें ओकरा लागि रहल छलै जे अनेरे ओहि बैटक लोभ मे ओ खलनायक बनि गेल।

एमहर खोखन कलपू पंडित कें खबरि कऽ देलखिन। कलपू तऽ बूझू मुह बौनेहि छलाह, हुनका लेल ई खबरि तऽ चातक पक्षीक मुह मे स्वातीक बुन्न जकाँ भेटलनि। कलपूक तऽ इच्छा छलनि जे एहन अनुष्ठान कम सँ कम साल मे एक बेर आयोजित करबाके चाही। जें एतेक दिन सँ वरुण देवता कें प्रसन्न करबाक कोनो अनुष्ठान एखन तक नहि भेलै तें ओ फेर आबि बच्चा सब कें तंग करए लगलखिन।

एहि प्रायश्चित्तक कार्यक्रम मे खोखन अनुक परिवार कें सेहो सामिल करए चाहैत छलाह मुदा ओतए हुनकर गपक कोनो प्रभाव नहि पड़लै। अनुक मम्मी-पापा दूनू कहि देलखिन जे अनु कोनो गलती काज नहि केलक, यदि ओ गोला कोनो देवी देवता छथिन तैयो ओ तऽ दोस्तीए कऽ कए गेलाह। बूझू जे बच्चाक नीक व्यवहार हुनकर पूजे भेलनि। तें हुनका सब कें प्रायश्चित्त करबाक कोनो काजे नहि छलनि,

अपितु ओ सब तऽ विचारैत छलाह जे एकरा 'सेलिब्रेट' कएल जाए।

स्कूलक बच्चाक बीच अनु हीरो बनि गेल छल। शतरंजक चैंपियन तऽ ओ बनि गेले छल, उड़नछू गोला बला खिस्साक प्रचार भेला सँ बच्चा सबहक बीच ओकर आदर बढ़ि गेलै। आब छुट्टीक समय मे सब ओकरा घेरने रहैत छलै आ अनेक तरहक प्रश्न ओहि उड़नछू गोलाक बारे मे पुछैत छलै। अनु सब कें ओतबे बात बतबैत छल जतेक कि विशेषज्ञ लोकनि कें बतौने छल। ओहि सँ बेसी किछु नहि। सबकें आश्चर्य लगै जे कोना कए ओ गोला अनुक विभिन्न ड्रेस मोन रखने छलै आ कोना अनेक रूप मे ओ आबि जाइत छलै आ नव-नव चॉकलेट लेने अबैत छलै। सब बच्चा आब जेना सपना मे गोला कें देखए लागल, ओकरा सँ गप करए लागल।

सुशीलक किछु संगी सब ओकरा सँ नवका क्रिकेटक नियम सब बूझि प्रैक्टिस सेहो करए लागल। मुदा एहि मे समस्या छलै जे नियमक अन्तिम भाग तऽ गोला सुशील कें ठीक सँ बतौलकै नहि जे कोना कए बैट आ बॉल दूनू एके समान ओजन बला बनाओल जाए जाहि सँ दूनू कें फेकबा मे एके समान बल लगै। मिला जुला कए पूरा इलाका ओहि गोला सबहक दीवाना भऽ गेल। मुदा गोला भेटै तखन ने !

स्कूल मे आब नव चर्चाक विषय भऽ गेल जे कोन बच्चा राति मे सपना देखलक, ककरा उड़नछू गोला सँ भेंट भेलै आ की गप भेलै। के उड़नछू गोलाक संग सपनेहि मे उड़ि गेल। जेना सब उड़नछू गोला सँ भेंट करबा लेल सपनेक संसारक रस्ता पकड़ि लेने छल।

बच्चा सब जहिना उड़नछू गोला कें देखबा लेल, ओकरा संग गप करबा लेल व्यग्र भेल जा रहल छल तहिना खोखन कलपू पंडितक संग विभिन्न योजना बनेबा मे लागल छलाह जे कोना गौआँ कें एहि मादे बेसी सँ बेसी ठकल जाए। कलपू अपना दिस सँ आडम्बर बढ़ेबाक पूर्ण प्रयास कऽ रहल छलाह। वरुण देवताक स्तोत्रक पाठ तऽ जरूरे हेबाक चाही। हुनका खोखन पर पूर्ण विश्वास छलनि जे माहीपुरक ग्रामीण कें फँसेबा मे सफल हेबे करता। एक दिन कलपू पंडित अपना घर मे भरि दिन बन्द भेल रहला, कारण ककरो किछु नहि कहलखिन। कनकटोली मे ई चर्चा खूब उड़ल।

कमलेश किछु गौआँक संग बैसार केलनि जे कोन तरहें वरुण देवताक पूजा कएल जाए। खोखन तऽ एहन बैसारक अभिन्न अंग होइते छलाह। ओ प्रचार कऽ देलखिन जे ककनटोलीक कलपू पंडित कें वरुण देवता सपना मे दर्शन देलखिन आ स्पष्ट रूपें कहलखिन जे नवाह कीर्तन हेबाके चाही। संगहि सुशीलक बदमासीक खराप प्रभाव कें निरस्त करबाक हेतु ओकरा परिवार कें गामक समस्त दलित समाज कें भोजन करेबाक चाही। वरुण देवताक कथन छलनि जे ब्राह्मण भोजन हमरा

ओतेक पसिन्न नहि अछि मुदा हम दलित वर्गक भोजनक पक्ष मे छी। ई हुनकर नव रूप छलनि। बिडंवना देखू जे कोनो जमाना मे एही माहीपुर गामक पंडित सब इलाका मे अपन वर्चस्व पसारने रहैत छलाह, आइ एकैसम शताब्दी मे माहीपुर गाम खाली अछि आ कलपू सन धूर्त लोक एतए अपन धाख जमा लेलक अछि।

ई एकटा विचित्र नव अध्याय छल गामक कोनो आयोजन लेल। बात रहल खर्चाक। साधारण नवाह आयोजन मे गौआँ मिलकए खर्चक भार उठबैत छल। एतए सुशीलक प्रायश्चित्तक सबाल छलै। कलपू पंडितक कहब छलनि जे खर्च सार्वजनिक हो अथवा व्यक्तिगत, आयोजन नीक हेबाक चाही जाहि सँ देवता प्रसन्न होथि। हुनका अपन नीक भविष्य देखा रहल छलनि। इलाकाक किछु अन्य पंडित एहि मे अपन असहमतियो देखा देलखिन मुदा कलपू अडिग रहलाह।

सुशील एक दिन सपना मे देखलक ओएह उड़नछू गोला ओकरा भेंट केलकै आ बतौलकै जे ओ अपना व्यवहार सँ आनो बच्चाक चान्स खराप केलकै। ओ तऽ गेल छल बच्चा सबहक संग दोस्ती करए जाहि सँ सब कें अपना देश घुमाओत। मुदा आब ओ सचेत भऽ गेल जे लोक बदमासियो कऽ सकैत छै।

एहि सपनाक बाद सुशील अपना कें बहुत दोषी बूझए लागल। ओकरा संग गोला तऽ कोनो देशक चर्चा नहि केने छलै। तीने दिन मे ओ कतेक बतबितै? अनुक संग करीब दू मास तक अबैत-जाइत रहला कारण ओकरा बहुत किछु बतौने छलै। सुशील तऽ ई अवसर गमा देलक। की अनु कें बूझल छै ओहि उड़नछू गोलाक देश घुमबा लेल कोना जाएल जा सकैत छै? ओ अनु सँ पुछलक मुदा ओ एहि बारे मे किछु नहि बतौलकै। अनु एतबे कहलकै जे ओहो गोलाक प्रतीक्षा कए रहल अछि। ओहुना जतेक बात अनु कें बूझल छलै ताहि सँ ई तऽ स्पष्टे छलै जे ओ जगह धरती पर कतहु छैके नहि जे कियो पनिया जहाज कि हवाइ जहाज सँ ओहि देश मे पहुँचि सकैत छल।

नवाहक तैयारी शुरू भेल। कलपू पंडित सुशील कें भोर साँझ एक घंटा ओतए अनिवार्य रूपें बैसैक लेल कहलखिन। खर्चा यद्यपि कमलेश देबा लेल तैयार भेलखिन मुदा गौआँ सब विचारलक जे पहिल बेर जखन ओ गोला पोखरि मे उतरल छलै तखन अनेको लोक, चेतन आ धीयापूता ओकरा पकड़बा लेल गेल छल। की जानी ककरा ककरा सँ कोन गलती भेलै आ ककरा सँ ओ देवता रूसल छलखिन। तें नवाह सार्वजनिके राखल गेल, पूरा गाम सँ चंदा लेल गेल। दलित भोजन लेल खर्चा कमलेश देबा लेल तैयारे छलखिन। एहि मे बाँट बखरा करबाक कोनो काज नहि छलै।

जाँच रिपोर्टक प्रभाव

जाहि समय माहीपुर मे वरुण देवताक पूजापाठक चर्चा चलि रहल छल ओहि समय अंतरिक्ष विभागक विशेष नैनो लैब मे सुशीलक बैट मे भेल भूरक विस्तृत जाँच चलि रहल छल। संगहि विशेषज्ञ लोकनि द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टक अध्ययन सेहो कएल जा रहल छल। रिपोर्ट मे विशेष रूपें छओ बिन्दु पर चर्चा चलि रहल छलै।

पहिल बात छलै उड़नछू गोलाक विचित्र आदति जे किछु दिनक लेल एम्हर आबि कए अपन उपस्थिति देखा जाइत छल आ तकर बाद बहुत दिनक लेल गुम भऽ जाइत छल। एखन तक के अनुभव सँ सएह पता चलैत छलै। पहिल बेर जखन लोक माहीपुरक पोखरि मे हेलैत गोला देखने छल तकर प्रायः एक मास बादे कनकटोली गामक बगल के सरपतिया चऽर मे फेर गोला भेटलै। तीन-चारि मासक बाद ओ विचित्र प्रभाव देखेलै जाहि मे रातिए मे रंग-बिरंगी सूर्य उगि गेल छलै आ संचार व्यवस्था अस्तव्यस्त भऽ गेल छलै। एहि समय कियो कोनो गोला कें नहि देखने छल, मात्र अनुमाने छलै जे ई काज ओही गोला सब के हेतै। तकर बाद फेर दू सालक लेल शान्ति, कतहु किछु नहि। लोक जखन घटना कें बिसरि जाइत छल तखने फेर ओ गोला कतहु सँ आबि जाइत छलै। सएह भेलै अनुक संग। आ अनुक खेला खतम भेलाक प्रायः एक मास बाद सुशीलक संग। एहि पैटर्नक कोन अर्थ लगाओल जाए?

दोसर बात छलै गोलाक रूप परिवर्तनक अद्भुत क्षमता। जेना कि अनु विशेषज्ञ लोकनि कें बतौने छल, गोला सब बेर अकासे सँ उतरैत छल, अकास मे ओ चिड़ैक रूप मे उड़ैत रहैत छल। कोनो खास चिड़ैक वर्णन अनु नहि कऽ सकल। एतेक जरूर जे जेना-जेना ओ नीचा अबैत छल ओकर पाँखि सिकुड़ैत जाइत छलै आ छत पर अबैत अबैत ओ ओहिना गोलाक रूप लऽ लैत छल जेना कि पहिले दिन सँ इलाकाक अनेको लोक देखने छल। गोला जरूरति भेला पर क्षणे मे मनुष्यक रूप धऽ लैत छल।

ओकर स्मरण शक्ति सेहो अद्भुते छलै आ कोन तरहें अनुक विभिन्न ड्रेस मे अपना कें बदलि लैत छल सेहो कम आश्चर्यजनक नहि छलै। संगहि प्रश्न ईहो छल जे अनु कें किएक ओ बच्चा रूपी गोला एतेक भारी बुझेलै जे करिया झुम्मरि खेलेबा काल ओकरा बुते गोला कें उठाएल पार नहि लगलै। की एकर कारण ओहि गोलाक बहुत बेसी वयस भेनाइ बूझल जेबाक चाही? सौ-सवा सौ बरखक मनुष्यक ओजन जरूरे बहुत बेसी हेतै जे एकटा दस-एगारह बरखक बच्चा नहिए उठा सकत।

तेसर बात छलै कनकटोली हाइस्कूल मे लगाओल मसीनक तकनीक सम्बन्धी। एखन जे यंत्र लागल छलै ताहि मे खाली माइक्रोवेव आ रेडियो तरंग पकड़बाक सुविधा छलै कारण पृथ्वी पर आ कि एतए सँ पठाओल अंतरिक्ष यान आदि सब मे एही तरंगक उपयोग संचार लेल कएल जाइत छलै। मसीन मे गोलाक उपस्थितिक कोनो संकेत नहि अंकित भेल छलै सेहो निश्चिते आश्चर्यजनक छल। एकर अर्थ तऽ एकेटा जे ई नवागन्तुक जन्तु आ कि मसीन निश्चिते कोनो दोसर रूपें अपन संचार व्यवस्था चला रहल छल।

चारिम बिन्दु छल गोलाक देशक बारे मे सूनल खिस्सा जे ओ मूलतः जल मे रहनिहार जीव छल। एही पृथ्वी पर कोनो महासागर मे डूबल ओकर देश छलै जे एखन तक कोनो नाविक समूह द्वारा खोजल नहि जा सकल छलै। संगहिं ओ देश, यदि सत्ते मे छलै, तऽ ओकरा कोनो उपग्रह सँ फोटो नहि लेल गेल छलै। ओकर अस्तित्वक बारे मे सार्वजनिक रूपें एकदम्मे किछु नहि बूझल छलै। अकास मे ओ जन्तु कि मसीन चिड़ै जकाँ उड़ैत छल आ अपन कोनो अस्थायी अथवा स्थायी निवासस्थल सँ पृथ्वी पर अपना देश आबि जाइत छल।

पाँचम विन्दु छल उड़नछू गोलाक भाषाक बारे मे। ओ सबतरि मैथिलीए बजैत अछि, सेहो कोनो नवसिखुया जकाँ नहि, उच्चारण एहन जेना ओकरा सबहिक मातृभाषाए मैथिली रहल होइ। मैथिली कतए सिखलक, के सिखौलकै? की गोला पहिनहुँ साधारण मनुष्यक रूप मे कोनो मैथिल शिक्षक लग अबैत रहल छल? आ कि ओकर ई बहन्ना छलै? कोन ठेकान ओ अनेक भाषा जनैत होअए आ अन्यत्र जाए ओतुका भाषा बाजि लैत होअए। जे जन्तु अकास मे उड़ि सकैत अछि ओ मिथिला क्षेत्र सँ बान्हल किएक रहत?

अन्त मे सबसँ आश्चर्यचकित करऽ बला बात छलै बैट मे कएल गेल भूर। एहि मे पहिल बात तऽ इएह बुझबा मे नहि आबि रहल छलै जे बैट मे भूर भेलै कोना। यदि ओहि गोला द्वारा फेकल गेंद बहुत तेज गति सँ चलैत रहितै तखन तऽ सम्भव छलै छेद होएब जेना कि बन्दूकक गोली सँ खिड़कीक शीशा मे नीक छेद भऽ जाइत

छै। मुदा गेंद तेज गतिएँ तऽ नहिए चलैत छलै। से रहितै तऽ ओ गेंद अगिला विकेट लग जाकए कोना रुकि जइतै? की ई सम्भव छलै जे बैट मे भूर केलाक बाद अकस्मात गेंदक गति बहुत कम भऽ गेलै? आ कि गेंद मे कोनो सेन्सर लागल छलै जे विकेट देखिते रुकि जाइत छलै?

भूरक सतहक संरचना आरो आश्चर्यजनक छलै। लगैत छलै जेना भूर अति सूक्ष्म लेजर ब्लेड सँ कएल गेल होइ। एकर सतह मात्र किछु परमाणु मोट छलै, माने बूझू पृथ्वी पर विकसित नैनोटेक्नोलॉजी बला वस्तु सँ बहुत बेसी उन्नत। कोन सभ्यता एतेक विकसित भऽ गेल छल जे कोनो गेंद, क्रिकेटक होइ कि अन्य कोनो खेलाक, एतेक चिक्कन बना लैत छल? की गतिशील गेंद सँ लेजर प्रकाश बहराइत छलै?

भूर कें जँचबाक लेल बहुतो तरहक प्रयोग कएल गेल। कार्बन नैनोट्यूब सँ निर्मित एकटा फोंक गेंद, जे बहुत हल्लुक छलै, काठक पातर पट्टी पर जोर सँ फेकल गेल। मामूली प्रभाव बुझेलै। तखन गेंदक आकार घटबैत गेला सँ किछु बेसी प्रभाव बुझेलै। फेर एहने फोंक गेंद ग्राफीन कम्पोजिट सँ बनाकए जाँच कएल गेल। जखन गेंदक आकार बन्दूकक गोली सँ छोट भऽ गेलै तखने काठक पट्टी मे कने भूर भेलै। एहि सँ ओहि क्रिकेट बैट मे भेल भूरक बारे मे किछु तऽ पता चललै किन्तु कोना ओतेक मोटगर बैट मे करीब दू इंच व्यासक भूर सम्भव भेलै से रहस्ये बनल रहलै।

सेना मुख्यालय मे सेहो एहि रिपोर्ट लऽ कए विशेष चिन्ता पसरल छलै। यदि सत्ते मे गेंद सँ लेजर प्रकाश बहराइत छलै तऽ सेनाक लेल एहि तरहक गेंद सद्यः खतराक घंटी बजा रहल छलै। शत्रु कें किछु नहि करए पड़तै, बस एहने गेंद फेकि सबटा तोपक बैरल कें निष्क्रिय कऽ देत, खेला खतम। ओतबे नहि, ओकरा सब लेल सेनाक कोनो लेजर उपकरण कें निष्क्रिय कऽ देब मामूली बात छलै। संचार व्यवस्था कें अस्तव्यस्त कऽ देबाक सामर्थ्य तऽ एकरा सब कें छलैके, तकर झाँकी तऽ एक बेर सार्वजनिक रूपें देखाइये देने छल। गुणक एतबे जे ओहि घटनाक पुनरावृत्ति एखन तक देश मे कतहु नहि भेल छलै।

रिपोर्ट कें तैयार केनिहार विशेषज्ञ लोकनि अपन अपन बॉस कें रिपोर्ट दैए नहि देलखिन, अपितु ओकर गम्भीरताक चर्चा सेहो विस्तार सँ केलनि। पहिने दूनू विभागक उच्चस्तरीय मीटिंग भेल। बहुत तरहक चर्चा, सुझाव आदि आएल मुदा ओहि पर अमल कोना हो से विचाराधीने रहल। बात सेना आ अंतरिक्ष विभाग सँ उठि कए प्रधानमंत्री कार्यालय तक पहुँचि गेल। तकर बाद एहि मे भूगर्भशास्त्रक वैज्ञानिक, जे समुद्रक अध्ययन मे सामिल छलाह, तथा खगोलशास्त्रक वैज्ञानिक, जे पराग्रही जीवनक अध्ययन मे लागल छलाह, आ खुफिया विभागक उच्च अधिकारी

लोकनि सेहो बजाओल गेलाह। खिस्सा जएह सूनए तकरे आश्चर्य लगै।

ई सभ्यता कोना विकसित भेल? ओ सब एतेक रास वैज्ञानिक आविष्कार स्वतंत्र रूपें केने छल आ कि धरती पर कोनो देशक सम्पर्क मे पहिनहि सँ छल? आ कि गुप्त रूपें ओ सब आन ठाम सेहो जाइत अबैत रहल छल आ एतुका वैज्ञानिक आविष्कारक जानकारी लैत ओकरा आर विकसित करैत गेल। ईहो तऽ सम्भव छलै जे जहिना ओ सब मिथिला मे आबि मैथिली बाजि लैत छल तहिना अमेरिका मे जाए अंग्रेजी बाजि लैत होए आ कि जापान मे जापानी भाषा। एखन तक कोनो देशक वैज्ञानिक द्वारा कोनो तरहक जासूसीक सूचना कतहु नहि देल गेल छलै। अथवा सम्भव जे ओहि देशक सरकार सूचना कें नुका रखने होअए। कमीटीक सदस्य लोकनि जतेक एहि सब विन्दु पर विचार करैत जाथि, समस्या बेसी ओझराएले जाइत छलनि। खुफिया विभागक सदस्य तऽ सबसँ बेसी चिन्तित छलाह।

की ई गोला कोनो देश द्वारा विकसित कएल गेल छल आ जँचबाक लेल एतए पठाओल जा रहल छल अथवा एतुका लोक कें बुड़िबक बनबै लेल पठाओल जा रहल छल? एहि इलाका मे ने कोनो तेहन पैघ मिलिटरी छावनी छलै ने कतहु निकट मे समुद्र जे नौसेनाक अड्डा रहितै। तखन एहन अजगुत एम्हरे किएक?

प्रश्न छलै जे बात सार्वजनिक कएल जाए कि नहि? यदि कोनो आन देश कें पता लागि जेतै तऽ ओ एहि सभ्यताक खोज केनाइ शुरू कऽ सकैत छल आ चुपेचाप पता लगा कए ओकरा संग सम्पर्को बढ़ा सकैत छल। एतेक तऽ निश्चित छलै जे ई सभ्यता टेक्नोलॉजी मे बहुत बेसी आगू बढ़ि गेल छल आ ओकरा सबकें विपुल खनिज सम्पदाक स्रोत सेहो बूझल छलै। समुद्र अपनहि रत्नगर्भा अछि, ओकरा पेट मे अपार खनिज सम्पदा नुकाएल छै से बात तऽ पृथ्वी पर सब देश कें बूझल छलै मुदा ओकरा कोना खनन कएल जाए तकर लूरि ज्ञात रूप सँ कोनो देश विकसित नहि केने छल। ईहो सम्भव छलै जे पता लागि गेला पर कोनो देश ओहि जलजीवी सभ्यता कें नष्ट कऽ कए पूरा देश पर अधिकार जमा लेबाक चेष्टा करए जेना कि उपनिवेश बसौनिहार यूरोपक लोक सब अमेरिका, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया आदि मे आदिम जनजातिक नरसंहारक रूप मे केलक जाहि सँ उन्नत माया सभ्यता पर्यन्त विलुप्ते भऽ गेलै।

पहिल मीटिंग मे कोनो निर्णय नहि भेल, सब सदस्य लोकनि अपना अपना रूपें स्वतंत्र चिन्तन लेल छोड़ि देल गेलाह। एक मासक समय देल गेलनि। आशा छलै जे सुशीलक संग अन्तिम भेंट सँ एहि एक मासक अवधि पुरला तक प्रायः डेढ़ मास बीत गेल रहतै आ यदि गोला फेर ककरो सँ सम्पर्क केलक तऽ किछु पता चलि

सकैत छलै। जिला प्रशासन कें एहि सम्बन्ध मे पूर्ण सतर्क रहबा लेल कहि देल गेल। ओहो लोकनि एहि इलाका मे सूचना प्रसारित करबा देलखिन जे कतहु कोनो रूप मे यदि उड़नछू गोला कियो देखथि तऽ तुरत्ते स्थानीय प्रशासन कें सूचना देथि।

मुदा एहि एक मास मे विशेषज्ञ लोकनिक सोच मे किछु प्रगति नहि भेल। आ ने गोला दोसर बेर अपन उपस्थिति देखेबाक खेला खेलेलक। कनकटोली इलाका मे सब किछु शान्त, खाली माहीपुर मे वरुण देवताक नवाह कीर्तन टा भेल छल।

एक मासक बाद फेर मीटिंग बजाओल गेल जाहि मे प्रधानमंत्री स्वयं उपस्थित छलाह। अंतरिक्ष विभागक सचिव महोदयक कहब छलनि जे ई उड़नछू गोला नामक जीव कि मसीन जाहि कोनो सभ्यता सँ अबैत अछि ओ सब हमरा सब सँ एकदम अलग संचार तकनीकक व्यवहार करैत अछि तें हमर मसीन, जे मात्र रेडियो आ माइक्रोवेव तरंग कें पकड़बाक क्षमता रखैत छल, कोनो तरहक संकेत नहि बता रहल अछि। सम्भव छै जे ओ सभ्यता पराबेंगनी, एक्स-रे आ कि गामा-रे सदृश उच्च आवृत्ति बला तरंग द्वारा संचार इंजीनियरिंगक विकास कऽ लेलक अछि। तें कनकटोली हाइ स्कूल पर लगाओल यंत्र कें बदलि कए पराग्रही जीवनक खोज लेल हुनका विभाग द्वारा जे विशेष यंत्र विकसित कएल गेल अछि, सएह लगाओल जाए। एहि मे विद्युतचुम्बकीय वर्णपटक समस्त तरंग - रेडियो सँ गामा-किरण तक - कें पकड़बाक क्षमता छै। एकर प्रभाव क्षेत्र दू सौ किलोमीटरक घेरा मे रहैत छलै जे कि मिथिलाक पैघ भूभाग कें जरूरे छापि लेतै।

प्रश्न उठलै जे कनकटोली हाइस्कूल अथवा आसपासक इलाका मे एतेक गोपनीय आ महग यंत्र कोना लगाओल जाए? अंतरिक्ष मे शत्रु देशक जासूस अथवा कोनो अन्य प्रकारक विनासकारी तत्वक आशंका नहि रहैत छै.किन्तु धरती पर एहि तरहक यंत्र लगौला सँ सबहिक नजरि ओमहर जेबे करतै। सेना आ खुफिया विभाग दूनू सँ राय विचार लेल गेल। अन्त मे निर्णय भेल जे कनकटोलीक बगल बला सरपतिया चऽर मे जल मे पाँच सौ एकड़ जमीन अधिगृहीत कएल जाएत आ ओहि भूखंड कें सेनाक अंग घोषित कएल जाएत। सेनाक पुलिस एकर पहरा करत। यंत्र सँ सदिखन मोनिटरिंग तरंग बहराइत रहतै जे सेना मुख्यालय द्वारा नियंत्रित होइत रहत। यदि उड़नछू गोला बला नव सभ्यताक कोनो सदस्ये एहि यंत्र कें किछु नोकसान पहुँचेबाक प्रयास करत तैयो पकड़ा जेबे करत।

खुफिया विभाग कें निर्देश देल गेल जे पूरा देश मे मैथिलीभाषी पर नजरि राखथि जे कतहु कियो अपरिचित अथवा संदेहात्मक मनुष्य कें भाषाक शिक्षा तऽ नहि दए रहल छथि। अथवा पहिनहुँ एहन यदि केने होथि तऽ हुनकर पता लगाओल जाए।

एहि लेल विदेश विभाग द्वारा नेपाल सरकार सँ सेहो सहयोग माँगल गेल। एहि मे पैघ समस्या छलै–कोनो शिक्षक बुझने कोना हेथिन जे हुनक शिष्य साधारण मनुष्य नहि भऽ कए अन्य सभ्यताक विशिष्ट व्यक्ति छलाह। जेना कि अनु बतौने छल, उड़नछू गोला कोनो मनुष्यक हूबहू डुप्लिकेट बनि जेबाक क्षमता रखैत छल। जहिना तकनीकी दृष्टिएँ उड़नछू गोला पकड़ि मे नहि आबि रहल छल तहिना कोनो शिक्षक कें अपना सामने आएल साधारण मनुष्य रूप मे ओकरा चिन्हब ओतबे कठिन छलै। तखन कोन शिक्षक कें पकड़ल जाएत?

निर्णयक अनुसार काज शुरू कऽ देल गेल। सेना कें जल मे प्लैटफार्म बना कए मसीन लगेबाक निर्देश देल गेल। स्थानीय प्रशासन द्वारा समस्त मिथिला क्षेत्रक नागरिक कें एलर्ट कऽ देल गेल जे कियो कोनो रूप मे उड़नछू गोला सदृश वस्तु आकाश अथवा जल मे देखथि तऽ स्थानीय प्रशासन कें तत्काल सूचित करथि। नहि केला सँ यदि बाद मे पता चलतै तखन ओहि व्यक्ति कें शत्रु देशक हितैषी बूझल जेतनि आ ओही हिसाबें हुनका उपर देशद्रोहक मोकदमा चलाओल जेतनि।

अनुक तैयारी

गाम मे वरुण देवताक पूजा पाठ लेल तैयारी चलि रहल छलै मुदा अनु कें एहि सबसँ कोनो सरोकार नहि छलै। ओकर मम्मी-पापा सेहो एहि आयोजन सँ अलगे रहलाह। हुनका बुझा गेल छलनि जे ई सब मात्र आडम्बर छोड़ि आर किछु नहि छिऐ। उड़नछू गोलाक बारे मे जे किछु ओ सब अनु सँ सुनलनि ताहि सँ ओकर देवता आदि हेबाक कोनो सम्भावना नहि छलै।

अनु कें बुझा रहल छलै जे मम्मी-पापा ओकरा पर नजरि रखैत छथिन। आब यदि ओ छत पर एकसरे जाइत छल तऽ कोनो ने कोनो बहन्ने कनिए काल मे मम्मी पहुँचि जाइत छलै। पापा सेहो बेसी काल ओकरा पूछि दैत छलखिन जे दिन भरि मे ओ की सब केलक? आब अनु की करत? ओकर इच्छा छलै कहुना एक बेर ओहि उड़नछू गोला कें बजाएब आ एतए भेल जाँच आदिक जानकारी देब। ओ नहि जनैत छल जे गोला कएकटा छै, जे गोला ओकरा सँ दोस्ती केलकै सएह सुशीलक संग खेलेबा लेल गेल छलै कि अन्य। ओ तऽ गोला कें नामो नहि पुछलकै। की सत्ते ओकरा सबहिक कोनो नाम होइत हेतै। जखन रूप छइहे नहि तखन तऽ नाम भेनहि की? चिन्हबाक आ एक गोला कें दोसर सँ अलग बुझबाक कोनो साधन नहि छलै।

अनु कें पछिला बेर गोला बता देने छलै जे छत पर लाल, पीयर आ हरियर रंगक गुड्डी उड़ा कए संकेत देला सँ ओ बूझि जेतै आ आबि जाएत। से तऽ खाली ओकर देश देखबा लेल। यदि ओकरा ओहिना गप करबा लेल बजाओल जाए तऽ से कोना सम्भव छै? गुड्डी कतए सँ उड़ाओत? कतेक काल उड़ाओत? ईहो तऽ ठीक सँ नहि बूझल छलै। गुड्डी उड़ाएब राति मे सम्भव नहि छलै। आ दिन मे सब जेना ओकरा पर नजरि रखनहि रहैत छलै—स्कूल सँ घर तक।

अपन योजना मे एखनहु अनु ककरो सामिल नहि करए चाहैत छल। सएह झमेला छलै। जे किछु ओ करैत सबटा एकसरे करए पड़ितै।

ओ किछु दिन ओहिना टिफिन टाइम मे अकास दिस देखैत रहल जे कोनो विशिष्ट चिड़े उड़ैत देखि पड़ै तऽ किछु आशा जगतै मुदा कोनो सफलता नहि भेटलै। एक दिनक बात रहितै तऽ कोनो बहन्ने स्कूल नहि जा कए छत पर सँ गुड्डी उड़ा लैत मुदा ओ गोला तऽ कहने रहै तीन दिन तक उड़बैत रहै लेल। तीन दिन लेल कोन बहन्ना बनाओत? लगले ओकरा पकड़ने मम्मी-पापा डाक्टर लग लइए जइतथिन आ सब बहन्ना पकड़ा जइतै।

अन्त मे ओ निश्चय केलक जे स्कूलेक समय मे ट्वायलेटक पाछू सँ गुड्डी उड़ा देल करत। आ तीन दिनक बाद ओतहि प्रतीक्षा करत। ई सम्भव छलै कारण क्लास सँ ट्वायलेटक लेल ओ समय निकालि बहराइये सकैत छल। ट्वायलेटक पाछू कियो ओकरा देखतै तकर चान्स कमे छलै, ओहुना ओ सतर्क रहबे करत।

ओही राति चुपेचाप ओ तीनू रंगक तीन-तीनटा गुड्डी बनेलक, स्कूल बैग मे रखबा मे कोनो असुविधा नहि भेलै। अगिले दिन ओ गुड्डी उड़ाएब शुरू कऽ देलक। गुड्डी उड़ि गेलाक बाद ओ अकास दिस ताकऽ लागए। पहिल दिन किछु नहि नजरि एलै। दोसरो दिन किछु नहि नजरि एलै। तेसर दिन सेहो तहिना। कोनो संकेत नहि जे कियो ओकरा गुड्डी उड़बैत देखबो केलकै। ओ निराश भऽ गेल। अपन मूर्खता पर ओकरा तामस उठए लगलै। जखन ओ गोला अकास मे उड़ैत रहितै तखन ने कतहु सँ ओ गुड्डी कें देखितै। दोसर बात जे कोन ठेकान अकास मे कतेक लोक कतेक ठाम सँ गुड्डी उड़ा रहल हेतै। एहि बीच ओकर गुड्डी विशेष रूप सँ कियो कोना चिन्हतै? ओकरा गुड्डी पर कोनो नाम तऽ नहि लीखल छलै, बस रंगक क्रम विशिष्ट छलै ततबे टा। इएह सब सोचैत उदास भेल कने काल अनु ओतए ठाढ़ रहल फेर विदा भेल क्लास कें। तखने लगलै जेना पाछू सँ कान मे कियो कनफुसकी केलकै— "अनु, हमरा संकेत भेटि गेल, हम कालि आबि जेबौ।"

अनु चौंकल आ पाछू घूमल मुदा कतहु किछु नहि छलै। ने गोला ने कोनो चिड़े, तखन ई आवाज कतए सँ एलै? आब ओतए ओ कतेक काल ठाढ़ रहैत? खुसी आ डर दूनूक संग अनु क्लास चल गेल।

भरि राति ओकरा निन्न नहि भेलै। ओ सोचैत रहल कालि यदि गोला प्रकट हेतै तऽ की करत? की ओकरा संग चल जाएत? कोना सम्भव हेतै? ओ कोना गोलाक रूप मे बदलि जाएत? की एखन तक भेल सब बात कोनो ठक अथवा जासूसी संस्थाक चलाकी नहि छिऐ? की ओ गोला कें पछिला सब बात बता कए सावधान करैत विदा कऽ देत? किन्तु ओकरा बुझले की छलै? एतबे जे हरेक स्तर पर सरकार ओकरा सब कें ताकि रहल छै। ओकरा ईहो बूझल नहि छै जे कनकटोली हाइस्कूल

मे लगाओल मसीन की छिऐ, किएक बेर-बेर ओही कें खोलल आ जाँचल जाइत छै। ओकरा बुझने गोला अपन बचाव करबा मे सक्षम अछि तें ने एखन तक पकड़ाएल नहि।

यदि गोला ओकरा अपन देश देखेबाक जिद करै तखन की करत? यदि ओ एक घंटा मे घुरि कए नहि आबि सकल तखन की हेतै? ओकरा कोनो अनुमान नहि छलै एहि यात्राक बारे मे। ने ई ट्रेन, हवाइ जहाज, नाओ, पनिया जहाज आदिक यात्रा छलै जे कतहु ककरो अनुभव लीखल रहितै। इंटरनेटो पर एकरा ताकब सम्भव नहिए से ओकरा पहिनहि सँ बूझल छलै। गोला ओकरा आश्वस्त केने छलै जे दसे मिनट मे ओकर देश पहुँचल जा सकैत छलै। यदि से बात सत्य तखन जाएब आएब भेल बीस मिनटक बात, आधा धंटा मे जएह किछु ओ देखि सकत से बहुत भेलै, पहिल अनुभव लेल। सबसँ महत्वपूर्ण छलै रूप परिवर्तन आ यात्रा।

ओ कछमछ करैत राति बितौलक। आने दिन जकाँ स्कूल ड्रेस पहिरि स्कूल बैग लटकबैत ओ विदा भेल। मुदा आइ ओ बहुत अन्यमनस्क भावें जा रहल छल। संगी सब टोकबो केलकै मुदा मथदुक्खीक बहन्ना बना ओकरा सब सँ पिंड छोड़ौलक।

स्कूल मे आइ ओकर मनःस्थिति विचित्र छलै। ओ अपना कें जेना कोनो जाल मे फँसल बूझि रहल छल, अपने बूनल जाल मे। कोन काज छलै गुड्डी उड़बैक आ गोला कें बजबैक? ओकरा ईहो खियाल नहि एलै जे स्कूलक कियो लोक आ कि सरकारेक कियो जासूस ओकरा पर नजरि रखने हेतै आ असली समय मे जखन ओ गोलाक संग रहत तखने ओ दूनू कें पकड़ि लेतै। गोला नहियो पकड़ाइ, ओ तऽ पकड़ाइये जाएत। कतए भागत ओ? एहि खियाल पर ओ बहुत चिन्तित भऽ गेल। कखनहु सोचए जे छोड़ि दै ई सब झंझट, गोला औतै, ओकरा नहि देखतै तऽ अपने घुरि जेतै। यदि ओ पकड़ाइयो गेल तऽ ओ जानए, एहि मे अनु की कऽ सकैत छलै? कहुना छलै तऽ ओ बाहरक जीव छलै। ओकरा सँ अपना देश कें खतरा सेहो सम्भव छलै तखन किएक ओ एहि गोलाक पाछू बेहाल भेल? नीके हेतै जे गोला पकड़ा जाएत आ ओकर रहस्य सँ पर्दा हटतै। तखन ओ सब कें बता सकत जे ओकरे प्रयासें गोला फेर एतए उतरल छल। ओकर कतेक प्रशंसा हेतै?

अनुक दोसर मोन एकरा नकारि दै। रहस्य रोमांच भरल यात्रा आ ताहू सँ महत्वपूर्ण बात जे ओ गोला सँ दोस्ती केने छल। की ओ विश्वासघाती बनि सकत? की ओकरा पर सँ गोलाक विश्वास ओहिना उठि जेतै जेना सुशील पर सँ भेल छलै? तखन ओ पराग्रही आ कि कोनो विचित्र जीव एहि धरती आ कि मिथिलाक बारे मे की सोचतै? इएह ने एतए सब उचक्का, दुष्ट, बेइमान छै, ककरो पर विश्वास नहि

कएल जा सकैत छै। दोस्ती भाव सँ एहि धरती कें तऽ ओहि अजनवी जन्तुक प्रभाव आ कि आक्रमण सँ बचाओलो जा सकैत छलै मुदा दुश्मनी भाव सँ तऽ निश्चिते नहि। तखन ओकर शक्तिक सेहो कोनो अनुमान ककरो एखन तक नहि भेल छलै। किछुए मिनट लेल जखन संचार व्यवस्था अस्तव्यस्त भऽ गेल छलै तखन कोना सबतरि बेचैनी पसरि गेल छलै?

मात्र एगारह बरखक ई पाचम किलास मे पढ़निहार लड़की अनु चेतन जकाँ कतेक बात सोचि रहल छल जेना ओ देशक प्रधानमंत्री होए आ कि कोनो पैघ ओहदा बला राजनयिक। जेना पूरा देश आ कि सम्पूर्ण पृथ्वीक प्रतिष्ठाक रक्षा करब ओकरे उत्तरदायित्व बनि गेल छलै।

अनु सोचैत रहल, जतेक सोचैत जाए ततबे ओकर बात ओझराएल जाइ। की करत ओ? समय नजदीक आबि रहल छलै। ओकरा किछु निर्णय लेबहि पड़तै, एहि पार कि ओहि पार। अन्त मे ओ निर्णय लेलक। भविष्यक चिन्ता छोड़ि ओ गोलाक संग दोस्ती बनौने रहत।

एहन अवसर ककरो नहि भेटल छलै। ओ मूर्खे होएत जे एहि अवसर कें छोड़ि देत। ओ मोने-मोन तैयार भऽ कए निश्चित समय पर ट्वायलेटक पाछू ठाढ़ भऽ गेल। आइ ओकरा गुड्डी नहि उड़ेबाक छलै।

लगले ओकरा आवाज सुनेलै—"अनु, तैयार छें?" गोला जेना अदृश्य भेल होइ, जहिना कालि छलै। ओ पूछि देलकै—"प्रकट किएक नहि होइत छें?" गोला उत्तर देलकै—"ई जगह भीड़-भाड़ बला छै, स्कूलक अहाता, तोहर छत एकान्त जगह छलौ। तों अपने घरक छत पर किएक ने बजेलें?"

अनु कें ई प्रश्न नीके बुझेलै। ओ उनटे पूछि बैसल—"सुशील नामक लड़का कें तोंही क्रिकेट खेला सिखबए गेल रही की?"

"नहि, हमर संगी छलै। ओ लड़का तऽ बेबकूफ बहराएल। बैट लऽ कए भागए चाहैत छल।"

"तोरा से बूझल छौ?"

"हँ, हम सब अपना मे गप करैत छी ने। हमर तोहर दोस्ती सेहो हमर देश मे सब कें बूझल छै।"

"सुशील अपन खिस्सा पूरा स्कूल मे सुनेलकै।"

"अच्छा, से तऽ नीक बात।"

"किन्तु एतुका समाज आ सरकार एकरा नीक बात नहि बूझि सकल। तकर बाद बहुत रास खोजबीन शुरू भेलै। आ हमरा सँ एकटा गलती सेहो भऽ गेल।"

"कोन गलती?"

"हम तोरा सँ बिना पुछने स्कूलक हेडमास्टर आ जाँच टीम के अपना बीच भेल पूरा दू महीनाक सब खेला आदिक खिस्सा सुना देलियै, संगहि ईहो बता देलियै जे तोहर देश कतए छौ।"

"अरे, ई तऽ आरो नीक बात, जे हम चाहैत रही सएह भेलै ने। हम तऽ तोरा कहने छलियौ जे टूर करबा लेल तों ककरो संग लऽ सकैत छें, अपन मम्मी-पापा कें सेहो संग कऽ सकैत छें। हमरा दिश सँ कोनो हर्ज नहि।"

एहि पर अनु ओकरा सरकारी अधिकारी लोकनि द्वारा भेल जाँचक सब जानकारी देलकै। कनकटोली हाइ स्कूल मे लागल यंत्र कें कतेक बेर खोलि कए देखल गेलै। सुशीलक बैट, जाहि मे छेद भऽ गेल छलै, तकरा जँचबाक हेतु अंतरिक्ष विभागक मुख्यालय पठा देल गेलै। तकर बाद की भेलै से ओकरा नहि बूझल छलै।

ओकर मम्मी तऽ पहिनहि ओकरा गोलाक संग छत पर देखि लेने छलै। गोला कहलकै–"हमरा बूझल अछि, बहुत पहिने एक दिन तोहर मम्मी छत पर अबैत-अबैत रुकि गेलौ, हम तोरा शतरंज सिखबै छलियौ। तकर बाद ओ प्रायः छत पर चुप्पे-चाप आबि जाइत छलखुन। तों तऽ छत के केबाड़क अढ़ मे किछु देखैत नहि छलही किन्तु हमरा सब किछु देखाइत छल। हम तोहर ध्यान भंग नहि करए चाहैत छलियौ तें कहबो नहि केलियौ।"

अनु कें ई जानि बड़ आश्चर्य लगलै जे गोला सेहो सब बात बुझैत छल। ओ बता देलकै जे स्कूलक घटनाक बाद हेडमास्टर साहेबक कहला पर ओकर मम्मी-पापा ओकरा पर नजरि राखए लगलखिन।

"कोनो बात नहि, आब कह एखन चलबा लेल तैयार छें की नहि?"

अनु कने कालक लेल फेर दुविधा मे पड़ि गेल। फेर किछु सोचैत बाजल–"आइ नहि, कालि टिफिन टाइम सँ ठीक पाँच मिनट पहिने हम एतहि भेटि जेबौ एकदम तैयार।"

"एकसरे जेमे कि दोसरो-तेसरो कियो संग रहतौ?"

"पहिने हम एकसरे जाए चाहैत छी आ पहिल बेर केवल रस्ता टा देखऽ चाहैत छी जे सत्ते जेबा मे दसे मिनट लगैत छै की बेसी। ओतए हम दस-पन्द्रह मिनट सँ बेसी नहि रुकबौ, लगले घुरि एबौ जे टिफिनक बाद किलास शुरू हेबाक समय पहुँचि जाइ। यदि कोनो खतरा हेतै तऽ हम एकसरे ने मरब, आन कियो एहि लेल किएक प्राण गमाओत?"

एहि बात पर गोला कें हँसी छूटि गेलै। अनु पहिल बेर ओकर एहन हँसी

सुनलक। ओकरा लाज भेलै जे किएक ई बात बाजि देलक। गोला ओकरा पूर्ण रूपें आश्वस्त करैत कहलकै–"तों कोनो चिन्ता नहि कर, निश्चित रूप सँ तोरा हम पैंतीस मिनट मे एतए पहुँचा देबौ। हमर देशकोस बेसी तऽ नहिए देखि सकबही तैयो किछु अन्दाज तऽ लागिए जेतौ। जहिना तोहर इच्छा होउ तहिना कर। हम तऽ तोहर दोस्त भेल छी।"

अन्तिम वाक्य मे गोला अनु कें दोस्तीक बात मोन पाड़ैत बिला गेल। अनुक मोन आब बहुत प्रसन्न छलै। सबटा चिन्ता जेना मेटा गेल होइ। पछिला चौबीस घंटा मे कतेक तर्क वितर्कक चक्कर मे ओ पड़ि गेल छल जे निन्न पर्यन्त नहि भेल छलै।

स्कूल सँ घुमबा काल ओ बहुत प्रसन्न छल। संगी सब पुछलकै तऽ कहलकै जे ओकर मथदुक्खी छूटि गेलै। ओकरा कियो एखन तक नहि पुछने छलै जे किलास सँ कखनहु कए ओ कतए चल जाइत छल। नीके भेलै जे लोक ध्यान नहि देने छलै।

घरो पर ओकरा लगै जे पएर मे पाँखि लागि गेल होइ। ओ उड़ि जाए चाहैत छल। कखनो कए सोचए बेकारे अपन यात्रा एक दिनक लेल टारि देलक। फेर सोचए एखनहु ओकरा खतराक कोनो अन्दाज नहिए छलै। कोना जाएत, कतए जाएत आ सबसँ पैघ बात जे कोना सकुशल घुरि आओत, सब किछु रहस्ये छलै। जे होउ, आब ओ सब तरहक खतरा उठेबा लेल तैयार छल। सकुशल घुरि जाएत तऽ लोक कें बहुत किछु कहबा लेल रहतैक, नहि घूरत तऽ ओकर अन्ते, तखन तऽ खिस्से खतम। बहुत रास बच्चा बाढ़ि मे, सड़क दुर्घटना मे, अथवा कोनो बिमारी सँ मरि जाइत छै तैयो ओकर मम्मी-पापा जीविते रहैत छथिन, तहिना ओकरो मम्मी-पापा रहि लेथिन। ओ तऽ एकटा खोज करबा लेल प्राण देत।

आइ ओकरा गाढ़ निन्न भेलै आ खूब संपना देखलक। सपना मे ओ गोला संग उड़ि रहल छल। अंतरिक्ष यात्री सबहक बारे मे जे किछु खिस्सा सब पढ़ने छल आ टीभी मे देखने छल तहिना ओकरा उपर बहुत उपर सँ धरती देखा रहल छलै। गोल हरियर धरती, पहिने तऽ ठाम-ठीम बिजली जरैत मुदा बेसी ऊँच गेला पर ओ प्रकाश क्षीण होइत बिला गेलै। अनु दोसर दुनिया मे प्रवेश कऽ गेल छल। सब दुनिया अपना मे विचित्र, कोनो ठाम पानिक बदला कोनो दोसरे तरहक पदार्थ, लोक ओएह पीबैत, कोनो अन्य दुनिया मे हवाक अभाव। कतहु लोकक नाक बढ़ल तऽ कतहु आँखि पसरल। कोनो ठाम माथ पर एन्टेना जकाँ तार लागल, आदि। ओहि दुनिया सब मे अनु बौआइत रहल, नव-नव लोक सँ, जन्तु सँ भेंट करैत रहल, सब सँ मैथिलीए मे गप करैत रहल। सपना मे ओकरा एको क्षण लेल ई खियाल नहि एलै जे ओ

कतेक दूर अछि आ कोना एतेक दूरक लोक मैथिली बाजि लैत छै।

भोर भेने ओ जल्दी-जल्दी स्कूल लेल तैयार भेल। आब ओकरा प्रतीक्षाक समय पहाड़ सन लगैत छलै। रस्ता मे अपन संगी सुमिता कें पकड़ि कए सपना बला बात सब सुनाबए लागल–"बुझलही सुमि, पछिला राति हम बेजोड़ सपना देखलियै।"

सुमि चुटकी लेलकै–"की कोनो राजकुमार भेटि गेलौ?"

"धुर जो, तोरा अंटशंटक मजाक फुड़ाइ छौ, हम अंतरिक्ष यात्रा पर गेल छलियै। उपर बहुत उपर सँ पहिल बेर धरती देखलियै। ओह कतेक सुन्दर दृश्य छलै ! हरियर गोल धरती, कतहु कतहु बिजली जरैत, फेर सबटा बिला गेलै, हम दोसर दुनिया मे पहुँचि गेलहुँ।"

"अच्छा, उड़लही कोना?"

"ओही उड़नछू गोलाक संग, ओएह हमर गाइड छल।"

"उड़नछू गोला सँ तोरा एखनहु भेंट होइते छौ?"

एहि प्रश्न पर अनु कने सकपका गेल। ओकरा शंका भेलै जेना कालि स्कूल मे भेल भेंट कियो देखैत छलै। ओ सम्हरल आ एतबे कहलकै–"अरे नहि, कहलियौ ने जे सपना छलै।" एतबा पर सुमिक संग ओकर बात खतम भऽ गेलै। स्कूलो आबिए गेल छलै।

आब अनु कें खियाल एलै जे कालि हड़बड़ी मे ओ गोला सँ पुछनाइ बिसरिये गेल जे संग मे कैमरा लऽ जा सकैत अछि की नहि। एतेक दूर ओ जाएत तऽ लोक कें की सबूत देखेतै? एक बेर सोचलक जे मम्मीक फोन माँगि लिअए मुदा कोन बहन्ना बनेतै? ओहुना स्कूल मे मोबाइल लऽ जाएब वर्जित छलै। ओ विचार त्यागि देलक।

किलास मे जेना तेना घंटी पर घंटी बितौलक, ओकर मोन तऽ टाँगल छलै कतहु अन्तए। टिफिनक समय सँ ठीक छओ मिनट पहिने ओ उठि कए बाथरूम विदा भेल। संयोग नीक छलै, एखन सब बच्चा किलासे मे छलै आ ट्वायलेटक आसपासक इलाका खाली छलै।

ट्वायलेटक पाछू मे ठाढ़ भेले छल कि गोला हाजिर भऽ गेलै। अबिते देरी ओ पूछि बैसल–"ओतए किछु फोटो लेल जा सकतै की? हमरा लग कैमरा नहि अछि मुदा लोक कें देखबै लेल किछु सबूत तऽ चाही।"

"ठीक छै, हम जोगार लगा देबौ, आब जल्दी कर, हमर हाथ पकड़ि ले।"

गोला मे सँ एकटा चुट्टा जकाँ हाथ बहरेलै आ ओकरा पकड़िते अनु बिला गेल।

जलक्रीड़ा

विजयादशमीक समय आबि गेल छलै। पूजाक उल्लासक अतिरिक्त एहि इलाका मे कनकटोली, माहीपुर, तरंगिया, शिरीपट्टी आदि करीब आठ नौ गामक बीच सब उमेरक लोकक लेल सरपतिया चऽर मे विशाल झीलक बीच प्रति वर्ष जलक्रीड़ाक आयोजन भेनाइ महत्वपूर्ण अंग छलै। झील एहि इलाकाक सांस्कृतिक केन्द्र छलै।

करीब दस-बारह कोसक घेरा (एखनुक हिसाबें करीब सत्तरि वर्ग किलोमीटर) मे पसरल सरपतिया चऽर आ हजारो एकड़क ओकर विशाल झील मे सब गामक अपन अपन तैराकी दलक प्रशिक्षण हेतु घाट बनल छलै आ सालो भरि बच्चा सब कें ट्रेनिंग देले जाइत छलै। कतेको नदी सबहक बीच अवस्थित एहि इलाका मे साल दू-साल पर बाढ़ि अबिते छलै तखन लोक कें नाओ राखब, चलाएब, धार मे हेलब आदि लूरि सीखब जिनगीक आवश्यक अंग भऽ गेल छलै।

दशमीक समय एहि मे विभिन्न खेलाक प्रतियोगिताक आयोजन सँ इलाकाक प्रसिद्धि एतेक भऽ गेल छलै जे गौआँ सबहिक अपन सर सम्बन्धीक अतिरिक्त मधुबनी, जयनगर इलाका सँ पर्यन्त लोक देखबा लेल आबए लागल छलै। इंटरनेट सँ प्रचारक कारण पछिला किछु वर्ष सँ किछु विदेशी पर्यटक सेहो पहुँचि रहल छलाह।

आयोजन दू दिनक होइत छलै। दशमी दिन मूर्ति भसानक प्रतियोगिता मे सब गामक दल भाग लैत छल। प्रत्येक दल झीलक बीच मे जा कए अपन मूर्ति भसबए चाहैत छल। पाँती लगा कए सब विदा होइत छल तेज गतिएँ नाओ कें खेबैत। जे पहिने पहुँचल ओ अपन मूर्ति तखने नहि भसा दैत छल, खाली अपना नाओक चारू कात बीस मीटर जगह सुरक्षित कऽ लैत छल। अगिला दल ओहि बीस मीटर घेराक बाहरे अपन नाओ ठाढ़ करैत छल आ ओहो अपन बीस मीटर घेरा सुरक्षित कऽ लैत छल। तेसर नाओ के विकल्प रहैत छलै जे ओ पहिलक बगल मे बड़का घेराक भीतर बाम दहिन कुम्हरो जाए कि पाछुए मे रहए। एहि तरहें जखन सब नाओ पहुँचि जाइत छलै तखन उपर सँ फोटो लेल जाइत छलै। तखन क्रम सँ मूर्ति कें जल मे

प्रवाह कएल जाइत छलनि–जे नाओ सबसँ बाद मे आएल ओकर मूर्ति पहिने भसैत छलै आ सबसँ अन्त मे बीच बला नाओ के मूर्ति। करीब सौ मीटर के घेरा सँ बाहर दर्शक लोकनिक नाओ लागल रहैत छलै।

दोसर दिन होइत छल तैराकी प्रतियोगिता, जाहि मे दस वर्षक बच्चा सँ लऽ कए साठि वर्षक बूढ़ तक भाग लैत छल, अनेक ग्रुप मे बँटल। यद्यपि एतुका ट्रेनिंग केन्द्र सब मे अत्याधुनिक इन्तजाम नहि छलै तैयो अपन प्रतिभाक बल पर एहि इलाकाक लोक तैराकीक विभिन्न प्रतियोगिता मे राज्य स्तर तक कतेको बेर पहुँचल छल। सब बेर मीटिंग होइ जे नीक प्रशिक्षणक व्यवस्था कएल जाए जाहि सँ ई तैराक सब राष्ट्रीय आर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेहो भाग लऽ सकए मुदा ने सरकारे एहि दिस ध्यान दै आ ने निजी रूपें ककरो बुते एकर जोगार कएल पार लगै। बूढ़ लोकनिक कहब छलनि जे पुरान जमानाक तुलना मे वयसाहु लोक आब प्रतियोगिता मे कम भाग लैत छल। तकर मुख्य कारण शहर दिस पलायन करब छलै। ने लोक गाम मे रहैत छल ने नियमित रूप सँ हेलबाक प्रैक्टिस करैत छल तखन पाहुन जकाँ जे दशमी मे गाम आओत ओ की तैराकी प्रतियोगिता मे भाग लेत?

एकटा विदेशी पर्यटक के सलाह पर पछिला तीन वर्ष सँ तैराकी प्रतियोगिता मे अलग सँ बालिका दल सेहो भाग लैत छलै। लड़की सब मे दस वर्ष सँ सोलह वर्षक एक ग्रुप रहैत छलै, सोलह सँ बीस के दोसर ग्रुप। ओहि सँ बेसी उमेरक महिला वर्गक ग्रुप एखन तक नहि भेल छलै। यद्यपि बुढ़बा बुढ़िया सब एहि सँ खुसी नहि छल किन्तु बदलैत जमाना मे नवतुरिया आगू आएल आ बालिका वर्ग लेल पोशाक के जोगार केलक आ ट्रेनिंग देब शुरू कएल गेल।

प्रतियोगिताक समय कतेको पैघ नाओ मे दर्शक लोकनि सेहो झील मे जल-विहार करैत प्रतियोगिताक आनन्द उठबैत रहैत छलाह। एकर अतिरिक्त किछु छोट-छोट नाओ मे रक्षक दलक सदस्य लोकनि सेहो चक्कर कटैत रहैत छलाह। हुनकर काज छलनि यदि कोनो बच्चा नाओ सँ खसि पड़ल अथवा हेलैत काल डूबए लागल तऽ ओकरा सब कें बचैनाइ।

सरपतिया चऽरक एहि झील मे मोटरवोट चलाएब वर्जित छलै। कछेरक आठो-नवो गाम मिलकए अपना मे ई नियम बनौने छल आ संयम सँ पालन करैत छल।

तैराकी के सीनियर ग्रुप मे माहीपुरक कमलेश, खोखन आदि भाग लेने छलाह आ जूनियर ग्रुप मे सुशील, तरुण, मुखियाजीक सुपुत्र शिवम आदि बच्चा सब। पहिल बेर बालिका वर्ग मे माहीपुर सँ सुशीलक जेठ बहिन करुणा आ अनुक बेस्ट फ्रेंड सुमिता भाग लेने छलै। आन गामक तुलना मे कनटोली कने फॉरवार्ड बूझल जाइत

छल तें बालिका वर्ग मे एहि गामक बेसी प्रतिभागी रहैत छलै।

एकटा पैघ नाओ पर माहीपुर गामक गोट पचासेक लोक बैसल झील मे विहार करैत तैराकी प्रतियोगिताक आनन्द लऽ रहल छल। एहि नाओ पर सुशीलक दादी आ माए सेहो छलखिन। जाबत तैराकी मे माहीपुर गामक प्रतिभागी सब अपन कौशल देखबैत रहल ताबत एहि नाओक लोक प्रतियोगिता स्थलक आसे पास घुरैत रहल आ प्रतिभागी सब के उत्साहवर्धन करैत रहल। एहि गामक लोक सब कें बहुत खुसी भेलै जखन बालिका वर्ग मे पहिल बेर सुमि सन छोट बच्चा 100 मीटर हेलबा मे दोसर स्थान प्राप्त केलक। करुणा 200 मीटर श्रेणी मे भाग लेने छल मुदा पहिल तीन मे नहि आबि सकल। आब सबहक नजरि छलै सुशील पर। ओ पछिला साल 50 मीटर मे पहिल आएल छल किन्तु एहि बेर की फुरेलै, नाम देलकै 400 मीटर बला श्रेणी मे। ओ पछुआइए गेल। दादी खिसिया गेलखिन आ माए कननमुह भऽ गेलखिन। नाओ पर बैसल आन लोक सब हिनका दूनू कें बुझेलक–"खेलकूद मे एना होइते छै, सब बेर एके बच्चा कोना फर्स्ट करैत रहतै? हिम्मत बढ़बइयौ बच्चा के, अगिला बेर फेर आगू निकलि जाएत।"

आब एहि नाओक लोक कें प्रतियोगिता स्थल पर मोन नहि लगैत छलै। ई सब विदा भेल झिलहेर खेलाइ लेल। लोकक मनोरंजन लेल सुशीलक दादी पुरना जमानाक प्रतियोगिताक आ झीलक अन्य प्रसिद्धिक खिस्सा सबकें सुनाबए लगलखिन। सबहक ध्यान छलै दादीक खिस्सा पर, नव तूरक बच्चा सब कें लगै जे पुरना खिस्सा दादी बढ़ा-चढ़ा कए कहि रहल छै। से बूझि कने हँसी मजाक सेहो भऽ जाइ। दादी सुना रहल छलखिन–"ई झील जे तों सब देखै छिही से पुरना जमाना मे बहुत पैघ छलै। काते कात जे पसरल धान खेत सब छै से जेना जेना बाढ़ि मे झील भराइत रहलै तेना तेना काते कात पानि कम होइत रहलै आ धानक खेत बनैत गेलै। हमर ददिया सासु कहै छलखिन एतए झील मे दू किलो के मांगुर माछ होइत छलै।"

खोखनक भतीजी कने अगिलटेंट। चोट्टहिं टिपलक–"तों देखने छिही दू किलो के मांगुर?"

दादी उत्तर देलखिन–"नहि गे दाइ, झूठ किएक कहबौ, कहलियौ ने जे हमर ददिया सासु बजैत छलखिन। जखन एहि झील मे मछमरी होइ तऽ खाली आध मोन सँ पैघ बड़का माछ टा राजा साहेब कें दरभंगा पठाओल जाइनि, छोट माछ सब गामैक लोक सब मे बाँटि देल जाइ।"

चुनियाँ 'मोन' सुनने नहि छलै। ओ पूछि देलकै "मोन की भेलै यै दादी, किलो क्विंटल मे कहियौ ने।"

"गै बाबू, किलो क्विंटल तऽ आब चललैए, स्वतंत्रताक दस वर्ष बाद। पहिने ओजन लेल सेर आ मोन होइ छलै। हमरा घर मे पुरना सेरक बटखरा एखनहु छैके, चल गाम पर देखा देबहु, चालीस सेर के एक मोन होइ छलै।"

खोखनक पत्नी टिपलनि–"दू किलो तऽ नहि, एक किलो के माँगुर तऽ बच्चा मे हमहू अपना नैहर मे देखने छिऐ, ओकरा स्वाद मे एखनुका दवाइ बला माछ कतहु परतर करतै।"

"अच्छा, जखन आध मोन सँ कम ओजन बला माछ गौआँ मे बाँटल जाइत छलै तखन ओ दू किलो के माँगुर तऽ कहियो राजा साहेबक परिवार के जीह पर नहिए गेल हेतनि?"–दोसर बच्चा टिपलक।

"धुर बकलेल, आध मोनक बात तऽ छलै रोहु, भुन्ना सन पैघ माछ लेल, माँगुर लेल तऽ आधे किलो बहुत पैघ बूझल जाइत छलै गे।"

"अच्छा दादी, तों अपने जे देखने छिही से किछु खिस्सा कही" एकटा दोसर बच्चा के अनुरोध भेलै।

"एहि झीलक पैघ-पैघ मखान सेहो नामी छलै। ई तऽ हमरो देखल अछि जे एक मुट्ठी मे तीनटा सँ बेसी मखान नहि अँटैत छलै। आब कहै छियौ खिस्सा हेलनिहारक। एक बेर जट्टू मलाह आ हमरा ससुर मे बाजी लागि गेलनि दस टाका के जे झील मे डुबकी लगा कए के कते दूर जा सकैए। ओहि समय एक टाका मे दस सेर चाउर भेटै छलै। माने एखनुक हिसाबें बूझि ले दस टाका मे करीब एक सौ सेर चाउर कि पाँच हजार टाका। टोल पड़ोसक लोक हमरा ससुर कें बहुत मना केलकनि, मलाह सँ किएक बाजी लगबै छी, ओ सब भरि दिन भरि राति पानिए मे बितबै छै, ओकरा सँ हेलब मे के जीतत? सेहो डुबकी लगबै मे। हमर ससुर ककरो बात नहि मानलखिन। फेर एही झील मे दूनू गोटे उतरैत गेला। देखनिहारक करमान लागि गेलै। हमर ससुर जे डुबलखिन से उगबे नहि करथिन। ओ मलाह करीब आधा कोस पर जा कए उगि गेल। लोक कें चिन्ता भऽ गेलै जे कतहु हमर ससुर पानि मे डुबि तऽ ने गेलखिन। एतेक काल तक कियो पानिक भीतर नहि रहल छलै कहियो। नाओ सँ लोक चारू कात हुनका ताकए लागल। अन्त मे ओ कोस भरि पर झीलक एकटा छोट टापू पर भेटलखिन। मलाह बेचारा भरि पाँज कें हुनकर पएर गछारि लेलक, अपन हारि तऽ मानबे केलक, जिनगी भरि लेल हुनकर चेला बनि गेल। जाबत ओ जिबैत रहल, नित्तो हमरा ओहि ठाम माछ पठबैत रहल।"

नाओ भरिक लोकक ध्यान छलै सुशीलक परदादाक तैराकी प्रतियोगिता जितबाक वर्णन पर, एतेक पैघ-पैघ मखान पर जे मुट्ठी मे तीनेटा अँटैत छलै, दू मोनक भुन्ना आ दू किलोक माँगुर पर। तखनहि कुम्हरो सँ तरंगियाक तीन-चारिटा नवयुवक तेज गति सँ एकटा मोटरवोट मे एलै आ एहि बड़का नाओ मे एतेक जोर सँ ठोकर मारलकै जे दूनू नाओ उनटि गेलै, ककरो सम्हरैक अवसर नहि भेटलै। बेसी तऽ महिला आ बच्चे सब छलै नाओ पर। पूरा झील लोकक चीत्कार मे डूबि गेल। प्रतियोगिता स्थगित भेल आ सब नाओ लऽ कए दौड़ल दुर्घटना-स्थल दिस।

जाबत रक्षक दलक नाओ दुर्घटना स्थल पर पहुँचैत ताबत कतेको लोक डूबऽ लागल छल। कमलेश, सुशील सब पहुँचैत गेलाह आ डुबलाहाक खोज शुरू भेल। अकस्मात अकास सँ बीस-पचीसटा चिड़ै झील पर उतरलै, एकाएक सब उड़नछू गोला मे परिवर्तित भऽ गेलै, सबमे जेना चारि-चारि टा हाथ छलै, क्षणे मे दुइए टा गोला मिल कए बड़का नाओ कें उनटा कए ठाढ़ कऽ देलकै आ लगलै गोटा-गोटी लोक के पानि सँ झीकि नाओ पर फेकऽ। लोक जाबत किछु बूझओ, प्रायः सब व्यक्ति सुरक्षित नाओ पर सवार छल, किछुए कें कने पानि पीबि लेला सँ रद होमए लागल छलै। एमहर चुपेचाप सबटा गोला निपत्ता भऽ गेल।

कमलेशक माए, जे एहि नाओ पर सबहक मनोरंजन करैत छलीह, एखनहु उपर नहि भेल छलखिन। लोक सब चारू कात हेलए, आ डुबकी लगाबए लागल। किन्तु ओ बुढ़ी भेटिए नहि रहल छलखिन। एतबे मे कने दूर सँ एकटा उड़नछू गोला हुनका अपना चुट्टा बला हाथ मे उठेने अबैत देखाएल। सुशील दौड़ल ओहि दिस दादी कें पकड़ै लेल। किन्तु ताबत ओ गोला बुढ़ी कें नाओ पर राखि निपत्ता भऽ गेल।

रक्षक दलक स्वयंसेवक सब ओकरा सबके उपचार मे लागल। चारू कातक लोक कियो नहि बूझि सकल जे अकास मे कतेक चिड़ै उड़ैत छलै जे उड़नछू गोलाक रूप धारण कऽ कए झील पर उतरि गेल आ चोट्टहिं नाओ कें सोझ कऽ कए एक एकटा यात्री के पानि सँ बहार कए प्राण रक्षा केलक। आइ सुशील कें पहिले बेर ओहि उड़नछू गोलाक नीक गुणक अनुभव भेलै। यदि सामने ओ गोला भेटि जइतै जे ओकर दादीक जान बचैने छलै तऽ ओकर पएर पकड़ि लितए ओ। जतेक ओ सोचए, अपन पछिला व्यवहार पर ओतेक बेसी लज्जित होअए। ओ निश्चय केलक जे कोनहुना ओहि गोलाक देश जाएत आ सार्वजनिक रूपें माफी माँगत।

कनकटोली गाम दिसक कछेर मे एक ठाम ठाढ़ भेल कलपू पंडित आँखि मुनने प्रार्थना कऽ रहल छलाह–"धन्य हे वरुण देवता ! अहाँ एहि झील पर जँ आइ अवतरित नहि भेल रहितिऐ तऽ इलाका मे कन्नारोहट पसरल रहैत। आन कियो एकरा मानए अथवा नहि, हमर प्रणाम स्वीकार करबै जरूर आ एहिना इलाकाक रक्षा करैत रहबै।" एतबा बाजि ओ नीचा मे दंड प्रणाम देबए लगलाह। हुनकर ई प्रार्थना कए गोट गौआँ देखलक आ कए गोटे प्रभावित भेल से नहि कहि।

पैंतीस मिनट

गोलाक हाथ पकड़ला पर किछु क्षणक लेल अनु जेना बेहोस भऽ गेल। ओकर अस्तित्व बिला गेलै। ओ एतबे बूझि पौलक जे दूर अकास मे उड़ि रहल अछि। मुदा ओकरा नीचा धरती नहि देखा रहल छलै। फेर कोन रस्तें आ कखन ओ सुरंग मे उतरए लागल सेहो नहि बूझि पौलक। सुरंग मे ओकरा अन्दाज भेलै जे गोला आब चेतन मनुक्खक रूप मे आबि गेल छलै। ओकरा पीठ पर अनु बैसल सुरंग मे बहुत तेजी सँ उतरि रहल छल। कतेक वेग सँ ओ नीचा जा रहल छल तकर कोनो अनुमान ओकरा नहि भऽ पबैत छलै। सुरंग मे आगू आगू प्रकाश होइत जाइत छलै आ पाछू तकला पर घुप अन्हार, अन्दाज जे ओकर संगी, जे आब गोलाक रूप मे नहि छलै, अपना माथ मे ओहने हेडलाइट लगौने होए जेना कि पापा एक बेर बतौने छलखिन जे खानक भीतर लोक जखन उतरैत अछि तऽ माथ मे हेडलाइट लगा लैत अछि।

किछुए कालक बाद ओ दूनू एक समतल जगह पर पहुँचि कए ठाढ़ भऽ गेल। आब ओ दूनू कोनो बहुत तेज चलै बला एस्केलेटर जकाँ मसीन पर सवार भऽ गेल। गोला, जे आब मनुष्यक रूप मे छलै, ओकरा कहलकै जे मात्र पन्द्रह मिनट समय ओकरा लग छै तें जल्दी सँ एहि मसीन पर चलैत किछु इलाका देखि लेत। एतए अनु कें वायु अथवा प्रकाशक कोनो कमी नहि बुझेलै, खाली सूर्यक अभाव जरूर छलै। ओ गोला अर्थात नवका मनुष्य सँ बहुत रास प्रश्न करए चाहैत छल मुदा समयक अभाव कें देखैत ओ मना कऽ देलकै। ओ दूनू ततेक वेग सँ भागल जा रहल छल जे अनु कें अपन संगीक बात सुनबा मे सेहो दिक्कत भऽ रहल छलै।

ओकरा लागि रहल छलै जे कोनो विशाल एक्वेरियम मे आबि गेल होअए मुदा एतए जमीन दोसर तरहक छलै। ओकरा मोन पड़लै पटना के एक्वेरियम जतए एक बेर घूमै लेल गेल रहए। नामेक एक्वेरियम, हँ बच्चा सब कें परिचय भऽ जाइ छै जे एक्वेरियम केहन होइ छै, एतबे। एतए ओ अनन्त तक चारू कात जलक बीच

जेना अपनहि एक्वेरियमक जन्तु बनि गेल होअए। गोला ओकरा बता देलकै जे आब ओ जलमग्न सभ्यताक बीच पहुँचि गेल छल। ई एकटा पुरान टापू छलै जतए लोक जलक भीतरे रहैत छल, खेती बारी करैत छल, पढ़ाइ लिखाइ सँ लऽ कए अनुसंधान तक करैत छल। कतेको उद्योग सेहो एतए छलै। मुदा एकेटा बातक अभाव छलै जे एतए सँ बाहरक संसार मे कोनो व्यापार नहि होइत छलै। एहि सभ्यताक बारे मे धरती पर लोक कें कोनो जानकारी नहि छलै।

जलक भीतर एहि सभ्यता लेल मौसम एके तरहक सब दिन तें मौसम बदलबाक आ कि ओकर आवृत्तिक खियाल रखबाक कोनो काजे नहि। तें दिनक गिनती टा होइत छै, मास, बरख आदिक कोनो अर्थ नहि। दिनक गिनतीओ एक हिसाबें विचित्रे छलै–जहिया ई सभ्यता जलक भीतर आएल ताहि दिन कें मानि लेल गेल शून्य। ओकर पछिला दिन ऋणात्मक संख्या मानल गेल। वर्तमान मे दिनक संख्या करीब एक लाख नब्बे हजार छलै।

अनु कें आश्चर्य लगलै जे जलक भीतर हिसाबें समुद्रक अतल गहराइ मे अवस्थित एहि सभ्यता लेल दिन राति कोना बुझाइत छै आ कि ओकर अर्थे की छै। ओकर संगी असि ओकरा बुझेलकै जे सूर्यक प्रकाश ओकरा सबकें भेटिते छै। समुद्रक उपर ठीक ओही जगह कतेको सूक्ष्म सोलर पैनल लागल छै जे समुद्रक सतह पर देखबा मे सेमार जकाँ लगैत छै। आइ तक धरती पर के कोनो प्राणी कें एकर पता नहि चललै आ चलबो नहि करतै। एही सोलर पैनल सँ नीचा सूर्यक प्रकाशो अबैत छै आ जरुरतिक मोताबिक बिजली सेहो भेटि जाइत छै। तें जखन सूर्यक प्रकाश भेटलै, ओ समय भेल दिन आ जखन नहि भेटलै तखन भेल राति। एहि कारणें दिन राति ओहिना होइत छै जेना कि धरतीक सतह पर।

एतुका लोक कें समुद्री जल पीबाक आदति पड़ि गेल छलै। अनु कने समुद्री जल चिखलक किन्तु ततेक नोनछड़ाह लगलै जे थुकड़ि कए फेक देलकै। गोला ओकरा बतौलकै जे किछु खास काज लेल समुद्रक जल कें लवणमुक्त कऽ कए साफ बना लेल जाइत छलै। ओतए जलक काज लोक कें बेसी नहिए पड़ैत छलै। खेती बारी दू तरहक छलै–एकटा तऽ समुद्री जल सँ होइ बला आ दोसर साफ कएल जल सँ होइ बला। समुद्रक भीतर उपलब्ध घास फूस आ जीव जन्तुक उपयोग लोक भोजन लेल खूब बेसी करैत छल। कतोक ठाम गामक पोखरिक आकारक पोखरि सब देखलक जाहि मे नोन हटाओल साफ जल भरल छलै।

अनु जएह देखए ओकरा आश्चर्य लगै। एतेक विकसित टेक्नोलॉजीक चर्चा तऽ ओ कतहु नहि सुनने छल। ओकर समस्या छलै जे अपनहु देश मे एखन तक ओ

बहुत किछु नहि देखने छल। तें तुलना करब कठिन छलै मुदा एतए जे छलै से अपना हिसाबें अजूबा जरूर लगैत छलै। ओ सोचए जे मोबाइल रहितै तऽ एहि नवका टेक्नोलोजीक बारे मे गूगल मे सर्च करितए। फेर अपने बुद्धि पर हँसी लागि गेलै– ने ओकरा लग मोबाइल छलै, ने एतुका इंटरनेट व्यवहारक ढंग बूझल छलै आ सबसँ पैघ बात जे जखन गोला कहैत अछि ऊपरी दुनिया कें एकरा सबहिक बारे मे किछु बुझले ने छै तखन गूगल मे कोना जानकारी भेटतै?

बहुत तेज गतिएँ चलैत रहला कारण अनु अगल बगल मे जाइत अबैत लोकक गप सेहो नहि सूनि पबैत छल मुदा सूचना सब ओ सबतरि मिथिलाक्षरे मे लिखल देखलक। ओ तऽ धन्य कही मम्मीक जिद कें जे कहुना ओकरा मिथिलाक्षर सिखा देने छलै जाहि सँ एतए ओ एकरा सब कें चीन्हि सकल। ई बुझबा मे नहिए भेलै जे एहि जलमग्न सभ्यता कें मिथिलाक्षरक ज्ञान कोना भेलै आ कि एकर प्रधानता एतए कोना भेलै।

पन्द्रह मिनट समये कतेक होइत छै नव देश मे नव सभ्यता कें देखबा लेल? ओ तऽ बूझू दौड़ल जा रहल छल सएहटा। एक बेर सोचलक जे कने रुकिए जाइ मुदा फेर ध्यान एलै जे बिना ककरो बतौने ओ आबि गेल अछि। समय पर स्कूल नहि पहुँचत तऽ खोज शुरू हेतै आ कनिए काल मे खबरि मम्मी-पापा लग पहुँचि जेतै। हुनका सब कें तऽ अपहरणेक डर हेतनि। एकटा ओ सभ्यता छै जकरा सभ्य नहि असभ्ये कहब बेसी उचित हेतै आ एकटा ई सभ्यता छै जे गुमनाम रहितो अपराध शब्दो सँ अपरिचित अछि।

ओकर रस्ता मे जतए-जतए ओ लोक कें देखलक, ओकरा बड़ आश्चर्य भेलै जे सब कें माथ पर एकटा पैघ संख्या हमेशा आलोकित होइत रहैत छलै। ओकर संगी ओकरा बुझा देलकै जे ओएह संख्या ओहि लोकक परिचय भेलै। नाम एतए वैकल्पिक छै मुदा संख्या आवश्यक। जाबत लोक जागल रहत, ओ संख्या ओकरा माथ पर ओहिना झलकैत रहतै। लोक अपने सँ चाहियो कए ओकरा बन्द नहि कऽ सकैत अछि। सुतबाक समय ओ अपने बन्द भऽ जाइत छै जाहि सँ सुतै मे लोक कें कोनो बाधा नहि अबै। फेर जखने जागल कि ओ संख्या झलकए लगतै।

अनु कें बड़ आश्चर्य लगलै। कहलकै–"आब हमरो देश मे सब कें नम्बर भेटै छै, ओकरा आधार नम्बर कहल जाइछै। तोरो सबहक ई की आधार नम्बर छियौ?"

"हम सब एकरा आधार नम्बर नहि कहैत छियै। ई नम्बर बहुत सोझ छै। हमरा माथ पर ध्यान सँ देखही। ओहि मे इकाइ-दहाइ-सैकड़ा बला अंक छिऐ जन्मक क्रमसंख्या, आ पाछू मे जन्मदिन, बस एतबे। हमर एहि छोट टापू मे एक दिन मे

कहियो पाँच सात टा सँ बेसी बच्चा जन्म लैतें नहि छै। तैयो क्रम संख्या तीन अंक के बना देल गेल छै।" अनु पुछलकै–"तोहर कोनो नाम छौ कि नहि।"

"हमर नाम असि अछि, किन्तु एकर व्यवहार एतए कमे देखबही।"

सब लोक एके तरहक ड्रेस पहिरने–एकटा ओवरऑल जकाँ। अन्तर एतबे जे पुरुषक ड्रेस उज्जर आ महिला लोकनिक ड्रेस रंगीन रहैत छलै। संगहि माथ पर जे नम्बर झलकै छलै सेहो पुरुष आ महिला लेल भिन्न रंग मे रहैत छलै। एही तरहें महिला कें चीन्हल जा सकैत छलै। एतेक कम समय मे ओकरा कोनो बच्चा सँ भेंट करबाक अवसर नहिए भेटलै। असि कहलकै जे सब बच्चा एखन स्कूल चल गेल छलै आ स्कूलक नियम बहुत कड़ा, बच्चा सँ जखन-तखन ककरो भेंट करब सम्भवो नहि छलै।

अनु कें बड़ उत्कण्ठा छलै चॉकलेटक फैक्ट्री देखबाक। कनियो चॉकलेट एतए ओ चीखए चाहैत छल। असि ओकरा से टा देखा देलकै। चॉकलेट कोना बनैत छै से अनु नहि बूझि पबैत छल। चॉकलेट फैक्ट्री ओ अपनो देश मे नहिए देखने छल। खाली किछु खिस्सा लोक सब सँ सुनने छल। शिरीपट्टी गामक कोनो यादवजी मुम्बइ मे कैडबरी फैक्ट्री मे काज करैत छलखिन। ओएह गाम अबथिन तऽ लोक कें अपन अनुभव सुनबथिन। दूध मे एकटा करिया पावडर घोरि कए गरम करैत करैत खोआ जकाँ बना दैत छै। ओहि खोआ कें साँचा मे ढारि दैत छै, बस चॉकलेट तैयार। हुनका लोक पूछनि जे ओ करिया पावडर की छलै, कतऽ भेटै छलै, से सब किछुओ बूझल नहि। एतऽ एके क्षणक लेल अनु देख पौलक कोना दूध मे पावडर मिला कए बड़का बड़का कड़ाही मे घोरल जाइत छै। आर समये कहाँ छलै बेसी देखबाक, बुझबाक।

कतहु गाय महींस सन जानवर नहि देखेलै। असि ओकरा बुझा देलकै जे कतेक तरहक समुद्री घास मीठ होइत छै ओकरे रस सँ ओ सब गुर, चीनी आदि बना लैत अछि। तहिना समुद्रक पेन मे भेटैत किछु गाछक फरक दूघ गुणकारी पाओल गेलै, ओकरे व्यवहार लोक भोजनो मे करैत अछि आ चॉकलेट आदि मिठाइ मे सेहो। असि ओकरा चॉकलेटक एकटा पाकिट सेहो धरा देलकै। चॉकलेट चिखिते अनु कें बहुत रास पछिला बात सब मोन पड़ए लगलै। ओ स्वाद अकानए लागल जे कोन दिन एहन चॉकलेट खेने छल। मुदा ओकर स्मरण शक्ति एतेक तेज नहि छलै जे मोन पड़ितै।

पन्द्रह मिनट पुरला पर अनुक एस्केलेटर मसीन अपनहि धीमा होइत होइत ठाढ़ भऽ गेलै। ओकर संगी असि ओकरा फेर अपना पीठ पर बैसा लेलकै आ विदा भेल सुरंग मे उपर उठबा लेल। ओ कतेक नीचा छल सेहो कोनो अनुमान नहि छलै। उपर

जाइत ओकर वेग बढ़िते जा रहल छलै। एखनहु आगू अर्थात उपरक रस्ता मे इजोत आ पाछूक रस्ता मे घुप अन्हार देखा रहल छलै। थोड़ेक काल मे ओकरा लगलै जे दूनू गोटे मे किछु परिवर्तन आबि रहल छै। असि गोलाक रूप लऽ रहल छल आ अनु बिला रहल छल, ओहिना बेहोसीक अवस्था जेना अबै काल भेल छलै। फेर अनु अकास मे आबि गेल आ देखिते देखिते स्कूलक ट्वायलेटक पाछू मे ठाढ़, ओहिना जेना ठीक पैंतीस मिनट पहिने छल। गोला निपत्ता, अन्तर एकेटा जे ओकर अपन अनुभवक अतिरिक्त ओकरा पाकिट मे तासक आकार के दूटा फोटो छलै–एहन फोटो जे एहि धरती पर भेटब सम्भवे नहि छलै।

कने काल लेल अनु कें अपना साहस पर गौरव भेलै। एहि पैंतीस मिनट, माने मात्र स्कूलक टिफिन ब्रेक मे ओ कतए सँ कतए चल गेल आ चल आएल ! सब किछु जेना सपना मे भेल होइ।

अनु फोटो कें नुका कए रखलक आ सामान्य भावें किलास मे जा कए बैसि गेल।

अग्रिम सूचना

सरपतिया चऽर मे सेना द्वारा अंतरिक्ष विभागक अति विशिष्ट आ गोपनीय यंत्र लगेबाक लेल जमीन अधिग्रहण कार्य युद्ध स्तर पर चालू छलै। एक दिस नापी आ हिसाब-किताब, दोसर दिस सेनाक ठीकेदार पुल आ प्लैटफार्म निर्माण मे लागल। संगहि जे इलाका नपा जाइत छलै ओतए छहरदेवाली सेहो बनैत जाइत छलै। एतए दूटा पुल बनेंबाक छलै, लम्बाइओ आ चौड़ाइओ साइड सँ। चौड़ाइ साइड बला पुल कने छोट रहला सँ ओकरे काज पहिने शुरू कएल गेलै जे जल्दी सँ बीच मे पहुँचल जाए। बीच मे एकटा पैघ नाओ पर रिग लगा कए प्लैटफार्म बनेबाक काज सेहो शुरू कऽ देल गेलै। रिग तक छोट नाओ द्वारा सामान पहुँचाओल जाइत छलै। तीन तीन टा ठीकेदार काज करैत, पचासो ट्रक नित्य दौड़ैत, सैकड़ो मजदूर लागल।

सेनाक काज जाहि गुणवत्ता सँ भऽ रहल छलै से देखि लोक आश्चर्यचकित छल। लोक तऽ एतए राज्य सरकारक ठीकेदार सबहक काज देखने छल जे सड़क बनलै आ अगिले बरखा मे धोखरए लगलै, पुल बनलै तऽ दसो बरख नहि चलै छलै। एकर विपरीत एतए सब सामानक गुणवत्ताक जाँच होइत छलै। कनकटोली बजारक नामी बिल्डिंग मेटेरियल सप्लायर चिन्तू सेठक सब सामान छँटा गेलै। ओकर गुण्डा सब कने होहल्ला शुरू केलक मुदा सेनाक अफसर लग ककर बस चलैत? सब सटकि गेल। सामान सीधे मधुबनी सँ आबए लागल।

सब ठीकेदार, मजदूरक रहबा लेल कनकटोली हाइ स्कूल पर खेल के मैदान मे टेंट लगाओल गेल। झीलक चारू कात बड़का बड़का सर्चलाइट बैसाओल गेल, रिग बला नाओ पर बड़का जेनेरेटर आ लाइटक व्यवस्था भेल, जाहि सँ काज चौबीसो घंटा चलि सकए। कोनो छुट्टी नहि। जाहि गतिएँ काज भऽ रहल छलै, बुझबा मे अबैत छलै जे दुइए तीन मास मे सबटा काज भऽ जेतै।

एहि व्यस्त कार्यक्रमक बीच एक दिन झील मे फेर विचित्र दृश्य उपस्थित भऽ

गेल। बिचला प्लैटफार्म सँ करीब सौ मीटर दूर हँटि कए एकटा गोला हेलैत देखल गेल। ओ गोला कखनहु पानि मे डूबि जाइत छल फेर थोड़ेक दूर मे उपर आबि जाइत छल। कखनहु कए बुझाइ जे ओ माछक शिकार सेहो कऽ रहल अछि।

कनकटोली गामक लोक तऽ एहन दृश्य कएक बेर देखने छल किन्तु ओतए उपस्थित सेनाक निरीक्षण अधिकारी, ठीकेदार आ ओहि मजदूर सब लेल एकदम अभिनव दृश्य छल। किछु लोक तुरत्ते अपन मोबाइल निकालि लगलाह भीडियो बनबए। हिनका लोकनि कें ओहि विचित्र गोलाक कोनो जानकारी नहि छलनि। भीडियो बनबैत जाथि आ जखन ओकरा चेक करथि तऽ मात्र कारी चकता देखाइ पड़नि। एतए जतेक स्टाफ उपस्थित छलै तकरा ककरो नहि बूझल छलै जे एतेक युद्ध स्तर पर जे कार्य भऽ रहल छलै से ओही गोलाक संकेत पकड़बा लेल। मुख्य उद्देश्य सँ सैन्य अधिकारी सेहो अनभिज्ञ छलाह।

थोड़ेक काल तऽ लोक सब गोलाक खेला देखैत रहल। तकर बाद सबकें उत्सुकता भेलै ओकर शिकार करबाक। नाओ छलैहे, चटपट मे एकटा जाल मँगाओल गेल। गोला ओहिना बेफिक्र भावें उगैत डूबैत रहल। जाल आबि गेला पर लक्ष्य बना कए लग के एकटा नाओ सँ गोला कें छपैत जाल फेकल गेल मुदा गोला तऽ चलाक, दू सौ मीटर दूर जाकए उगल। जाल फेकनिहार आ गोलाक बीच एहिना चोरा-नुक्की खेल चलैत रहलै जाबत जाल फेकनिहार थाकि नहि गेल। एखन तक ककरो बन्दूक सँ शिकार करबाक खियाल नहि आएल छलै। सिपाही सब तऽ छलैके, बन्दूक लऽ लए चारू कात सँ जँहि-तँहि गोला पर निसाना साधल गेल मुदा गोला ओहिना सबटा गोली कें घुरा देलकै जेना पहिल बेर एही झील मे अढ़ाइ साल पूर्व केने छल। एकटा सिपाही कें अपने घुराओल गोली सँ चोट सेहो लगलै।

आब तऽ सबके आश्चर्यक कोनो ठेकान नहि। बन्दूकक आवाज सँ आसपासक लोक सेहो पहुँचि गेलै। सबकें बुझबा मे आबि गेलै जे ओएह उड़नछू गोला फेर झील मे कतहु सँ उतरल छलै। पूरा कनकटोली गामक लोक जमा भऽ गेल। गोला एखनहुँ निश्चिन्त भावें अपन खेला कइये रहल छल जेना ओकरा लेल किछु भेले नहि होइ।

गौआँ सब के पहुँचला पर पुरना खिस्साक चर्चा भेलै तखन सेनाक सिपाही, ठीकेदारक कर्मचारी आ मजदूर सबकें बुझबा मे एलै जे ई तऽ एतुका पुरान खेला छिऐ। कलपू पंडित सेहो पहुँचि गेल छलाह। ओ अपन राग अलापए लगलाह जे ई वरुण देवता छथि, एहि झील मे हिनकर वास छनि, कोनो कारणें एहि इलाकाक लोक सँ अप्रसन्न भेल छथि आ बेर बेर आबि कए लोक कें चेता रहल छथिन जे हुनकर पूजा अर्चना कएल जाए। किछु दिन पहिने माहीपुर गाम मे एहि तरहक आयोजन

भेल छलै, ओतए आब हिनकर प्रकोप नहि छनि। कनकटोलीक गौआँ हमर बात नहि मानलक तकरे ई फल थिक। दुर्गापूजाक समय तैराकी प्रतियोगिता देखनिहार लोकक एकटा नाओ दुर्घटनाग्रस्त भऽ गेल छलै तऽ ओएह वरुण देवता अपन बीसो रूप मे प्रकट भऽ कए सबके रक्षा केलखिन। मुदा एहि गामक कृतघ्न लोक किएक हमर बात मानत?

ओ सबकें बेर बेर बुझा देथिन जे हिनका पकड़बाक कोनो प्रयास पहिनहु सफल नहि भेलै आ ने कहियो हेतै। देवता कोना कए मनुक्खक पकड़ मे औथिन?

जखन कलपू पंडित अपन वरुण पुराण बाँचि रहल छलाह तखने ओ गोला उड़ि गेल। अकास मे उड़ैत चिड़े कें सब देखलक।

अस्तु, बात पसरैत-पसरैत स्थानीय अधिकारी सँ लऽ कए जिला प्रशासन तक पहुँचि गेल। जिला प्रशासन कें फेर मथदुक्खी शुरू भेल। हुनका लोकनि कें तऽ भारत सरकारक योजना बूझल छलनि। जखन एतेक जोर-शोर सँ काज चलि रहल छल तखने एहि गोला कें पुनः दर्शन देबाक की अर्थ? अपन दायित्व कें बुझैत ओ राज्य आ केन्द्र सरकारक विभिन्न स्तरक अधिकारीगण कें सूचित कऽ देलखिन। एहि बेर कनकटोली हाइ स्कूल मे लागल यंत्रक जाँच करबाक कोनो आवश्यकता नहि बुझेलै।

जाबत खबरि दिल्ली पहुँचए ताबत अगिले दिन फेर गोला अकास सँ उतरि कए ओहि झील मे खेलाए लागल। सामने एकटा विचित्र जन्तु छलै मुदा कियो ओकर शिकार करबा मे सफल नहि भऽ रहल छल। अजीब स्थिति छलै। अवश्ये ओ कोनो बहुत बुद्धिमान जीव छल तें ने बन्दूकक गोली कें पकड़ि कए घुरा देलक। सेनाक अफसर सब बजाओल गेलाह आ विचार विमर्श शुरू भेल। शीघ्रे हेलीकॉप्टर आबि गेल झील पर आ अंधाधुँध गोली बरसए लागल। गोला शान्त रहल, गोली खाइत रहल, आब ने ओ प्रतिकार करैत छल आ ने ओहि गोली सबहक ओकरा पर कोनो प्रभाव पड़ैत छलै। झीलक जल घोंका गेल मुदा गोला कें किछु नहि बिगड़लै। हारि कए हेलिकॉप्टर सँ गोलीक बरखा रोकि देल गेल। गोला ने हिलए ने डोलए। गोला कें एतेक स्थिर देखि किछु लोक अनुमान लगेलक जे सम्भवतः हेलीकॉप्टरक गोलीक प्रभाव सँ ओ मरि गेल अथवा बेहोस भऽ गेल, आब ओकरा जाल खसा कए पकड़ब आसान हेतै। सएह कएल गेल मुदा जखने जाल खसलै, गोला डूबि गेल आ जालक क्षेत्र सँ बहुत दूर जाकए उगि गेल। ने ओ मरल छल आ ने बेहोस भेल छल।

कलपू पंडित फेर अपन राग दोहरौलनि—"अपने सब अनेरे देवता कें ढेप मारैक चेष्टा केने जाइ छी। हमर कहब मानू, वरुण देवताक पूजा करै जाउ, अपनहि सब

ठीक भऽ जाएत।"

सेनाक सिपाही हिनकर बात कोना मानि लितनि? ओ तऽ सुशीलक काजे किछु एहन भेल छलै जे ओकर पिता कें डरा धमका कए ई अपन चालि सुतारि लेने छलाह। कनकटोली गामक लोक हिनका खूब नीक जकाँ चिन्हैत छल। तें एतए हुनकर बात पर कियो ध्यान नहि दऽ रहल छल।

झीलक चारू कात लोकक करमान लागल। सेना परेशान। कतेको गोली खर्चा भेलै तकर ठेकान नहि। एहि बीच ओ गोला कखन अकास मे उड़ि गेल से कियो बूझि नहि पौलक। अकास मे ओ अपन विभिन्न रंगक प्रकाश बहार करैत नाचए लागल जेना अढ़ाइ वर्ष पहिने माहीपुर गाम मे दोसर दिन केने छल। सेनाक सिपाही, ठिकेदार आ मजदूर तऽ बूझू अकचकाएले रहि गेल। कनकटोलिओक लोक कें ई दृश्य नहि देखल छलै। सब हरान मुदा ओहि गोला सँ सम्पर्क करबाक कोनो सूत्र नहि बूझल छलै।

सब ओहि दिस सँ ध्यान हटा लेलक, अपन काज मे लागि गेल। थोड़ेक काल मे गोला लोक सबहक ठीक उपर मे आबि गेल आ ओकरा सँ एकटा अदृश्य किरण जकाँ बहरेलै जाहि सँ लोक सब कें हल्का बिजलीक झटका जकाँ लगलै। सब ओतए सँ भागए लागल तखन गोला सेहो कतहु निपत्ता भऽ गेल।

दू दिनक बाद गोला फेर झील मे उतरल। आब लोक ओकरा पकड़बाक अथवा कोनो तरहें हानि पहुँचेबाक चेष्टा छोड़ि देने छल। गोला अपना मोने झील मे खेलाइत रहल। बीच बीच मे ओहि गोला सँ रंगीन जलक जेना फव्वारा छुटै आ फेर बिला जाइ। लोक एहि खेलाक आनन्द तऽ उठा रहल छल किन्तु एकर कोनो अर्थ नहि लागि रहल छलै।

अन्त मे सेनाक जे पैघ अधिकारी ओतए छला हुनका एकटा आइडिया एलनि। ओ लाउडस्पीकर मँगौलनि आ एहि आशयक घोषणा कएलनि जे अहाँ के छी, आ की चाहैत छी। आशा छलै जे यदि गोला कोनो एहन जीव होए जे एतुका कोनो भाषा बुझैत होइ तऽ उत्तर देत। पहिने घोषणा अंग्रेजी मे भेल। कोनो उत्तर नहि। फेर ओकरा हिन्दी मे दोहराओल गेल, कोनो उत्तर नहि। ईहो चालि फेल भऽ गेल।

गौआँ सब कें बूझल छलनि जे माहीपुर मे बच्चा सब के संग जे गोला खेलाइ लेल अबैत छलै से मैथिली बजैत छलै। ओ सब घोषणा केनिहार कें मैथिलीओ मे घोषणा करबा लेल आग्रह केलखिन। ओहि बेचारा कें मैथिली तऽ बाजऽ अबिते नहि छलै। ओ बात कें टारि देलक। ओहुना सेनाक लोक कें हिन्दी आ अंग्रेजीक आगू किछु बुझाइते नहि छलै। गौआँ सब हुनका बुझेलक जे पहिने एहन घटना भेल छै।

बगलेक माहीपुर गाम मे एकटा बच्चाक संग खेलाइ लेल गोला उतरै छलै जे मैथिली बजैत छलै। ओना ओ गोला कहियो पानि मे नहि देखल गेलै मुदा की जानि, ईहो गोला मैथिली बुझैत होए।

अस्तु, बहुत हठ केलाक बाद माइक कनकटोलीक मुखिया कें पकड़ा देल गेल। ओ मैथिली मे घोषणा केलनि—"अहाँ के छी, की चाहैत छी से बताउ, हम सब ओही हिसाबें अपनेक सेवा करब।"

घोषणा खतम भेलाक किछुए कालक बाद गोला उड़ि गेल। लोक देखलक जे उड़ैत काल लोकक बीच ओ कोनो चीज फेकि देलक। ओहि चीज कें तकबा मे किछु समय तऽ लागिए गेलै। अन्त मे भेटलै एकटा रंगीन कागतक टुकड़ी जाहि पर किछु लीखल छलै। सेनाक एकटा सिपाही ओहि कागत कें अपना कब्जा मे केलक आ पढ़बाक चेष्टा केलक मुदा ओ अक्षर चीन्हिए नहि पौलक। ओतए उपस्थित सेनाक जतेक कर्मचारी छल सब बेराबेरी चेष्टा केलक मुदा कोनो सफलता नहि। एक गोटे एतबे बाजल—"लगता है बंगला मे कुछ लिखा हुआ है।" मुदा की लीखल छै से अबूझे रहल।

ओ लोकनि कागत गौआँ कें देबा लेल तैयार नहि छलाह। हुनकर कहब छलनि जे एतेक महत्वपूर्ण कागत यदि कियो दुष्टइ सँ नष्ट कऽ देलक तखन के उत्तरदायी होएत?

बात तऽ ठीके छलै मुदा ओहि लिखलाहाक उत्सुकता एतेक बेसी छलै जे गौआँ सब जोर दऽ देलकनि एक बेर हुनका लोकनि कें देखा देल जाए। गोला मैथिली भाषा बूझि गेल छल कि नहि से तऽ निश्चित नहि कहल जा सकैत छलै। भेलै तऽ एतबे जे मैथिली मे घोषणा भेलाक बाद ओ उड़ि गेल आ कागतक ओ लिखलाहा टुकड़ी फेकि देलक।

की गोला कागतक टुकड़ी लेने आएल छल? यदि हँ तऽ किएक? की ओकरा बूझल छलै जे एना किछु मैथिली मे घोषणा हेतै? ई सब रहस्ये रहि गेल।

बंगला मे लिखल रहबाक चर्चा सूनि एक बेर फेर कलपू पंडित सुगबुगेलाह। ओ कलकत्ता मे किछु दिन रहल छलाह, आ कने मने बंगला पढ़ि लैत छलाह कारण बच्चहि मे ओ मिथिलाक्षर सिखने छलाह। ओ कहलखिन जे बंगला पढ़ब ओ जनैत छथि, हुनका ओ कागत देखऽ देल जाए। एहि पंडितक बारे मे सेनाक सिपाही सब जे सुनने छल ताहि सँ ओकरा सब कें अन्दाज भऽ गेल छलै जे ई धूर्त लोक अछि। तें ओकरा पर विश्वास करब कठिन छलै। किन्तु कागतक लिखावट पढ़ि लेबाक उत्सुकता ओकरो सबकें छलै।

सेनाक सिपाही जे कागतक टुकड़ी रखने छल से हुनका बजौलक, अपने हाथ मे कागत रखने रहल, दूटा सिपाही कलपूक हाथ कें पकड़ने रहल आ एहने स्थिति मे हुनका पढ़बा लेल कहलकनि।

कलपू जखन अक्षर देखलनि तऽ हुनका आर आश्चर्य भेलनि। ई तऽ शुद्धे मिथिलाक्षर छलै, बंगला नहि। ओहि मे मात्र एतबे लिखल छलै–"समय आबि गेल छै, जल्दीए सब किछु पता लागि जाएत।" मुखियाजी एकर हिन्दी अनुवाद कऽ कए सबकें सुना देलखिन जाहि सँ सेनाक सब व्यक्ति कें ओकर अर्थ बुझबा मे आबि गेलै।

ई तऽ आरो रहस्यमय बात भेल। कथीक समय आबि गेलै आ की पता लागि जाएत? ई कोनो अग्रिम सूचना छलै कि कोनो तरहक धमकी? एतुका लोक कें एहि सँ बेसी करबाक तऽ किछु छलै नहि। ओ कागत सीधे सेना मुख्यालय पठा देल गेल आ एकर खबरि जिला प्रशासन कें दऽ देल गेल।

पहिल परिचय

अनुक पाकिट मे जे फोटो छलै ओ कखन लेल गेलै, कोन कैमरा सँ लेल गेलै से ओ नहि बूझि सकल छल। ओहि मे एकटा मे ओकर संगी गोला 'असि', जे अपना देश मे पूर्ण मनुष्यक रूप मे छल, तकरा संग ओकर फोटो छलै, जेना असि कोनो सेल्फी लेने होअए। एहि मे असिक माथ पर ओकर नम्बर चमकि रहल छलै। ई फोटो तऽ निश्चिते एहि दुनियाँक नहि लगैत छलै। दोसर फोटो चॉकलेट फैक्ट्रीक छलै। एहि मे किछु अंश तऽ कोनो पैघ फैक्ट्रीए जकाँ देखाइत छलै मुदा अनु अपने जे चॉकलेट खा रहल छल से जरूर नव छलै। एतेक तऽ गाम पर लोक कें बूझल छलै जे आसपास मे कतहु कोनो चॉकलेट फैक्ट्री नहि छलै जे अनु ओतए चलि जइतै आ फोटो खिचा लैत। दूनू फोटो मे एकटा वाटरमार्क जकाँ चिन्ह जाहि मे अनुक नाम मिथिलाक्षर मे लीखल। सब तरहें यदि मिला कए देखल जइतए तऽ निश्चिते अनु ई साबित कऽ सकैत छल जे ओहि दिन टिफिनक समय ओ कतहु नव जगह जरूर गेल छल।

राति मे खेबाक समय ओ मम्मी पापा लग एकर चर्चा शुरू केलक। डराइते डराइते पहिने दूनू गोटे सँ अभयदान लेलक जे ओ आइ स्कूल मे किछु केलक ताहि लेल ओकरा प्रतारित नहि कएल जाए। ओकर मम्मी, पापा दूनू आश्चर्यचकित जे एहन की भेलै। स्कूल मे यदि किछु भेल रहितै तऽ हुनका सब कें एखन तक खबरि भेटिए गेल रहितनि। ओहुना अनु बदमासी करै बला बच्चा नहि छल आ ने ककरो सँ ओ झगड़ा करैत छल।

"की बात भेलै?" मम्मी प्रश्न केलकै।

"ई फोटे देखही", अनु दूनू फोटो हुनका लग पसारि देलक।

"के छिऐ ई व्यक्ति?" आब पापाक प्रश्न छल।

"उड़नछू गोला", अनु मुस्कुराइत उत्तर देलक।

"बुझौवलि नहि बना, स्पष्ट बता। ओ गोला कोना मनुक्ख भऽ जेतै? एहि मनुक्खक तऽ नाक एते थबरल छै, आँखि लगै छै एतेक पसरल जेना ककरो गीरि जेतै। एहन मनुक्ख तोरा कतए भेटलौ? कहिया भेटलौ? हमरा सब कें पहिने किएक नहि कहलें?"—मम्मी प्रश्नक गोली दागैत चल गेलै।

"कोनो बुझौवलि नहि छै, हमर बात ध्यान सँ सून कने काल"—अनु फेर ओहिना मुस्कुराइत उत्तर देलकै।

"अच्छा कहैत जो"—पापा बजलखिन।

अनु शुरू केलक—"उड़नछू गोलाक बारे मे हम स्कूल मे हेडमास्टर आ ओहि दूनू विशेषज्ञ कें बहुत बात बतौलिएनि, तोरो सब कें ओतेक बात बताइये देलियौ। खाली एकेटा बात हम ओहि दिन नुका रखलियौ। अन्तिम दिन ओ गोला हमरा कहने रहए जे यदि ओकर देश देखबाक कोनो विचार होए तऽ ओकरा फेर सँ बजबै लेल लाल, पीयर, हरियर एहि तीन तरहक रंग बला गुड्डी तीन दिन तक छत पर उड़ा देत। ओकरा खबरि भेटि जेतै आ हमरा लेबा लेल ओ आबि जाएत।

हम ओकरा पुछने रहियै जे कतेक समय लगतै जेबा मे। ओ कहलक रस्ता अनेक तरहक छै मुदा जे सबसँ जल्दी जाइ बला छै तै सँ दस मिनट मे पहुँचल जा सकैत छै।

दस मिनट सूनि हमरा मोन मे विचार उठल जे किएक ने टिफिन टाइम मे कनियो देखि आबी। सत की झूठ सेहो बूझि जेबै आ जतबे देखबै अपन अनुभव लोक कें बता सकबै। एहि सँ उड़नछू गोलाक रहस्यक बारे मे किछुओ तऽ पता चलतै।

हमरा लागल जे तों सब घर मे हमर चालि पर नजरि रखने रहैत छें, आब हम एकसर छत पर कनियो काल लेल जाइत छी तऽ दूनू गोटे मे सँ कियो हमरा पाछू आबि जाइत छें देखबा लेल जे हम एकान्त मे की कऽ रहल छी। एहन स्थिति मे अपना छत सँ गुड्डी उड़ाएब सम्भव नहि बुझाएल। हम तखन स्कूल मे ट्वायलेटक पाछू सँ तीन दिन तक ई काज कएल। कालि चारिम दिन ओ हमरा लेबा लेल आबि गेल। किन्तु हमर विचार बदलि गेल। हम ओकरा फेर अगिला दिन आबए कहि देलिऐ, समय दऽ देलियै टिफिन सँ ठीक पाँच मिनट पहिने। आब हमरा गुड्डी उड़ेबाक काज नहि छल।

आइ फेर ओ गोला निर्धारित समय पर आबि गेल ओतहि। हम ओकरा संग ओकर देश, जे ठीके जलमग्न छै, देखि एलहुँ। हम ओतए मात्र पन्द्रह मिनट रही, दस मिनट जेबा मे दस मिनट एबा मे, बस पैंतीस मिनट के ई टूर छल। टिफिन

सँ पाँच मिनट पहिने विदा भेलहुँ आ टिफिन खतम होइत घुरि एलहुँ। ई दूनू फोटो ओएह उड़नछू गोला, जकर नाम अपना देश मे असि छै, खीच देलक। कखन फोटो लेलकै से हम बुझियो नहि पेलियै।"

ई बात तों हेडमास्टर साहेब कें कहि देलही की?"—पापा फेर प्रश्न केलखिन।

"एखन नहि। पहिने हमर पूरा बात तऽ सूनि लिअऽ। ओहुना हेडमास्टर साहेबक पेट मे बात पचैत नहि छनि, ओ कोनो बात गोपनीय राखब जनिते नहि छथि। तें हम एहि सँ परहेज कएल। हम पहिने यात्राक बारे मे बता दैत छी।"

"दसे मिनट मे तों कोन जलमग्न सभ्यताक देश मे पहुँचि गेलें? ओतेक समय मे तऽ लोक माहीपुर सँ कनकटोलियो नहि पहुँचत"—अविश्वासक संग ओकर मम्मी पुछलकै।

अनु विस्तार सँ ओहि पैतीस मिनटक अपन अनुभव हुनका दूनू कें सुना देलक। फेर आगू बाजल—"पन्द्रह मिनट मे लोक देखबे की करत, मुदा हमरा लग समय नहि छल। पहिल यात्रा मे हम तऽ केवल देश कें देखऽ चाहैत छलहुँ आ ई जाँचए चाहैत छलहुँ जे गोला सत्य बाजल छल कि झूठ। एकरा हम पहिल परिचय कहि सकैत छी जाहि मे गोला कें असली रूप मे देखलियै। समुद्रक भीतर ओकर देश देखलियै।

गोला किछुओ झूठ नहि बाजल छल। हँ, दस मिनट मे कोना कए अपन देश पहुँचि गेलै आ हम कोना ओकरा संग गेलहुँ, हमरा मे ओ कोन परिवर्तन अनलक से सब हमरा किछु नहि बूझल भेल।

एहि फोटो सब कें ध्यान सँ देखही। ई कोनो धरती परहक फोटोक विकृत रूप नहि छिऐ। छू कए देखही, एहन कागते तोरा कतहु नहि भेटतौ। असिक रूप देखही, की तोरा ओ अपने सब जकाँ मनुक्ख लगैत छौ? दू हाथ, दू पएर, दू आँखि आदि जरूर छै मुदा ध्यान दही आँखिक बनाबट पर पुतली कतेक पसरल आ पैघ भेल छै। नाकक पूरा कतेक भिन्न छै, कान कतेक छोट छै। की ई सब झूठे लगैत छौ?"

"यदि फोटोशॉप तरीका सँ एना बना लेल जाए तऽ तोहर बात झूठो साबित भऽ जेतौ"—पापा सन्देह व्यक्त केलखिन।

"तें हमर अगिला विचार सूनि लिअऽ"—अनु जोर दैत बाजल।

"एँगे छौंड़ी, तोरा एकसरे ओहन जगह मे जेबा मे डर नहि भेलौ? यदि ओ मारिए दितौ?"—आब मम्मी कने तमसा गेल छलखिन।

"ई बात जरूर छलै, खतरा तऽ निश्चिते छलै मुदा हम रहस्य रोमांच लेल तैयार छलहुँ। बिना खतरा मोल लेने कोनो नव जगह देखलो नै ने जा सकैत छै। मरबाक डर नहि छल किन्तु ईहो सम्भव छलै जे जेबा-एबा मे कोनो दुर्घटना भऽ जइतै आ

हमर जान चल जइतए। हमरा गोलाक एकेटा बात पर अटूट विश्वास छल जे ओ हमर दोस्त बनि गेल छल। कतहु भीतर मे हमर आत्मबल कहि रहल छल जे ई दोस्त दगाबाजी नहि करतौ।"

"जे भेलै से भऽ गेलै, तों सकुशल घुरि अएलें। एकर खबरि हम सब सरकार कें शीघ्रे दऽ दियै से उचित"—ओकर पापाक सुझाव छलनि।

"कने थम्हू। हमरा किछु आर कहबाक अछि। हमर योजना अछि जे एक बेर हम तीनू गोटे ओतए जा कए कम सँ कम दुइयो दिन रहि कए देशकोस देखि ली, ओकरा सभ्यताक बारे मे किछु आर जानि ली तखन यदि सरकार कें कहबो करबै तऽ उपकार होएत। सरकारो कें किछु सूत्र भेटतै एहि शत्रु अथवा मित्र सभ्यताक खोज करबा मे तथा ओकरा संग उचित सम्बन्ध स्थापित करबा मे"—अनु एकदम बुढ़िया जकाँ बाजि रहल छल।

"हम सब कोना जा सकब?"—मम्मी फेर पुछलकै।

"गोला हमरा पहिनहि बता देने छल जे तों मम्मी पापाक संग आबि सकैत छें। एहि लेल सब दिन आन रंगक गुड्डीक संग कारी रंगक गुड्डी सेहो उड़ा देल करिहें। हम बूझि जेबै जे बेसी लोक छै तऽ ओही हिसाबें तैयार भऽ कए आएब। ओ तऽ ईहो कहने छल जे जतेक बेसी लोक ओकर देश देखतै ततेक नीक बात, ओ सब तऽ चाहिते सएह अछि। ओकरा देश मे एखन कियो टूरिस्ट नहि जा पबैत छै, ककरो बुझले नहि छै तऽ जेतै कोना?"

"आ यदि तीनू गोटे फेर घुरि कए नहि आबी? यदि हम तीनू बन्दी बना लेल जाइ? कोनो चलाकी होइ एहि गोलाक। तोरा आगू बढ़ौलकौ लोक कें विश्वास मे अनबाक लेल। आगू की करत से कोना कहल जाए?"—पापा अपन सन्देह व्यक्त केलखिन।

"देखियौ पापा, खतरा तऽ छैके। ओना खतरा कोन काज मे नहि छै? यदि एकदम विचित्र आ नव जगह देखऽ चाहबै जतए पहिने कियो नहि गेल छलै तऽ ओ खतरा उठबहि पड़त, से धरती पर होइ कि अंतरिक्ष मे आ कि एहि जलमग्न सभ्यताक देश मे। अंतरिक्ष मे गेनिहारक लेल कतेक खतरा छै से तऽ बुझले अछि तैयो लोक यात्रा बन्द नहि ने कऽ देलकै। दुर्घटना होइत रहलै तैयो कोनो देशक अंतरिक्ष कार्यक्रम कहाँ रोकि देल गेलै? एतेक ओकर क्रेज बढ़ल जा रहलैए जे आब निजी कम्पनी सब सेहो अन्तरिक्ष यात्रा करेबाक जोगाड़ मे लागि गेल अछि। भविष्यक टूरिस्ट व्यवसाय इएह हेतै ने।

तहिना एहू यात्रा मे छै। हम एक बेर सकुशल घुरि कए आबि गेलहुँ तैयो ई कोना

कहब जे अगिला बेर किछु गड़बड़ नहि भऽ सकतै। लेकिन सोचियौ जे जखन अहाँ घुरि कए आएब तखन अहाँ समाज आ सरकारक लेल कतेक पैघ हीरो बनि जाएब?"

एक बेर फेर बुढ़िया जकाँ अपन बेटी कें बजैत देखि अनुक मम्मी कें हँसी छूटि गेलनि। ओ बजली—"बुझलियौ गे बुढ़िया, तों बड़का ज्ञानी भऽ गेलें। अच्छा बता कोना प्रोग्राम बनाओल जाए?"

"अहाँ तऽ लगैए सूटकेस तैयारे रखने छी टूर करबा लेल"—अनुक पापा चुटकी लेलखिन।

"सूटकेसे नहि, अहूँ कें तैयार रखनहि छी, हमरा बूझल अछि एहि फेमिली टूर लेल अहाँ अस्वीकार नहि करबै। टूरो एहन जे एकोटा पैसा खर्चा नहि।"

"सूटकेस लऽ जाइक कोनो काजे नहि। तैयो हम सब एतेक तैयार भऽ कए जरूर जाएब जे ओतए सँ एहन किछु सबूत लेने आबी जाहि मे कोनो संदेहक गुंजाइस नहि रहै जेना फोटोक लेल अहाँक मोन मे उठल"—अनु फरिछौलक।

"सूटकेस नहि लऽ जाएब तखन आर की सब लेने जाएब? दू-तीन दिन की एके कपड़ा पहिर कए रहबै ओतए?"—मम्मी पुछलखिन।

"एहि लेल शान्त मोने विचार करऽ पड़तै। कपड़ा आदिक चिन्ता नहि कर, कोनो ने कोनो व्यवस्था भइए जेतै"—अनु आश्वस्त केलकनि।

"ओतुका लोक लेल सनेस? सेहो नहि लऽ जेबै तऽ विकट पाहुन जकाँ रहब हमरा नीक नहि लागत"—मम्मी जोड़ि देलखिन।

"कहलियौ ने, पहिने हम सब बैसि कए लिस्ट आ प्लान बना लेब, तखन गोला कें एतए बजा ओकरो सलाह लऽ लेब, कारण थोड़ कि बहुत, सामान उठबऽ तऽ पड़तै ओकरे। हम सब सेहो ओकरे पीठ पर सवार रहबै ने"—अनु फेर बुधियारि जकाँ मम्मी कें बुझेलक।

दूनू गोटे जेबाक विचार बनौलनि। प्रशासन कें खबरि करबाक योजना स्थगित भेल। अनु कें कहल गेल जे अगिला सप्ताह ओ गुड्डी उड़ेनाइ शुरू कऽ सकैत अछि। ओकरा स्कूल मे दरखास्त दऽ देल जेतै जे ओ सपरिवार किछु दिनक लेल बाहर टूर पर जा रहल अछि।

तहिना कएल गेल। अगिला सप्ताहक चारिम दिन उड़नछू गोला असि अनुक छत पर उतरल तऽ पहिल बेर अनु ओकरा घरक भीतर बजा लेलक। ओ छत पर गप नहि करए चाहैत छल। ओकरा किछु सन्देह भऽ गेल छलै। गोला कें लेने अनु गेल घर मे जतए मम्मी-पापा प्रतीक्षा करैत छलखिन।

ओना तऽ अनुक मम्मी एहि गोला कें छत पर अनुक संग खेलाइत देखने

छलथिन, ओकर पापा पहिल बेर गोलाक सामने छलाह। जखन बातचीत शुरू भेलै तखन हुनका कौतुक आ आश्चर्य दूनू भेलनि। हुनका लेल एहि गोलाक संग पहिल परिचय छलनि। म्यूजियम मे रोबोट कें बजैत देखने छलखिन मुदा ओ बहुत सीमित स्तर के बातचीत रहैत छलै, जतबे सिखाओल ततबे बाजत। एतए ई गोला हुनके सदृश व्यक्तिक रूप मे खुलि कए गप कऽ रहल छलनि।

पहिल बेर अनुक मम्मी लेल ई पाहुन रूप मे घर मे आएल छलखिन, उचिते ओ अथिति सत्कार लेल किछु करितथि। मुदा गोला स्पष्ट रूपें मना कऽ देलकनि जे ओकर वर्तमान रूप मे ओ कोनो तरहक अतिथि सत्कार स्वीकार करबाक स्थिति मे नहि अछि। ओ किछु खा-पी नहि सकैत अछि।

अस्तु, टूर लेल विचार-विमर्श शुरू भेल। शैलेशजी पुछलखिन–"अहाँ सब कें ई नहि बूझल अछि जे पृथ्वीक कोन भाग मे कोन समुद्रक पेट मे अपने सब बसैत छी।"

"जी, से ठीके कहल। हम सब जाहि टापू पर छी ओकर ठीक उपर तक अबैत छी तकर बाद उड़ि जाइत छी। ओकर भूगोलक कोनो ज्ञान हमरा सबकें नहि अछि।"

"यदि हम अपना संग किछु किताब आ एकाध एहन यंत्र लेने जाइ जाहि सँ एहि टापूक वर्तमान स्थिति बुझबा मे मदति भेटए तऽ कोनो हर्ज?"

"किताब लेल कोनो हर्ज नहि, यंत्र केहन रहतै से हम कोना बुझबै? ओहि सँ हमरा सब कें कोनो तरहक खतरा नहि ने उपस्थित होएत?"

"अहाँ अनु कें अपन दोस्त मानि सब तरहें ओकर रक्षा केलियै। तखन हमरो कर्तव्य बनैत अछि अहाँ सबहिक रक्षा करबाक। हम सब अहाँक देश मे अहीं सब के अधिकार मे रहब। हम सब कोनो तरहें अपनहि भागि नहिए आबि सकब, तखन डर कथीक?"

"यंत्रक किछु वर्णन हमरा भेटत? हम अपना मे विचारि ली।"

"बहुत नीक।" ई कहि ओ अपना आलमारी सँ किछु चित्र बहार कए गोला कें दऽ देलखिन।

"आरो किछु लऽ जेबाक विचार अछि?"

"हम सब अपनेक अतिथि बनए जा रहल छी, एहि धरतीक किछु सनेस तऽ लइये जेबाक चाही ने। नहि तऽ ओतए लोक धरकट कहत हमरा सब कें। ई बात अहाँ ओतेक नहि बुझबै जतेक महिला सब बुझथिन"–विभारानी जोड़लनि।

"एकर चिन्ता नहि करू। एखन बूझू अहाँ सब कोनो पहुनाइ करए नहि, अपितु हमरा सबहिक प्रचार करबा लेल जा रहल छी। जे किछु देखि सूनि एबै, एतुका लोक कें बतेबै तऽ आरो बेसी लोक हमरा देश आओत, सएह हमर उद्येश्य अछि।"

"ठीक छै, कपड़ा लत्ता?"

"ओकरो चिन्ता नहि करू।"

"बर बेस, हम सब कहिया बुझबै जे अहाँ अपना मे विचारि कए हमर यंत्र लेल स्वीकृति दऽ देलहुँ?"–शैलेशजी बात कें समेटैत बजलाह।

"यदि अपने सब जेबा लेल तैयार छी तऽ कालि हम फेर आबि जाएब। ओही समय कहि देब की लऽ जा सकैत छी, की नहि। आब हमरा आदेश भेटए"–गोला सेहो अपन सारांश प्रस्तुत केलनि।

"ठीक छै, कालि हम सब सामानक संग तैयार रहब। यदि अहाँ मना कऽ देब तऽ ओकरा छोड़ि देबै"–अन्तिम विचार शैलेशजी देलखिन। ई सुनि गोला अनुक संग छत पर गेल आ उड़ि गेल। अपना देश जाकए यमि कें संदेश सुना देलखिन जे तीनटा पाहुन कालि एतए औताह। हुनकर अनुरोध छलनि किछु यंत्र आ किताब संगे अनबाक।

यमि कें सामानक लेल चिन्ता नहि छलनि, ककरो पुछबाको नहि छलनि, तुरत्ते अनुमति दऽ देलखिन। किन्तु पाहुन? से दिन भेलै जे मिथिला सँ पहिल बेर पाहुन औताह? आ शुरू भेल ओहि टापू मे हलचल।

अगिला दिन शैलेशजी अनुक स्कूल मे एक सप्ताहक छुट्टीक लेल आवेदन पठा देलखिन आ अपना बैंक सँ सेहो एक सप्ताहक छुट्टी लऽ लेलनि। यद्यपि टूर दुइए-तीन दिनक छलै तथापि किछु समय रिजर्व मे राखि लेलनि।

ओहि दिन ओ गोला अलगे रूप मे अवतरित भेल जाहि मे चारि टा हाथ लागल छलै। मम्मी-पापाक संग अनु छत पर ठाढ़े छल। गोला उतरिते एक हाथ मे हुनकर सामान उठा लेलक आ तीनू यात्री कें एक एकटा हाथ पकड़बा लेल कहलकनि। ओ सब तहिना केलनि आ अंतरिक्ष मे बिला गेलाह।

भूचाल

मिथिलाक्षर मे लीखल ओ कागतक टुकड़ीक संग कनकटोली सँ रिपोर्ट पहुँचल सेना मुख्यालय दिल्ली। ओहि रिपोर्ट मे निम्नलिखित विशेष बातक चर्चा छल।

"कनकटोली गामक सीमान पर सरपतिया चऽर के झील मे सैकड़ो मजदूर, ठीकेदार, अन्य कर्मचारी, आ सेनाक सिपाही आदिक उपस्थिति मे एतेक भीड़ रहितो एकटा उड़नछू गोला कतहु सँ आबि कए पानि मे खेलाए लागल। ओकरा पकड़बाक सब चेष्टा असफल भेल। जाल मे ओ फँसल नहि, बन्दूकक गोली कें तऽ ओ पकड़ि कए चलेनिहारेक उपर फेकि देलक। सबसँ आश्चर्यक बात जे हेलीकॉप्टर सँ ओकरा उपर गोली बरसाओल गेल तकरो कोनो प्रभाव नहि भेलै। जखन ओकरा मृत अथवा बेहोस जानि जाल सँ पकड़बाक कोशिश भेल, ओ भागि गेल। माने ने ओ मरल छल ने बेहोश भेल छल, पूर्णतः सजग छल आ हमरा सबकें जेना बुड़िबक बना रहल छल।

दू दिन बाद फेर ओ झील पर उतरल। एहि बेर ओकरा पकड़बाक कि कोनो तरहें हानि पहुँचेबाक कोनो प्रयास नहि कएल गेल। ओहि विचित्र जीव सँ सम्पर्क करबा लेल लाउडस्पीकर सँ अंग्रेजी आ हिन्दी मे घोषणा करबाओल गेल। किन्तु ओकरा पर जेना कोनो प्रतिक्रिया नहि भेलै। तखन पूर्व अनुभवक आधार पर ग्रामीण सब के सलाह मानि स्थानीय मैथिली भाषा मे सेहो घोषणा करबाओल गेल। एहि पर ओ गोला कागतक एकटा छोट टुकड़ी हमरा सब दिस फेकैत उड़ि गेल।

हम सब निश्चित किछु नहि कहि सकैत छी जे ओ मैथिलीक घोषणा बूझि कए उड़ि गेल आ कि ओहिना अपना मोने। कागतक टुकड़ी पठाओल जा रहल अछि जकरा एतए एकटा ग्रामीण पंडित पढ़लनि। हुनकर कहब छलनि जे ई मिथिलाक्षर मे लीखल छै जे मैथिली भाषाक प्राचीन लिपि छिऐ।

कनकटोली हाइ स्कूल मे बैसाओल पुरना यंत्र कें खोलि हम सब जाँचि लेल, इलाका मे गोलाक उपस्थितिक कोनो संकेत ओहि यंत्र मे नहि भेटल।"

सेना मुख्यालय मे भूचाल आबि गेल। एकर लपेट मे अंतरिक्ष विभाग, केन्द्रीय जासूसी संस्था, विदेश मंत्रालय आदि सब आबि गेल। शत्रुक एहन ढिठाइ देखू जे अहाँक घर मे निडर भऽ कए आबि गेल, सैकड़ो लोकक बीच भीड़भाड़ मे आबि निश्चिन्त भावें खेलाइत रहल, नहि जानि कोन तरहक गुप्त सूचना सब एकत्रित करैत रहल आ अहाँ ओकर किछु बिगाड़ि नहि सकलियै। ने पकड़ि सकलियै ने मारि सकलियै, उन्टे ओ जेना चैलेंज करैत एकटा कागतक टुकड़ी पर किछु अंटशंट लीखि अपन रस्ता धेलक। अहाँ मुह तकिते रहि गेलहुँ। विश्वक सैन्य इतिहास मे ई अभूतपूर्व घटना छल। संगहि अपना सेनाक अकर्मण्यता पर लज्जाबोध होइत एकरा कतहु प्रचारित नहि कएल जा सकैत छल।

ई गोला की छिऐ—मनुक्ख कि जानवर कि पराग्रही जीव आ कि कोनो शत्रु देशक रोबोट जासूस? किएक ई खाली मिथिला क्षेत्र मे अबैत छै। ओकर एहन कोन सैन्य महत्व एकरा लेल भऽ गेलै? मिथिला क्षेत्रक विशेषता एतबे जे ओ नेपालक सीमा सँ सटल छै। नेपाल एहन काज कोना करत? ओकरा एहन विकसित विज्ञान आ इंजीनियरिंग छैको नहि। एकेटा सम्भावना छै जे ई चीनी जासूस रोबोट होअए जे नेपाल द्वारा एमहर पठाओल जा रहल अछि। किन्तु नेपालक सीमा बंगाल, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, सिकिम मे सेहो छै। ओमहर एहन घटना किएक नहि भेलै?

ई विचित्र जीव मैथिली भाषा पर किएक आकर्षित भऽ रहल छै? कतए सँ अबैत छै, कतए चल जाइत छै? मैथिलीक पुरना लिपि, जे स्थानीय जनता मे किछुए लोक जनैत अछि आ कियो सिखबो नहि करैत अछि, एकरा कोना सीखल भेलै?

पूर्व मे जे प्रधानमंत्रीक उपस्थिति मे उच्चस्तरीय मीटिंग भेल छल आ ओहि मे जे निर्णय सब लेल गेल छल तकरा अमल मे अनबा लेल मात्र एकटा कार्य भऽ रहल छलै। ओ छल सरपतिया चऽरक झील मे अंतरिक्ष विभागक अत्याधुनिक यंत्र बैसेबाक लेल निर्माण कार्य। निर्माण कार्यक ठीक बीच फेर एहि उड़नछू गोलाक अवतरित होएब कोन संकेत भेल? यदि गोला एहिना हमरा सबहिक बीच चैलेंज करैत अबैत रहत तऽ हम सब ओतेक गोपनीय यंत्र कोना कए बैसाएब? ओ तऽ सबटा काज देखिते रहत, कोन चीजक कतेक विस्तृत फोटो लैत रहत तकर कोनो अन्दाजो हम सब नहि लगा सकब।

सब विभागक अधिकारी लोकनिक उच्चस्तरीय मीटिंग फेर बजाओल गेल। स्थानीय जिलाधिकारी सेहो उपस्थित छलाह। कनकटोली गाम सँ भेटल सूचना आ ओ कागतक टुकड़ी सबहक समक्ष राखल गेल। एतेक समय मे मैथिलीक ओहि छोट सन वाक्यक अनुवाद हिन्दी अंग्रेजी आदि मे भैए गेल छलै।

बहस आरम्भ भेल। मुदा जेना दिशाहीन बहस होअए। एके मास मे कोना कए जासूसी संस्थाक कर्मचारी एकरा बारे मे पता कऽ लितथि? उचिते कोनो दिशा मे किछुओ प्रगति नहि भेल छलै। विदेश मंत्रालय कें नेपाल सँ किछुओ सूचना नहि भेटल छलनि जे नेपाली मिथिलाक कोनो व्यक्ति किछु अजनबी कें मैथिली सिखेबा मे लागल छलाह। यदि भूतकाल मे सौ दू सौ साल पहिने किछु भेल हेतै तऽ ओकर सूचना भेटब असम्भवे छल। के एतेक खियाल राखत? आ कोनो संदेह हेबो करै तखन ने। ओहुना मुख्य बात छलै जे मिथिला मे एहि कात आ कि ओहि कात, पंडित लोकनि मैथिली बजैत जरूर छलाह मुदा कर्म संस्कृते मे करैत छलाह। हुनका लग कियो मैथिली सिखबा लेल जेबे किएक करितए? मिथिलाक्षर तऽ दूनू कात विलुप्ते जकाँ छल। पछिला सौ साल मे एहि लिपि मे कियो किछु नहि लिखने छल। जे पांडुलिपि उपलब्ध छलै से बहुत पुरनके।

अंतरिक्ष विज्ञान विभागक वैज्ञानिक लोकनि गुप्त रूप सँ अपन सब विदेशी मित्र, सहयोगी आदिक टोह लैए लेने छलाह, किनको कोनो सूत्र हाथ नहि लगलनि जे एहन कोनो सभ्यता समुद्र मे डूबल होइ। समुद्र विभागक वैज्ञानिक सब, जे दक्षिणी ध्रुव तक मे रिसर्च लेल विख्यात छलाह, हुनको लोकनिक जानकारी मे एहन कतहु किछु नहि छलनि आ ने नौसेनाक हाथे किछु पता लागि रहल छलै।

एहि बहसक बीच अंतरिक्ष विभागक एकटा वरिष्ठ वैज्ञानिक ओहि कागत के उठा कए देखलनि। हुनका आश्चर्यक कोनो ठेकान नहि रहलनि जखन ओहि कागतक रंगढंगक जाँच कएल गेल। ई कागत धरती पर उपलब्ध सब कागत सँ भिन्न छलै। ओ मात्र एकटा छोट टुकड़ी फारि कए ओतहि बैसल जरा देलखिन। ने धधरा ने धुआँ किछु नहि भेलै, बचि गेल कने बालु जकाँ अवशिष्ट। ओहि अवशिष्ट कें जाँचऽ लेल राजधानीएक एकटा प्रयोगशाला मे पठाओल गेल।

एमहर मीटिंग दिशाहीन भेल जा रहल छल ओमहर जाँच चलि रहल छल। एके घंटा मे जाँच रिपोर्ट आबि गेल। ओ अवशिष्ट सिलिकन तत्व आधारित कोनो यौगिक छल। साधारणतः धरती पर जे बालु भेटैत छै से होइत अछि सिलिकन डायक्साइड मुदा कागत आदि सब कार्बनक यौगिके रहैछ तें ने ओकरा जरेला सँ धधरा आ धुआँ उठैत छै, कार्बन डायक्साइड गैस सेहो बनैत छै। से सब किछु नहि भेल छलै। आब दूटा बात सोझाँ आएल—जे कोनो सभ्यता, जतए कतहु अछि, से अलग तरीका सँ कागत बनबैत अछि, ओ कार्बन आधारित अछिए नहि, अपितु अछि सिलिकन आधारित। कार्बन आ सिलिकन परमाणु संरचना मे बहुत समानता रखैत अछि जरूर मुदा सिलिकन के एतेक यौगिक धरती पर नहि भेटल छै। पर्यावरणक दृष्टिएँ जरूर

ई सभ्यता जतए कतहु होइ, बहुत उन्नत छल। एहन वस्तु सब आविष्कार केलक जे कोनो प्रदूषण करऽ बला नहि। धरती पर यदि कोनो देशक वैज्ञानिक एहि तरहक आविष्कार केने रहितथि तऽ एकरा गुप्त नहिए रखितथि। कारण एकर व्यावसायिक उपयोग बहुत छै, कोनो देश एहि तरहक उत्पाद सँ खरबो टाका कमा सकैत छल, पर्यावरण सुधार मे ओकर एकाधिकार बनिए जइतै। से सब किछु नहि भेल छै।

ओतबे नहि, लिखावटक मिथिलाक्षर सेहो अति प्राचीन रूपक भेटलै। एहन रूप प्रायः चारि पाँच सौ वर्ष पूर्वे लीखल जाइत रहल होएत। एकरहु सत्यापन लेल तत्काल राजधानी स्थित राष्ट्रीय अभिलेखागार सँ किछु प्राचीन मैथिली पोथी मँगाओल गेल, एकटा भाषा विशेषज्ञ सेहो बजाओल गेलाह आ कतेको तरहें विभिन्न आयुक लिखावट सँ ओकर मिलान कएल गेल। एहि आधार पर ई निष्कर्ष निकालल गेल जे जरूर ओ लोकनि कोनो प्राचीन सभ्यता सँ भेंट कऽ रहल छलाह।

एहि सँ ई तर्क तऽ काटि देल गेल जे हाल साल मे कोनो अपरिचित व्यक्ति आ कि मसीनी मानव मिथिला मे कतहु आबि कए मैथिली सिखने होथि जिनके प्रतिरूप एहि गोला रूपी जन्तु मे आबि रहल होअए। ई जानि लेला पर नेपाल सरकारक मदतिक आवश्यकता नहि बुझना गेलै। विदेश मंत्रालयक एकटा काज हल्लुक भेलै जरूर मुदा रहस्य बनले रहल।

स्थानीय जिलाधिकारी महोदय सँ पूछल गेल जे हुनका किछु विशेष बूझल छनि की। ओ एतबे जोड़लनि जे एहि सँ पहिने पछिला दू मास मे किछु गोला दूटा बच्चा सँ दोस्ती करबाक चेष्टा केने छल। एकटा लड़की संग बेसी दिन तक खेलाइ लेल अबैत रहल मुदा दोसर लड़का संग जखन खेलेबा लेल आएल तखने तऽ ओहि बैट मे भूर हेबाक घटना भेल छलै आ तकर बाद सेना आ अंतरिक्ष विभागक विशेषज्ञ लोकनि ओतए जाँच करबा लेल गेल छलाह। ओहि दूनू बच्चाक गतिविधि पर विशेष नजरि रखबा लेल ओ हेडमास्टर कें आ ओकरा दूनूक माता-पिता कें सेहो आदेश पठा देने छलखिन। अनधिकृत रूपें जानकारी भेटल छलनि जे दुर्गापूजाक अवसर पर तैराकी प्रतियोगिता के समय झील मे दर्शक लोकनिक एकटा नाओ डूबि गेल छलै। ओहि दुर्घटनाक समय कहाँदन अकास मे उड़ैत बीस-पचीस चिड़ै उतरि कए गोला बनि गेल छल, आ अपन रोबोटिक हाथक कौशल सँ सब लोक के जान बचा लेने छल।

हुनका एतबा सुनै मे आएल छलनि जे कियो ठक पंडित एहि गोला कें वरुण देवताक अवतार बताए गौआँ सब सँ विशेष पूजा पाठ करौने छलाह। ओहि पंडितक कहब छलै जे जाहि गाम मे पूजापाठ भेलै ओतए गोला अर्थात वरुण देवता फेर नहि

छलखिन ओ? आरतीक थार, चन्दन तिलक, प्रदीप, तेल, टेमी पर्यन्त सब किछु ओहिना आ किछुओ ने ओहन। देखबा मे कोनो अन्तर नहि, लगैत जेना जयनगर कि मधुबनी बजारक कीनल चीज वस्तु होइ किन्तु ठीक सँ जँचला पर अन्तर देखबा मे अबैत छलै। अन्तर कोना ने रहौ? एतबे कहाँक थोड़ जे एहि जलमग्न टापू पर कोनो तरहक नकले होइ। बधाइ के पात्र छथि ई लोकनि जे एतबो केलनि।

आरतीक बाद हिनका तीनू कें एक-एक गिलास किछु गर्म पेय देल गेल, जे ने चाह, काफी, ने छुच्छे दूध, ने मिश्रित पेय जेना कि हॉर्लिक्स, बॉर्नभिटा आदि सबसँ भिन्न किन्तु अपूर्व स्वादक स्फूर्तिदायक पेय। अनु कें लगलै कने मने चॉकलेट ड्रिंक जकाँ। ओ एकर पुछारि केलक तऽ कहल गेलै जे सब वस्तुक परिचय एक बेर बैसि कए देल जाएत।

तकर बाद शुरू भेल शासकीय समितिक सदस्य लोकनिक स्वागत भाषण। पुरान ढर्राक मैथिली, जाहि मे प्रचुर मात्रा मे संस्कृतक दुरूह शब्द सब मिझराएल, अतिथि लोकनि कें ठीक सँ बुझबा योग्य नहि भऽ रहल छलनि। सदस्य लोकनि खूब आह्लाद सँ अपन भाषण प्रस्तुत करैत गेलाह। शैलेशजी भाव विह्वल भऽ गेलथि। अन्त मे हुनको उचित बुझेलनि जे किछु बाजी। साइन्स ऑनर्स आ बैंकक अधिकारी, साहित्य सँ मामूली लगाव, शैलेशजी कें पहिल बेर अपन भाषण देबा मे शब्द चयन मे दिक्कत भऽ रहल छलनि। अध्यक्ष रिनि हिनका बहुत धन्यवाद देलखिन आ आशा व्यक्त केलखिन जे आब ओहि पावन मिथिला सँ नियमित रूपें लोकक आवाजाही बनल रहत।

स्वागत समारोहक बाद असि हिनका तीनू कें एकटा विशेष गाड़ी मे, जे खूजल जीप सदृश छलै, बैसा कए टापूक झाँकी देखेबा लेल विदा भेलाह। रस्ता मे अपना समाजक व्यवस्थाक वर्णन सेहो करैत जाथि। अनु अपन मम्मी-पापा कें जहिना बतौने छलै, सब कें देखलनि माथ पर एकटा पैघ अंक चमकैत। हिनका तीनू कें ओ अंक नहि रहला सँ आ शारीरिक बनाबट अलग रहला सँ ककरो चिन्हबा मे कोनो समस्या नहि होइत छलै। पूरा टापू मे घोषणा भेलै छलै जे एहि प्रकारक तीनटा अतिथि आबि रहल छथि से जेमहर असि जाथि, सब ठाम लोक अतिथि कें अभिवादन करनि। पूरा टापूक लोक हर्षित छल जे सैकड़ो सालक टूटल सम्पर्क आब जोड़ा रहल छलै आ धरती पर भेल विकास सँ सेहो ओ सब परिचित होएत।

असि पहिने हिनका तीनू कें लऽ गेलखिन चॉकलेट फैक्ट्री पर। अनुक मुह मे पानि आबि रहल छलै। असि कें बूझल छलनि। ओतए एकटा सेल्फी लेलाक बाद तीनू के एकटा चॉकलेटक पैकेट देलखिन। अनु जखन खाए लागल तखन ओकर

मम्मी-पापा सेहो चिखलनि ओहि मिष्ठान्न कें। वाह, की अद्‌भुत स्वाद ! अनुक मम्मी जीह पर गेल वस्तुक स्वाद कें परिचित कोनो स्वाद सँ तुलना करबाक चेष्टा केलनि मुदा सफल नहि भेलीह। मीठ तऽ छलैके किन्तु केहन मीठ? गुड़, चीनी, मधु, कि कोनो फलक मिठास किछु अन्दाज नहि लगलनि। अनुक पापा सेहो चीन्हि नहि सकलखिन। तहिना किछु मसालाक स्वाद बुझेलनि मुदा कोन मसाला से कहब सम्भव नहि।

आगू बढ़ला पर एक ठाम देखलनि लोक बड़का कड़ाह सब मे रीठा सदृश कोनो फर के मथि कए दूध बहार करैत। असि हुनका सब कें बतौलखिन जे ई फर समुद्री झार मे फड़ैत छै। एही दूधक व्यवहार ओ सब भोजन मे, दही बनबै मे, चॉकलेट बनबै मे करैत छथि। समुद्रक भीतर कोनो तरहक मवेसी नहि छलै, आ ने एखन तक कोनो एहन जानवर ओ सब खोजि पौलनि जकरा पोसि सकथि आ ओकर दूध उपयोग कऽ सकथि।

एकर आगू ओ देखलनि एक प्रकारक घासक खेत जे एतुका एकमात्र अनाजक स्रोत छलै। ने एकरा धान कहबै ने गहूम। दाना सेहो अनचिन्हारे। असि कहलखिन एकरा उसीन कए सुखा कए आटा बनाओल जाइत छै। इएह हिनका लोकनिक मुख्य भोजन छिएनि।

तकर बाद ओ सब पहुँचलाह एकटा पैघ मन्दिर परिसर पर। मन्दिर पूर्ण रूपें परिचित भेटलनि। अपने गाम सदृश शिव मन्दिर, विष्णु मन्दिर आ काली मन्दिर। गणेशजी सेहो अपन जगह छेकने। एतए एही देवताक पूजा होइत। राम आ कृष्ण एतए उपस्थित नहि छलाह। पुछला पर असि बतौलखिन जे हुनका लोकनि कें जे किछु शास्त्र पुराण उपलब्ध छनि ताहि अनुसार राम आ कृष्ण देवताक श्रेणी मे नहि अबैत छलाह।

आगू गेला पर देखलनि खेलक मैदान जाहि मे बच्चा सब कबड्डी खेलाइत। एक कात मे अलग अलग किछु जोड़ी विशेष क्रिकेट खेला रहल छल, जकर वर्णन सुशील कें बताओल गेल छलै। अनु कें एहि खेल सब मे कोनो रुचि नहि छलै। ओतहि कात मे एकटा बड़का हॉल छलै जाहि मे बहुत रास लोक तास, शतरंज, पचीसी आदि खेला रहल छलाह। बच्चा सब सेहो खेल सीख रहल छल। अनु ताकि रहल छल लड़की सब के झुंड जे करिया झुम्मरि खेलाइत हो। इएह टा खेल तऽ गोला असि ओकरा संग खेलाएल छलै। अनु कें नहि रहल गेलै, ओ असि सँ पूछि बैसल करिया झुम्मरि खेलेबाक बारे मे।

किछुए काल मे असि ओकरा लेने आबि गेल ओहि जगह पर जतए लड़की सब

खेलाइत छलै। एतए शवि नामक लड़की कें बजा अनु सँ परिचय करा देलकै, संगें खेलेबाक लेल कहि देलकै आ एक घंटा बाद केन्द्रीय पुस्तकालय लेने अबैक लेल बता देलकै।

तकर बाद हिनका दूनू कें लेने ओ फेर आबि गेल केन्द्रीय पुस्तकालय। एतहि अतिथि कक्ष मे हिनका लोकनिक रहबाक व्यवस्था छलनि। किछु काल मे महिलाक एक झुंड आबि विभारानी कें अपना संग लऽ गेलखिन। ओ हुनका सबहिक संग व्यस्त भऽ गेलीह गीतनाद आ कला आदिक चर्चा मे।

शैलेशजी कें छोड़ि देल गेल पुस्तकालय देखबा लेल। असि कें कहि ओ अपन सुटकेस मँगौलनि। ओहि मे सँ अक्षांस-देसान्तर नपै बला यंत्र निकाललनि। मुदा एहि जलमग्न टापू मे ओ यंत्र कोनो काज नहि केलकनि। पुस्तकालय मे ओ रेकर्ड सब देखि एक वर्षक सूर्योदय आ सूर्यास्तक समयक अध्ययन केलनि। एहि सँ अक्षांसक किछु अन्दाज भेलनि किन्तु मास लीखल नहि रहला सँ ओ बूझि नहि सकला जे ई उत्तरी गोलार्द्ध मे छै कि दक्षिणी गोलार्द्ध मे।

संध्याक भोजन बहुत विस्तार सँ बनाओल गेल छलै। शैलेशजी कें बुझा रहल छलनि जे समुद्रक पेन मे रहितो ई लोकनि पुरान मिथिला कें जोगा कए रखने छलाह। चीज वस्तुक अभाव रहितो समतुल्य वस्तु सब तकैत गेलाह आ तकर स्वादिष्ट व्यंजन बनाएब सीख लेलनि। विभारानी कें तऽ आश्चर्य लागि रहल छलनि विन्यास देखि कए। कुल एकैसटा व्यंजन। आब तऽ धरतीओक मिथिला मे लोक भोजनक विन्यास बिसरल जा रहल छल, नवतुरिया कें तिलकोरक बदला पनीर बेसी नीक लगैत छलै, माछक बदला चिकेन ओ सब बेसी पसिन्न करैत छल आ सब ठाम भनसाघर मैगीमय भऽ गेल छल।

भोजन सुस्वादु छलै मुदा किछु अन्तर छलैके। ओएह बात–सब किछु ओहिना आ किछुओ नहि ओहन। अस्तु, एतए तुलना करबाक काज नहि छलै, अपितु प्रशंसा करबाक काज छलै जे एतेक सीमित साधन मे रहितो कोना ई छोटछीन सभ्यता एतेक जोगार कऽ लेलक। शैलेश जी आ विभारानी भोजनक बहुत प्रशंसा केलखिन।

अगिला दिन तीनू अतिथि कें अपन अलग दिनचर्या छलनि। विभारानी महिला मंडलीक बीच हेरा गेलीह। हुनका लेल एतए कलाक भंडार भरल छलनि आ एही दू दिन मे ओ सब किछु समेटि लेबऽ चाहैत छलीह। एकटा कॉपी मे ओ प्राचीन गीत, जे असल मे बहुते पुरान मिथिलाक सभ्यताक प्रतीक छलै आ हुनका लेल नव लागि रहल छलनि, लिखैत रहलीह। तहिना चित्र आदिक नकल करैत रहलीह। एहि सबहक बीच समाजक किछु जानकारी सेहो लैत रहली। हिनका आश्चर्य लगैत

छलनि जे कियो ककरो शोर नहि पाड़ैत छलै। पुछला पर पता चललनि जे सब किछु टेलिपैथी सँ जोड़ल छै जे मस्तिष्क संचालित छै। “हमरा यदि पति कें किछु कहबाक होएत तऽ बजबैक कोनो काज नहि, टेलीपैथी लगाउ, मस्तिष्क के सम्पर्क भेल, जे अहाँ सोचबै से ओ बूझि जेता”–बुझेलखिन सुपि, जे लगले विभारानीक सखी बनि गेल छलीह। “वाह, तखन तऽ अहाँ सब इशारा नहिए सिखने हेबै?”–विभारानीक प्रश्न छल। “ओहो सिखने छिऐ, आँखि मारब, आँखि मटकाएब, मुह बिचकाएब, रूसब सेहो सिखने छियै किन्तु एकरा सबहिक काज बहुत कमे पड़ैत छै। ओतबे नहि, बच्चो सब एही तरीका सँ एक दोसरा सँ सम्पर्क करैत अछि। खाली स्कूल मे, सार्वजनिक मीटिंग मे, खेल खूद मे, कोनो प्रतियोगिता आदि मे एकर उपयोग वर्जित छै”–सुपि बता देलखिन।

बातचीत मे एकटा दोसर महिला अपन सामाजिक रीतिनीतिक चर्चा कए देलखिन–“एतए हमरा समाज मे सब दम्पति कें बच्चा होएब जरूरी नहि। जनसंख्या कंट्रोल मे रखबा लेल संतानोत्पत्ति पर प्रतिबंध छै। साल मे एक बेर लॉटरी होइत छै। जाहि दम्पतिक नाम लॉटरी मे बहरेलनि ओएह टा संतानोत्पत्ति कऽ सकैत छथि। एहि लॉटरी लेल कोनो उम्र सीमा नहि छै। तें सम्भव छै जे कोनो दम्पति कें पाँचोटा बच्चा होइनि आ बहुतो कें किछु नहि। किन्तु एहि लेल कोनो दुख ककरो नहि होइत छै कारण बच्चा सबहक पालन पोषण शासकीय समितिक विशेष शाखा करैत छै। माता-पिता कें कोनो चिन्ता-फिकिर नहि।”

विभारानी बातचीत सुनितो जाथि आ अपन गीतक भंडार सेहो बढ़ा रहल छलीह। हुनका मोने नहि अघाइत छलनि।

अनु बच्चा सबहक संग चल गेल स्कूल। ओकरा आश्चर्य लगलै जानि कए जे स्कूल मे विज्ञान आ गणित छोड़ि आन कोनो विषय के पढ़ाइ नहि होइत छलै। बच्चा सब खेलकूद, कला, साहित्य स्कूलक बाहर सीखैत छल। इतिहास बहुत कम, भूगोल एकदमे नहि आ तहिना समाज शास्त्र सेहो नहिए। स्कूलक बाद अनु भोजन केलक आ फेर लागि गेल बच्चा सबहक संग शतरंज खेलाए। ओ अपन लूरिक परीक्षा लेबए चाहैत छल एतुका बच्चा सबहक बीच। ओकरा विश्वास छलै जे ई सब अवश्ये बहुत नीक शतरंज खेलाइत होएत। सएह भेबो केलै। अनु कतेक गेम हारि गेल। किछु जितबो केलक किन्तु बहुत किछु नव चालि सिखबो केलक।

शैलेश जी असिक संग चल गेला फैक्ट्री, स्कूल, अस्पताल, अनुसंधानशाला आदि देखबा लेल। असि बतौलखिन जे एतए लोक साधारणतः बिमार नहि पड़ैत छल। खसि पड़ल तऽ हाड़ टूटब पैघ समस्या छलै। अस्पताल मे मुख्यतः ओहने रोगी

भेटलनि। यद्यपि ई सभ्यता मुख्य धारा सँ कटल छल तथापि बहुत उन्नत छल से अस्पतालक व्यवस्था देखले पर बुझबा मे आबि जाइ छलै। शरीरक कोनो हड्डी कें जोड़ब, अथवा बहुत नष्ट भेल हड्डी कें हटा कए दोसर टुकड़ीक प्रत्यर्पन करब एतुका डाक्टर लेल मामूली बात छलनि। शैलेशजी अस्पताल मे डाक्टर लोकनि सँ किछु गप केलनि।

तेसर दिन विभारानी ओहिना व्यस्त रहलीह। ओतुका महिला मंडलीक आग्रह पर धरतीक मिथिलाक आधुनिक स्वागत गीत "मंगलमय दिन आजु हे, पाहुन छथि आएल..." गाबि कए सुना देलखिन। ओहो लोकनि एहि गीत कें लीख रखलनि। विद्यापतिक कतोक गीत, जे टापू मे प्रचलित छलै, धरती पर लोक कें सुनले नहि छलै। एहन अमूल्य गीत सब कें अपना कॉपी मे लिखैत गेलीह।

शवि दुइए दिन मे अनुक नीक मित्र भऽ गेल छलै। ओ स्कूल सँ छुट्टी लऽ लेलक आ अनुक संग खेलाइत रहल। शैलेशजी असिक संग चल गेला टापूक किछु प्राकृतिक दृश्य देखबा लेल।

दिनक भोजन के बाद हिनका सब कें घुरबाक छलनि। एतबे समय मे विभारानी एतेक हिलमिल गेल छलीह जे बिछोहक पीड़ाक अनुभव भऽ रहल छलनि। अपन इच्छा छलनि किछु दिन रहि जेबाक किन्तु शैलेशजी कें जल्दी छलनि। ओ आपस जा कए प्रशासन कें अपन अनुभव सँ शीघ्रातिशीघ्र अवगत करबए चाहैत छलखिन।

ओहि टापू पर यद्यपि पाँच लाखक करीब जनसंख्या छलै, ओकरा कोनो प्रशासनिक टुकड़ी सब मे नहि बाँटल गेल छलै। ने अलग कोनो गाम ने कोनो ब्लॉक आदि। टोल जकाँ किछु छलै जरूर किन्तु से मात्र गृह निर्माणक सुविधा हेतु। लोक कतहु कखनहु जा-आबि सकैत छल। यद्यपि एतहु विवाहक बाद महिला पितृगृह सँ पतिगृह अबैत छलीह किन्तु बिछोहक कोनो उद्वेग नहि उठैत छलनि। तें बिछोहक पीड़ा सँ टापू वासी अनभिज्ञे जकाँ छलाह।

दुइये दिनक लेल जे विभारानी एतए एलखिन आ फेर लगले घुरि जाए लगलखिन तखन सम्भवतः पहिल बेर किछु महिलागण कें एहि नव पीड़ाक अनुभव भेलनि। सुपि तऽ घाड़ाजोड़ी कऽ कए कानए लगलखिन। जहिना विभारानी एतए सँ बहुत किछु सीख कए जा रहल छलीह तहिना ओ बिछोहक दंश टापूक लोक कें सिखा कए विदा भेलीह।

अन्त समय मे समितिक एगारहो सदस्य आबि हिनका सब कें विदा केलखिन। सुटकेस मे बहुत पैघ स्मारिका तऽ नहि, गीतक कॉपीक संग किछु फोटो जरूर देल छलनि।

असि तैयारे छलाह। अपन सवारी लदलनि आ विदा भेलाह उपर। ओहिना करीब दस मिनट मे सब उतरि गेल छलाह ओहि छत पर जतए कतेको बेर असि आएल गेल छलाह। सकुशल सब कें पहुँचाए ओ विदा लेलनि। शैलेशजी कें बुझेलनि जे गोला रूप मे रहितो पहिल बेर असि भावुक भऽ गेल होथि। दुइये दिन मे बिछोहक पीड़ा सम्पूर्ण टापू मे संक्रमण जकाँ पसरि गेल छलै।

अगिले दिन शैलेशजी जिलाधिकारी कें एकटा गोपनीय पत्र पठा देलखिन।

रहस्योद्घाटन

जिलाधिकारीक कार्यालय मे अनुक संग ओकर मम्मी-पापा एलखिन। हिनकर शर्त छल जे जिलाधिकारी पहिने एकसरे हुनकर खिस्सा सूनथि। तकर बाद जे उचित बूझथि से कार्रवाइ करथि।

एही प्रकारें व्यवस्था कएल गेल। सबटा स्टाफ कें हटा देल गेल आ शख्त आदेश जे हुनका कियो डिस्टर्व नहि करनि। अपन पीए कें कहि देलखिन जे मात्र मुख्यमंत्री कें छोड़ि आन कोनो मंत्री अथवा अफसरक फोन हुनका लग नहि पठाओल जाए।

शैलेशजी पहिने अनु कें अपन अनुभव वर्णन करबा लेल कहलखिन। अनु धखाइते शुरू केलक–"श्रीमान, अपने कें बुझले अछि जे एकटा उड़नछू गोला हमरा छत पर प्रायः दू मास तक दुपहरिया मे गोटेक घंटा लेल अबैत रहल, हमरा संग लूडो, शतरंज, ताश आदि खेलाइत रहल। एहि बारे मे हम ओही दिन कनकटोली हाइ स्कूलक हेडमास्टरक समक्ष अंतरिक्ष विभाग आ सेना मुख्यालयक दूनू विशेषज्ञ कें बता देने छलिएनि। गोला हमरा ओकर देशक बारे मे किछु कहने छल, ओ सत छलै की झूठ से तऽ हमरा नहि बूझल छल मुदा ओहो वर्णन हम हुनका दूनू कें बताइये देने छलिएनि।"

जिलाधिकारी महोदय स्वीकारोक्ति मे मूरी हिला देलनि।

आब अनु कने डराइत बाजल–"श्रीमान, हम एकेटा बात नुका रखलहुँ। गोला हमरा अन्तिम दिन जाइ काल कहने छल जे ओकर इच्छा छै लोक ओकर देश देखबा लेल जाए। ओ हमरा कहलक जे जखन गोला कें बजेबाक होइ तऽ तीन दिन तक लाल, पीयर आ हरियर रंगक गुड्डी उड़ा दै लेल। चारिम दिन ओ आबि जाएत। यदि बेसी लोक कें जेबाक होइ तऽ कारी रंगक गुड्डी सेहो उड़ा देबऽ लेल। तखन ओ ओही तरहें तैयार भऽ कए आओत।"

एहि बात पर जिलाधिकारी महोदय जरूर अप्रसन्न भेलाह आ अनु कें खिसिआइत

प्रश्न केलखिन–"तों ई बात किएक नुका रखलें? जनै छिही जे एहि लेल तोरा दुश्मन देशक मदति केनिहार बूझल जेतौ आ देशद्रोही बूझि ओही हिसाबें सजाए देल जेतौ।"

शैलेशजी जिलाधिकारी महोदय कें शान्त करैत कहलखिन–"अजुका खिस्सा समाप्त भेलाक उपरान्त अपने जे निर्णय लेब से सहर्ष स्वीकार करब।"

अनु कने निडर होइत बाजल–"कारण एखनहि अपने बूझि जेबै श्रीमान।"

जिलाधिकारी फेर ओकरा पुछलखिन–"झील मे तीन दिन तक जे गोला उतरल छलै तकरा तोंही बजौने छलही?"

"नहि श्रीमान, हम सब ओहि दिन तऽ देश मे रहबे नहि करी। ओएह खिस्सा तऽ सुनबए हम सब आएल छी।"

"ठीक छै, जल्दी-जल्दी कहि जो।"

अनु अपन पहिल दिनक यात्राक बारे मे बतौनाइ शुरू केलक। कोना ओ स्कूलक ट्वायलेटक पाछू सँ गुड्डी उड़ेलक, कोना मात्र पैंतीस मिनट लेल उड़नछू गोलाक देश गेल, जाहि मे दस मिनट जेबा मे, दस मिनट एबा मे लगलै, ओ पन्द्रह मिनट मे किछुए चीज देखि सकल छल। तकर बाद आबि कए सब अनुभव अपन मम्मी-पापा कें बतौलक आ हुनका दूनू कें ओहि देश कें देखि एबाक लेल मनौलक। तकर बादे ओ तीनू गोटे उड़नछू गोलाक संग तीन दिनक लेल गेल छल ओकर देश देखबा लेल। एकरे अनुभव आइ ओकर पापा जिलाधिकारी कें सुनबए आएल छथिन।

जिलाधिकारी महोदय आब चौंकला–"अहाँ तीनू गोटे ओहि देश कें देखि एलहुँ, कतहु कोनो खतराक आभास नहि भेल?"

शैलेशजी आब अपन खिस्सा शुरू केलनि–"श्रीमान कने ध्यान सँ सूनल जाओ। हम सब ओतेक कानून तऽ नहि बुझैत छी मुदा जे किछु कएल से देशहितक काजे सोचि कए। एकरा अपने रहस्योद्घाटन सेहो कहि सकैत छिऐ।

अनु जरूर बहुत खतरा उठौलक मुदा पहिल बेर ओकरा सकुशल घूरि एला सँ हमरो सब कें विश्वास भेल जे एहन यात्रा कएल जा सकैत छै। अनभिज्ञ जगहक यात्रा मे किछु खतरा आ रहस्य रोमांच तऽ रहिते छै। पहिल बेर जे कैलास पर्वत आ वैष्णो देवी गुफाक खोज केलनि हुनको एहन लागल हेतनि। तहिना कोलम्बस आ वास्को-ड-गामा कें सेहो जरूरे भेल हेतनि। अस्तु, अनुक योजनाक अनुसार गुड्डी उड़ा कए गोला कें बजाओल गेल। जेबाक दिन अनु कें स्कूल सँ छुट्टी दिया देलियै आ हमहूँ बैंक सँ छुट्टी लऽ लेल। अपने एहि बातक सत्यापन हेडमास्टर सँ कऽ सकैत छी।

पहिने एकटा बात बता दी श्रीमान जे एखन तक जतेक गोला अपना इलाका मे देखल गेलै से सब एकेटा नहि छलै। ओतुका विभिन्न लोक एहि रूप मे आबि रहल अछि, ओकरा सबहक उद्देश्य एतबे छै जे एतुका लोक कें अपना दिस ध्यान आकर्षित करए। एही लेल ओ सब विभिन्न करतब करैत अछि, आ लोक सँ दोस्ती करए चाहैत अछि। पहिल घटनाक दू साल बाद जखन ओ सब फेर आबए लागल तखन मात्र दूटा बच्चा सँ सम्पर्क केलक। अनु ओकरा संग दोस्ती करबा लेल तैयार भऽ गेलै। दोसर बच्चा अपन दुष्ट चालिक कारण दोस्त नहि बनि सकल आ ओ गोला निराश भऽ कए चल गेल।"

"माने सत्ते ओ गोला सब कोनो मनुष्यक रूप छलै?"–जिलाधिकारीक प्रश्न छलनि।

"जी सर"–शैलेशजी अपन यात्राक अनुभव विस्तृत रूपें हुनका सुना देलखिन।

"हम तऽ ओतुका कला, गीत-नाद देखि ततेक प्रभावित भेलहुँ जे तीनू दिन ओएह सब सिखबा मे बीत गेल। ओतए सँ अबैक मोने नहि होइत छल। ओतबे नहि सर, ओतुका भोजन विन्यास देखि तऽ आर चकित रहि गेलहुँ"–विभारानी जोड़लनि।

जिलाधिकारी मुसकिआइत चुटकी लेलखिन–"एतेक लोभ नहि देखाउ जे हम ऑफिसक काज छोड़ि एखनहि दौड़ि जाइ ओही टापू पर।"

शैलेशजी अपन खिस्सा आगू बढ़ौलनि–"विज्ञान आ टेक्नोलॉजी मे ओ जलमग्न सभ्यता हमरा सब सँ बहुत आगू बढ़ल अछि। ओहि सभ्यता मे वैज्ञानिक शब्दक अपन शब्दावली बनल छै जे संस्कृत-निष्ट बहुत जटिल शब्द सब छै। ओ बूझब कठिन। तें हम धरती पर प्रचलित समतुल्य शब्दक व्यवहार करैत अपन बात कहैत छी।

जनैत छिऐ सर, ओ गोला एक प्रकारक साइबोर्ग रूप छिऐ जाहि मे मनुष्यक दिमाग एकटा अतिसूक्ष्म कम्प्यूटर मे अपलोड कऽ देल जाइत छै। अपना देश मे ई एखन रिसर्चेक विषय छै मुदा ओतए एकर व्यवहार प्रायः सौ साल पुरान भऽ गेलै अछि। हम सब कार्बन नैनो रूप विकसित केलहुँ, ओतए मनुष्य सिलिकनक नैनो रूप विकसित करबे नहि केलक ओकर उपयोग सेहो आइ प्रायः सौ वर्ष सँ कऽ रहल अछि। ओकरा सबहक वैज्ञानिक विकासक कोनो जानकारी एतए लोक कें नहि छै।

हम हुनकर लाइब्रेरी सेहो देखल। सर, लगै छल जेना इतिहास भूगोल मे ओतए टाइम फ्रीज भऽ गेल छै। एतेक तक जे स्कूल मे बच्चा कें इतिहास, भूगोल पढ़ाएले नहि जाइत छै।

एकटा आर बात सर। ओ सब अपन मूल रूप मे बाहर नहि अबैत अछि तकर कारण छै जे एतेक दिन सँ जलमग्न रहला कारण ओकरा सब मे शारीरिक परिवर्तन जे आबि गेलैए से एतुका लोक कें आश्चर्यचकित करतै, लोक ओकरा सब कें भूत अथवा राक्षस आदि मानि बैसतै आ अपना लग आबहु नहि देतै। पारम्परिक तरीका जेना समुद्री जहाज आदि सँ यात्रा करब सम्भवे नहि कारण ओकर भौगोलिक स्थिति अज्ञात छै। साइबोर्ग रूप मे ओकर यात्राक वेग हजारो गुणा बेसी भऽ जाइत छै, दोसर बात जे ओ सब उड़िओ सकैत अछि, अंतरिक्ष यात्रा सेहो करैत रहल अछि। अंतरिक्ष मे कतहु अधिक जल बला ग्रह सेहो तकलक आ ओतए ओकर किछु दियाद सब जाकए बसियो गेल छै। एक हिसाबें बूझू अंतरिक्ष मे ओकर कोलोनी बनि चुकल छै।

अन्त मे सबसँ मुख्य बात श्रीमान जे ओ सभ्यता हमरा सब सँ दोस्ती भाव सँ सम्बन्ध बनबए चाहैत अछि। हम सब उड़नछू गोलाक आगमनक उद्देश्य बूझि नहि सकलियै, ओकरा शत्रु देशक जासूसी रोबोट आ कि कोनो पराग्रही आक्रमणकारी जन्तु बूझि बैसलियै। से बात नहि छै। एतेक दिन तक ओ सब एक हिसाबें नुकाएल रहैत छल कारण असुरक्षित महसूस करैत छल। आब तकनीकी रूप सँ बहुत सक्षम भऽ गेल अछि तखन उपर आबि रहल अछि।

तीन दिन तक हम पूरा परिवार ओतए रहलहुँ, बहुत किछु देखलियै, किछु फोटो अपनेक समक्ष रखैत छी, मात्र एतबे बुझबै लेल जे हमर गप कपोल कल्पना नहि, सत्य अछि। फोटो मे अपने ओतुका मनुष्यक रूपरंग, माथ मे झलकैत ओकर आधार संख्या आ ओतुका तकनीकी विकासक किछु झाँकी देखि सकैत छिऐक। ई फोटो सब ओतुके लोक द्वारा देल गेल अछि।

हम अपना संग ओहि जगहक भौगोलिक स्थिति जनबा लेल किछु यंत्र लेने गेल छलहुँ मुदा ओ काज नहि केलक। ओतुका पुस्तकालय मे सूर्योदय आ सूर्यास्तक समय लीखल छै। तकर अध्ययन जरूर कएल। एहि सँ अनुमान लगाओल जे हमरे सबहिक अक्षांसक आसपास ओकरो सबहिक टापू छै। एहि बात कें वैज्ञानिक अन्वेषण सँ पुष्टि करब जरूरी।

हमर निवेदन जे अपने हमर एहि सूचना कें उपर तक पठबियौ। ओहि देशक प्रतिनिधि लोकनि भेंट करबा लेल आतुरे छथि। हुनका लोकनि कें कखनहु बजाओल जा सकैत छै। एहि इलाका मे तऽ निश्चिते ओहिना गुड्डी उड़ा कए। यदि अपने राजधानी मे सीधे सम्पर्क करबए चाहब तऽ सेहो सम्भव हेतै, किन्तु ओकर तरीका हमरा बूझल नहि अछि।"

शैलेशजी एतेक कहि चुप भऽ गेलाह। जिलाधिकारी महोदय फोटो देखैत बड़ी काल तक चुपे रहलाह, तखन दीर्घ श्वास लैत बजलाह—"ई फोटो सब कोनो कम्प्यूटर मे फोटोशॉप अथवा अन्य सॉफ्टवेयर सँ सेहो बनाओल जा सकैत छै ने?"

"जी श्रीमान, फोटो तऽ बनि जेतै मुदा अपने कागत देखि लियौ। तें हम एकरा कम्प्यूटर अथवा मोबाइल मे नहि आनि प्रिंटे लेने आएल छी।" विभारानी अपन गीतक कॉपी निकालि सेहो हुनका देखए देलखिन।

जिलाधिकारी महोदय कागत पर ध्यान देलनि आ दिल्ली मे भेल मीटिंग के समय ओहि कागतक टुकड़ीक रहस्यमय बनाबट कें मोन पारलनि। हुनका अविश्वास करबाक गुंजाइस नहि रहलनि। तकर बाद ओ प्रश्न केलनि—"एहि बच्चाक टूर आ कि अहाँ सबके फेमिली टूरक बारे मे कतेक लोक बुझलक अछि?"

एहि प्रश्नक उत्तर अनुए देलक—"ककरो किछु नहि बूझल छै। अपने श्रीमान स्कूलो सँ पता लगा सकैत छी। यदि हम सब कतहु किछु बाजल रहितियै तऽ एखन तक पूरा इलाका घोल भऽ गेल रहितए। अपने कें सेहो कोनो ने कोनो सूत्र सँ खबरि भेटिए गेल रहैत।"

शैलेशजी जोड़लनि—"एकर गोपनीयताक महत्व हम सब बुझैत छिऐ श्रीमान। ओतए सँ घुरलाक बाद हम सबसँ पहिने अपनहि कें ओ गोपनीय पत्र लीखल जे हमरा सबकें किछु गप करबाक अछि। ओहि पत्रो मे एहन किछु नहिए लीखल छल जे अपनेक कोनो स्टाफ किछु बूझि सकैत। ई तऽ अपनेक महानता जे ओहि गोपनीय पत्रक आधार पर हमरा सब कें भेंट करबाक समय दऽ देल।"

जिलाधिकारी महोदय संतुष्ट होइत बजला—"बहुत नीक, एकरा आगुओ गोपनीये राखब जाबत हमरा आगूक रस्ता स्पष्ट नहि भऽ जाइत अछि।" हुनकर समस्या छलनि जे गोला सबहक संग बात कें आगू कोना बढ़ाओल जाए? खाली एहि व्यक्तिक वर्णन पर पटना-दिल्ली लीख देब उचित नहिए होएत। एहि शंका कें बतबैत ओ शैलेशजी कें पुछलखिन—"अपने जे कहलहुँ से यदि अक्षरशः सत्य हेबो करत तैयो मात्र एतबे सबूतक आधार पर हम की आगू कार्रवाइ कऽ सकब? एकेटा बात हमरा बुझबा मे आएल जे ई तथाकथिक उड़नछू गोला कोनो शत्रु देशक जासूस नहि थीक आ एकरा सँ डरेबाक बात नहि। से तऽ ठीक मुदा हमरा अपना ओहि सभ्यताक बारे मे कोनो जानकारी नहि अछि। हम सरकारी कर्मचारी छी, आन देश बिना सरकारक अनुमति के जाइयो नहि सकैत छी। तखन एकेटा उपाय बचैत अछि जे अहीं कोनो गोला सँ हमरा भेंट कराउ। जेना कि अहाँ सब देखलियै, ओ सब मैथिली बजैत अछि। तखन एक दोसरा सँ बात करबा मे कोनो समस्या नहि हेबाक

चाही। एकरा अहाँ आधिकारिक मीटिंग कहि सकैत छिऐ मुदा कम सँ कम एतबो यदि हम नहि कऽ ली तऽ खाली सूनल सुनाएल बात पर पटना-दिल्ली दौड़ब ठीक नहि होएत। ओतुका बड़का अधिकारी हमरा मूर्खे कहताह ने।"

ई बात शैलेशजी कें सेहो उचित बुझेलनि। ओ एक सप्ताहक समय मंगलनि जे गोला सँ सम्पर्क कऽ कए एकर व्यवस्था करताह। आजुक मीटिंग एतहि शेष भेल।

सुशीलक यात्रा

सुशील कें जतबे अपना पर तामस चढ़ै ओतबे ओकरा अनु सँ इर्ष्या होइ। ओ एकटा नीक अवसर गमा देने छल आ ई छोटछीन छौंड़ी कतेक बुधियारि भेल जे ओहि गोला सँ दोस्ती केलक, शतरंज सिखलक आ इलाका मे शतरंजक चैम्पियन बनि गेल। एकर विपरीत अपराध बोध सँ ग्रसित रहला कारण सुशीलक अपन खेल बहुत प्रभावित भेलै आ ओकर जगहँसी भेलै जे चैम्पियन सँ बनि गेल अदना खेलाड़ी।

एक बेर ओ अनु कें बजा कए ओकर खिस्सा फेर सँ सुनलक। अनु रटल तोता जकाँ ओतबे बाजल जतेक हाइ स्कूल पर बाजल छल। सुशील बहुत तरहें ओकरा सँ गोलाक देशक बारे मे किछु आर जानए चाहल मुदा सफल नहि भेल। ओकरा लागि रहल छलै जे अनु किछु नुका रहल अछि किन्तु ओकरा पेटक बात बुझबाक कोनो उपाय नहि छलै।

ओ अनुक जासूसी करए लागल। ओकरा विश्वास छलै जे कहियो ने कहियो गोला अनु सँ भेंट करबा लेल एतै जरूर। स्कूलक समय के बाद बेसी काल ओ अनुक घरक आसपास चक्कर काटए लागल। एही क्रम मे ओ देखलक जे एक दिन अनु छत पर अनेरे लाल, पीयर आ हरियर रंगक गुड्डी उड़ा रहल छलै। एखन ने गुड्डी उड़बैक कोनो सीजन छलै आ ने ओकर कोनो दोसर संगी लग-पास मे कतहु गुड्डी उड़ा रहल छलै। तखन एकर की माने? ओकरा आर बेसी आश्चर्य भेलै जखन अगिला दिन फेर ओ अनु कें ओएह तीन रंगक गुड्डी उड़बैत देखलक। आब ओ पड़ोसक छत पर चढ़ि एकर क्रियाकलाप देखऽ लागल। तेसरो दिन अनु कें गुड्डी उड़बैत देखलक। ओकर उत्सुकता बढ़ैत गेलै। पड़ोसीक छत पर अबैत सुशील कें अनु सेहो देखि लेने छलै। आब ओ साकांक्ष रहए लागल। चारिम दिन कतहु सँ एकटा गोला अकास सँ आबि अनुक छत पर उतरि गेलै। अनु ओकरा लेने चल गेल नीचा कोठरीक भीतर। सुशील चकित रहि गेल। ओ अनु आ गोलाक बीच भेल बात

तऽ नहि सुनि पौलक किन्तु ओकरा एतेक जरूर बुझबा मे आबि गेलै जे गुड्डी उड़ौनाइ गोला कें बजबै के तरीका छलै।

ओ अगिले दिन तीनू रंगक गुड्डी बनेलक आ उड़ाएब शुरू केलक। ओकरा तऽ ककरो डर नहि छलै जे चोरा नुका कए ई काज करितए। तीन दिन तक गुड्डी उड़ेलाक बाद चारिम दिन सत्ते मे एकटा गोला ओकरा लग उपस्थित भेलै आ पुछलकै जे ओ की चाहैत छल।

सुशील अनुक सुनाएल खिस्सा ओकरा सुना देलकै आ सोझे पुछलकै जे ओकर जलमग्न देश, जतए कतहु छै, कोना देखल जा सकैत छै। ओहि गोला कें सुशीलक दुष्टाह चरित्रक ज्ञान छलै तें ओ सुशील कें डरबैत कहलकै—"गेनाइ बहुत कठिन छै, खतरो बहुत छै, खास कऽ कए यदि विश्वासी लोक संग मे नहि रहल। कोन ठेकान कतहु छिटकी लगा दै तऽ सबहक जान चल जेतै।"

सुशील ओकरा आश्वस्त करैत कहलकै—"हम बूझि रहल छी, तों एना किएक बाजि रहल छें। हम अपन पछिला व्यवहार पर बहुत दुखी छी, एक हिसाबें बूझ जे प्रायश्चित्तो कऽ लेने छी आ फेर तोरा समाज सँ सेहो माफी मँगबा लेल तैयार छी, हमरा एकटा अवसर भेटए।"

गोला उत्तर देलकै—"बेस, तोहर ई सन्देश लऽ कए हम जाइ छी अपन देश। ओतए जे कोनो निर्णय हेतै, तोरा पन्द्रहम दिन एही समय एही स्थान पर हम स्वयं आबि खबरि कऽ देबौ।"

"एतेक दिन बाद? कने जल्दी नहि हेतै? हम तोहर देश जल्दी देखऽ चाहैत छी।"

"बुझलियै, किन्तु ई निर्णय हमरा हाथ मे नहि अछि कारण तोहर पछिला व्यवहार सँ ओतए सब लोक क्षुब्ध अछि। कियो नहि चाहैत अछि जे एहन लोक आबए जे हमरा देश मे कोनो तरहक झंझट बखेरा ठाढ़ करए।"

"ठीक छै, पन्द्रहम दिन हम तोहर प्रतीक्षा करबौ", सुशील हारल जुआरी जकाँ बाजल। गोला उड़ि गेल। जहिया सँ झील मे भेल नाओ दुर्घटना आ ओहि मे अनेको गोला द्वारा क्षणे मे उतरि सबके जान बचबैक प्रयास कएल गेल छलै, ओ एहि विचित्र गोला सब के प्रशंसक भऽ गेल छल। गोला सब नहि आएल रहितै तऽ ओकर दादी आ माए निश्चितें झील मे डूबि गेल रहितै। ओ बहुत व्यग्र छल गोलाक देश देखबा लेल।

अपन वचन के अनुसार नियत दिन गोला ओकरा सँ भेंट करए आबि गेलै आ ओकरा अपना देशक निर्णय सुना देलकै जे सुशील ओहि देश मे जा सकैत छल। सुशीलक खुसीक तऽ कोनो ठेकाने नहि। ओ तुरत्ते विदा हेबा लेल उद्यत छल मुदा

गोला ओकरा रोकि देलकै–"हम एखन तैयार भऽ कए नहि आएल छी, एक दू दिनक बाद कोनो समय निश्चित कऽ ले, हम तैयार भऽ कए आएब आ तोरा लऽ जेबौ। अपना संग कोनो सामान लऽ जेबाक जरूरति नहि छै। ओतए सब इन्तजाम कएल भेटतौ। ईहो बूझि ले जे ई कोनो ट्रेन, हवाइ जहाज आदिक यात्रा नहि हेतै, तों हमर हाथ पकड़मे आ हमरे संग उड़ैत चल जेमे।" सुशील कें ई बात कने अटपटाह लगलै जरूर किन्तु ओकरा अपना वश मे किछु नहि छलै। ओकरा किछु बूझल नहि छलै जे ई देश कतऽ छै आ कोना ओतए जाएल जा सकैत छै। ओ गोलाक सब बात मानि गेल आ तेसर दिन सबेरे एगारह बजे जेबाक नियार केलक। अनु जकाँ ओकरा गुपचुप किछु नहि करए पड़लै आ ओ निश्चिन्त छल जे घर मे कियो रोकतै नहि।

घर मे ओ सुना देलक जे एकाध दिनक लेल ओ कतहु जा रहल अछि। ओकरा सँ सम्पर्क नहि रहतै। जतए ओ जाएत ओतए मोबाइल सेवा चालू नहि छै। फुटबॉल, क्रिकेट आदि खेलक चक्कर मे सुशील एहिना किछु दिनक लेल घर सँ निकलि जाइत छल से ककरो किछु अजगुत नहि लगलै। ओ छत पर एगारह बजे गोलाक प्रतीक्षा करए लागल।

उपर अकास सँ ठीक समय पर गोला उतरि गेलै। अपन हाथ बहार कऽ कए कहलकै ओकरा पकड़ि लेबा लेल। गोलाक हाथ पकड़िते सुशील बिला गेल। तकर बाद की भेलै से किछु नहि बुझलकै। जखन जलक भीतर उतरल तखन ओ देश देखि कए ओकरा आश्चर्य सँ आँखि पसरि गेलै। एस्केलेरेटर, बच्चाक गाड़ी, घर, पुस्तकालय, जएह देखए, ओकरा आश्चर्य लगै। ओ अपन संगी गोला कें कहलकै जे सबसँ पहिने ओतए चलए जतए एतुका पैघ अधिकारी लोकनि सँ भेंट कऽ सकए आ सबसँ अपन पछिला दुर्व्यवहार लेल माफी माँगि सकए। ओ गोला, जे आब अपन स्वाभाविक मनुष्य रूप मे आबि गेल छल, ओकरा लेने गेलै केन्द्रीय पुस्तकालय। ओतहि एक कक्ष मे बैसल छलाह यमि, शासकीय समितिक सचिव महोदय। सुशील हुनका लग ठाढ़ भेल आ अपन परिचय देलक "हम अपनेक देश देखबा लेल आएल छी। अपने कें सम्भवतः बूझल होएत जे एक टा गोला करीब दू मास पहिने हमरहु सँ दोस्ती करए आ क्रिकेट खेलाक नव नियम सिखबए गेल छलाह। हम बहुत लज्जित छी जे हमर किछु गलती सँ ओ सम्पर्क टूटि गेल। हम एतए पहिने ओही व्यवहार लेल माफी मँगै लेल आएल छी।"

यमि कें मोन पड़लनि सबटा खिस्सा। सुशील कें ओ कहलखिन "अहाँक संग जे दोस्ती करए गेल छलाह सएह तऽ अहाँ कें एखनहु ओतए सँ अनलनि, ओएह जे पाछू मे ठाढ़ छथि, नाम हुनकर भेल किरि। अहाँ हुनके सँ माफी मँगियनु।"

किरि ओतहि ठाढ़ सब किछु सुनिए रहल छलाह। ओहुना सुशील सँ पछिला किछु दिन मे भेल वार्तालाप सँ हुनका बुझा गेल छलनि जे सत्ते मे एकरा अपना केलहा पर ग्लानि छै आ ई शुद्ध मोने प्रायश्चित्त करए चाहैत अछि। ओ यमि कें सम्बोधित करैत बजला–"हिनका सँ एतबे लिखा लेल जाए जे एतए रहैत स्थानीय लोक मे ककरो किछु गलत बात नहि सिखेथिन। ओना तऽ हमरा सब बातक पता चलिते रहत तैयो हिनका अपन व्यवहार मे सावधानी राखए पड़तनि। धरती पर जे किछु करथि, हमरा सब कें ओहि सँ कोनो मतलब नहि अछि। एतए किन्तु सम्हरिये कए रहए पड़तनि।"

सुशील सुनिए रहल छल सबटा। ओ फेर दूनू कें आश्वासन दैत बाजल–"हमरा एतए बहुत किछु नहि देखबाक अछि, खाली क्रिकेट आ फुटबॉलक नवका नियम सब सिखा देल जाओ आ यदि सम्भव होअए तऽ एक टा बैट आ बॉल सेहो देल जाओ।"

उत्तर यमि देलखिन–"खेल जतेक सीखब, सीखू, आराम सँ रहू, अहाँ हमरा सबहिक अतिथि छी। किन्तु बैट आ बॉल एखन किछु दिन हम सब नहि दऽ सकब। हम सब ओकरे प्रक्रिया मे छी जे कहुना कोनो सम्बन्ध स्थापित भऽ जाए तखन लोक आ चीज वस्तु दुनूक आदान प्रदान करबा सकब। एखन हम यदि ई दैयो देब तऽ अहाँ कें कानूनी झंझट भऽ जाएत। किरि, हिनका लेने जइअनु, पहिने चॉकलेट खुआ दिअनु तखन खेलक मैदान पहुँचा देबनि।"

सुशील ई सब बूझि नहि सकल, ओकरा लगलै जे ई बहन्ना बना रहल अछि। किन्तु अपना हाथ मे तऽ किछु नहि छलै। ओ किरिक संग गेल, चॉकलेट खेलक। चॉकलेट मुह मे दैतें लगलै जेना स्वर्ग पहुँचि गेल, एहन अपूर्व स्वादक कोनो चीज आइ तक नहि खेने छल। ओकर इच्छा भेलै खेल छोड़ि खाली चॉकलेटे खाइत रहए। किन्तु फेर सोचलक ओकरा पहिल यात्रा मे बहुत सम्हरि कए रहए पड़तै। बेसी लोभ देखाओत तऽ फेर लोक खराप ने बूझि लिअए। अपन लोभ कें दबैत ओ विदा भेल खेलक मैदान दिस।

मैदान मे किरि ओकरा मिसि नामक लड़का सँ परिचय करा देलकै। मिसि कें बुझा देलकै जे ई तोहर पाहुन मूल मिथिला देश सँ आएल छथुन। हिनका जे खेल मे रुचि छनि से सब मिल कए नीक जकाँ सिखा दहुन। एतबा कहि किरि ओतए सँ चल गेल।

सुशील मिसि कें कहलखिन जे ओ किछु काल तक खेला देखत, तकर बाद क्रिकेट पर अपन प्रैक्टिस करबाक कोशिश करत। मिसि तहिना केलक, सुशील कें

नीक जगह पर बैसा देलकनि आ अपने चल गेल खेलेबा लेल। सुशील ओकरा सबहिक खेल देखैत रहल। दू-दूटा बच्चाक जोड़ी करीब दस-पन्द्रह फुटक दूरी पर पिच बना कए खेला रहल छल। बहुत सधल प्रैक्टिस छलै, ककरो बैट कि गेंद बेसी दूर नहि जाइत छलै। गेंद फेकबाक स्टाइल तऽ ओहिना छलै, बूझू स्पिनर जेना फेकैत छै, किन्तु बैट फेकबाक तरीका एकदम नव छलै। ओ ध्यान सँ बच्चा सब कें देखैत रहल।

करीब आधा घंटा के बाद सुशील मिसि कें इशारा केलकै, ओ एकटा बैट लेने एलै। सुशील अलग सँ बैट फेकबाक प्रैक्टिस शुरू केलक। एतेक हल्लुक बैट फेकब कठिन काज छलै, कारण ने ओ गेंद जकाँ गोल छलै जे मुट्ठी मे आबि जइतै ने ओकरा झटहा जकाँ फेकबाक छलै। एतबे जोड़ लगेबाक छलै जे ओहि कातक स्टम्प तक चल जाइ। धीरे-धीरे सुशील ई लूरि सीखए लागल। किन्तु आइ अन्य बच्चा सबहक संग ओकरा खेलेबाक इच्छा नहि भेलै।

ओ मिसि कें कहलकै–"आइ हमरा अपनहि प्रैक्टिस मे समय बीत गेल। कालि दुपहरिया तक हम घुरियो जाएब। तखन एतए अहाँ सब संग खेलेबाक अवसर नहिए भेटल।"

"कोनो बात नहि, हम कालि स्कूल सँ छुट्टी लऽ लैत छी। अहाँ संग भोजनक बेर तक खेलाएब"–मिसि प्रस्ताव देलकै। एतेक विशिष्ट अतिथिक लेल एक दिनक छुट्टी लेब कोन बात भेलै? एहि लेल ओकरा स्कूल मे कोनो जबाब नहिए देबऽ पड़तै। सुशील खुसी-खुसी बैट लेनहि घुरल अपन विश्रामस्थल पर। एतहु ओ बैट फेकबाक प्रैक्टिस करिते रहल।

अगिला दिन जलपानक बाद सबेरे मिसि आबि गेलै ओकरा लेबा लेल। दूनू मिल कए तीन-चारि घंटा नवका क्रिकेट खेलेलक। पहिल दू घंटाक खेल मे तऽ सुशील हारिते रहल किन्तु ओकरा तकर कोनो चिन्ता नहि छलै। ओ अपन खेल सुधारि रहल छल। तेसर बाजी ओ जीत गेल। पहिल बेर एतेक कम समय मे एकदम अपरिचित जगह मे एकदम नव खेल जकरे सँ सिखलक ओकरे हरा देलक। ओ बहुत खुसी छल।

भोजनक बाद सुशील किरि कें कहलक आपस पहुँचा देबा लेल। जेबा सँ पहिने ओ एक बेर फेर सचिव यमि सँ भेंट केलक आ पुछलक–"यदि हम किछु आर संगी लऽ कए एतए आबि खेलाए चाही तऽ अपनेक अनुमति भेटतै?"

"अवश्य आउ, जखन एबाक होअए, एतुका लोक कें बजबैक तरीका बुझिए गेलियै, किरि सँ गप कऽ लिअऽ, ओएह अहाँ सब कें लऽ आनत आ फेर आपस

पहुँचा जाएत। एकेटा खियाल राखब जे जाबत सम्बन्ध स्थापित करबाक काज सम्पन्न नहि भेलैए, एक बेर मे तीन गोटे सँ बेसी नहि आएब।"

ओ किरिक पीठ पर सवार भेल आ कोन रस्तें अपना छत पर पहुँचल, किछु नहि बुझलक। ओकरा पाकिट मे खेलक समय लेल गेल चारि टा फोटो छलै। के ई फोटो लेलकै आ कखन ओकरा पाकिट मे राखि देलकै सेहो ओकरा किछु नहि बूझल भेलै। किरि उड़ि गेल छलै। आब ओकरा लागि रहल छलै जे ई दू दिन जेना सपना मे बितौने होअए, एहन सपना जाहि मे किछु लुरियो सीख लेलक ओ।

ओ दौड़ि गेल अपना संगी सब कें एहि सपनाक खिस्सा सुनबै लेल।

साक्षात्कार

अनु पापा-मम्मीक संग घुरि अबैत गेल अपन गाम। विचार भेलै जे गुड्डी उड़ा कए गोला कें फेर सँ एतए बजाओल जाए, ओकरा संग गप कऽ कए सब बात बुझाओल जाए आ तखन ओकर जे विचार हेतै ताहि अनुसारें जिलाधिकारी महोदय कें सूचित कएल जाए।

अगिले दिन सँ अनु फेर अपनहि छत सँ गुड्डी उड़बए लागल। चारिम दिन दुपहरिया मे ओएह असि नामक उड़नछू गोला प्रकट भेलै। पुछलकै—"फेर घुमै लेल जेबाक विचार छौ की?"

"नहि, पापा किछु जरूरी बात करए चाहैत छथुन। कालि तों साँझ खन आबि जो।"—अनुक उत्तर छल।

"ठीक छै"—एतेक कहि गोला उड़ि गेल।

अगिला दिन साँझ मे छत पर दूटा गोला अवतरित भेल। अनु हुनका दूनू कें भीतर लऽ गेल जतए मम्मी-पापा प्रतीक्षा कऽ रहल छलखिन। अनुक दोस्त असि बाजि उठल—"कहल जाओ की बात?"

"हम सब अपन यात्राक अनुभव एतुका जिलाधिकारी महोदय कें सुना देलिएनि। आब ओ अपने सब सँ आधिकारिक रूपें भेंट करए चाहैत छथि।"

"ई तऽ बहुते नीक भेल" दोसर गोला बाजि उठल—"हम सब इएह तऽ चाहिते छलहुँ। समस्या छलै जे एहि रूप मे यदि हम सब जिलाधिकारी अथवा अन्य कोनो सरकारी अधिकारीक कार्यालय मे अपनहि पहुँचि जइतियै तऽ ओतए हड़कम्प मचि जइतै, लोक हमरा सब कें पकड़बाक चेष्टा करैत आ बातचीत कखनहु सम्भव नहि होइत।"

"तें हम सब पहिने बच्चाक संग दोस्ती कऽ कए किछु विश्वास जगबए चाहैत छलियै जे काज आगू बढ़ए"—असि अपन योजना व्यक्त केलनि।

"ठीक छै, आब अहाँ सब अपना मे विचार करू जे कोन दिन जिलाधिकारी महोदय सँ भेंट करबनि। ओहि मीटिंग मे अपनेक सरकारक एकटा सीनियर अधिकारी जरूर रहथि। अपने सब किछु एहन यंत्र, सामान आदि जरूर अनबै जाहि सँ लोक कें अपनेक अद्वितीय सभ्यता हेबाक अकाट्य प्रमाण भेटै। बुझले अछि एतहु तकनीकी विकास बहुत भेल छै आ बहुत रास ठक लोक अनेको तरहक करतब देखा कोनो अजगुत सभ्यताक निर्माण कऽ लैत अछि, नकली उड़न तस्तरी देखा दैत अछि, जानवर कें अकास मे उड़ैत देखा दैत अछि, सबटा कम्प्यूटर के कमाल सँ। हमरा बेसी नहि कहए पड़त कारण अपने सब बुझिते छिऐ।"

"मीटिंग के समय यदि कोनो एहन प्रश्न आबि जाइ जे हम सब उत्तर नहि दऽ सकियै आ हमरा सब कें अपना देश सँ सम्पर्क करबाक जरूरति होअए तऽ से सम्भव हेतै की?"

"एहि लेल अहाँ सब कें की करए पड़त?"

"टेलीपैथी बला विशेष यंत्र लऽ कए आबए पड़त, एतबे। ओ यंत्र नहि रहत तखन सम्पर्क नहि कऽ सकबै।"

"संगें अनै मे हमरा तऽ कोनो हर्जा नहि बूझि पड़ैत अछि। जतेक हाइटेक यंत्र आ सामान आनब आ ओकर व्यवहार करब ताहि सँ नीके प्रभाव पड़बाक चाही।"

"बर बेस, हमरा सब कें दू दिनक समय दिअऽ, परसू एही बेर एतहि आबि अगिला प्रोग्रामक बारे मे बता देब। आब अनुमति भेटए।" अनु दूनू गोलाकें छत पर लेने आएल जतए सँ ओ उड़ि गेल।

ठीक समय पर तेसरा दिन असि नामक गोला आएल, शैलेशजी कें कहलकनि जे जिलाधिकारी सँ अगिला चारिम दिनक समय लऽ लिअऽ। करीब दू-तीन घंटा चाही। बहुत बेसी भीड़ नहि राखथि तऽ बढ़ियाँ कारण हम सब एखनहु चिड़ियाघरक जीव जकाँ लोकक मोन मे कौतुहल जगबैत छिऐ। कियो ढेपो फेकि सकैत अछि। संगहि हुनका सँ अनुमति लऽ लिअऽ जे अनु आ अहाँ दूनू गोटे हमरा सबहिक संग रहब।"

एही प्रकारें जिलाधिकारीक संग मीटिंग के व्यवस्था कएल गेल। पूरा मीटिंग के भीडियो रेकॉर्डिंग करेबाक इन्तजाम सेहो कएल गेल। नियत दिन पर तीनटा गोला अनुक छत पर अवतरित भेल। जिलाधिकारी महोदय स्थितिक गम्भीरता कें बुझैत हिनका सब लेल विशेष वाहनक व्यवस्था कऽ देने छलखिन। ओही वाहन सँ अनुक परिवारक संग तीनू गोला अलग-अलग बक्सा मे बन्द भेल जिलाधिकारीक ऑफिस पहुँचैत गेलाह।

सिपाही सबहक पहरा मे मीटिंग शुरू भेल। परिसर मे बहरिया लोकक प्रवेश वर्जित कऽ देल गेल। जिलाधिकारी अपन एकमात्र सहकर्मी के परिचय देलखिन नाम बता कए–हुनकर अति विश्वासपात्र आ गोपनीय टीमक सदस्य अरुणजी। एकर अतिरिक्त पटना सँ गृह विभागक संयुक्त सचिव श्रीमान अविनासजी आ दिल्ली सँ एक गोट वैज्ञानिक श्रीमान विवेकजी सेहो भीडियो कन्फरेंस माध्यमे उपस्थित छलाह।

तकर उपरान्त तीनू गोला सँ सेहो अपन परिचय देबा लेल कहल गेलनि। एकटा गोला सबकें बुझा देलखिन जे हुनक सभ्यता मे नाम होएब जरूरी नहि, तथापि एहि मीटिंग लेल अपन परिचय संख्याक संग नाम सेहो कहि देताह। असि, उति, आ यमि नामक तीनटा नव सभ्यताक सदस्य उपस्थित छथि एहि मीटिंग मे। यमि एखन ओतुका शासकीय समितिक सचिव छथि आ एहि तीनू मे सब सँ सीनियर बूझल जेबाक चाही। समितिक अध्यक्ष रिनि आ वैज्ञानिक मिति कोनो गूढ़ प्रश्नक उत्तर देबा लेल टेलीपैथी द्वारा सम्पर्क मे रहताह।

जिलाधिकारी फेर सबकें बुझा देलखिन–“एहि मीटिंग के मुख्य उद्येश्य अछि गोला सब कें अपन सभ्यताक परिचय देब, आ अपन उद्देश्य बताएब जे किएक ओ एहि देश मे बेर बेर विचित्र क्रियाकलाप सँ अपन उपस्थिति देखा रहल छथिन।” ओ सबकें चेता देलखिन जे एहि मीटिंग कें अति गोपनीय बूझल जाए आ कोनो रूप मे कतहु एकर चर्चा नहि कएल जाए। अनु आ ओकर मम्मी-पापा सेहो गोपनीयताक सपथ लेलनि।

गोला असि बाजब शुरू केलनि–“हम सब बहुत पुरान सभ्यता तऽ नहि छी मुदा इएह पाँच छओ सौ साल पुरान कहि सकैत छिऐ। हमरा सबहक पूर्वज एतहि मिथिले सँ गेल छलाह। हम सब एही पावन भूमिक सन्तान छी। हमर इतिहास जे बताओल गेल अछि तकर अनुसार करीब छओ सौ साल पहिने, जे कि मिथिलाक स्वर्णिम युग छलै, मिथिलाक तत्कालीन शासक कें अपन सीमा विस्तारक इच्छा भेलनि। एही सन्दर्भ मे पहिने ओ अंग, बंग जीतैत कलिंग कें अधीनस्थ केलनि आ तकर बाद सुदूर पूर्वक देश पर ध्यान केन्द्रित केलनि। मुदा समस्या छल जे मिथिला मे कहियो नौसेना भेबे नहि कएल। मिथिलाक सैनिक लोकनि कमला कोसी नदीक जल मे लड़ाइ करबा मे सक्षम छलाह, विभिन्न तरहक नाओ सेहो निर्माण करैत छलाह आ संचालन करैत छलाह मुदा समुद्रक कोनो ज्ञान हुनका लोकनि कें नहि छलनि। कलिंग विजय के बाद पहिल बेर हुनका लोकनिक ध्यान समुद्र दिस गेल।

हुनका लोकनि कें बुझबा मे आबि गेलनि जे कलिंगक सेना मे समुद्रक युद्ध

एकटा मुख्य अंग छै। ओतुका तटवर्ती इलाकाक लोक समुद्र मे यात्रा करबा मे होशियार छल। मिथिलाक शासक विचारलनि जे अपन किछु चूनल टुकड़ी कें कलिंगक नौसेना द्वारा प्रशिक्षित कएल जाए तऽ सुदूर पूर्वक अभियान आसान भऽ जाएत। ओना तऽ कलिंगक नौसेना लऽ कए एहि अभियान पर जा सकैत छला मुदा शंका छलनि जे कोन ठेकान यदि बीच समुद्र मे कतहु विद्रोह भऽ गेल तखन तऽ निःसहाय भऽ जाएब। तें अपन किछु दल कें प्रशिक्षित करब जरूरी बुझना गेलनि।

अस्तु, काज शुरू भेल आ बेरा-बेरी कतोक दल ट्रेन्ड भऽ गेल। एहने एकटा दल सुदूर समुद्रक खोज मे विदा भेल। शुरुएहि सँ ई ध्यान राखल गेल जे दल मे पुरुष आ महिला दूनू रहथि जाहि सँ कोनो नव देश मे गेला पर अपन समाज बढ़ेबा मे, आगू चलेबा मे कोनो समस्या नहि होअए। सब दल मे वेद सँ विद्यापति तक के पोथीक उन्नत पुस्तकालय सेहो रहैत छलै जाहि सँ कोनो नव देश मे अपन सभ्यताक प्रचार-प्रसार कएल जा सकए।

ई दल रस्ता भटकि गेल आ बहुत दूर तक चल गेल। निकटस्थ भूमि कतए छूटि गेलै से कोनो अन्दाज नहि।

भटकैत-भटकैत संयोग सँ ई दल पहुँचि गेल एकटा पैघ टापू पर। ओतए बसबाक उपक्रम मे लागि गेल किन्तु ओकर भौगोलिक स्थितिक कोनो ज्ञान नहि भेलै। किछुए वर्ष बाद धरतीमाताक कोनो कुचक्र सँ ओ टापू धीरे-धीरे नीचा दिस डूबए लगलै। आब ओहि बासी कें कोनो सहारा नहि। धीरे-धीरे ओ टापू चल गेलै समुद्रक तह मे। ईश्वरक इच्छा आ कि संयोग, जे कही, ओतए अति विशाल खोहि छलै जाहि मे टापू घोंसियां गेल। कहुना अपना कें बचबैत ई दल विश्व सँ कटि गेल मुदा जीवन सँ हारि नहि मानलक। समुद्रे एकरा सबहक रक्षक बनि गेलै। ओतए शनैः शनैः ई सब अपना के रहबाक अभ्यस्त बना लेलक।

शुरू मे ई लोकनि कोन कोन संघर्ष सँ गुजरलाह से आब पाँच सौ साल बाद हम सब तऽ नहिए बूझि सकैत छिऐ, मात्र किताबे टा मे पढ़ैत छी। हमर सामाजिक रीति नीतिक जानकारी तऽ शैलेशजी अपने कें देए देने छथि तें ओकरा दोहराएब उचित नहि होएत। बाहरी दुनिया सँ कटल रहला सँ हम सब धरतीक उपर के भूगोल इतिहास किछु नहि जनैत छी।

हमरा देशक भौगोलिक स्थिति हमरहु सबकें ठीक सँ नहि बूझल अछि तें हम सब अपने लोकनि कें ओतए जेबाक कोनो सोझ रस्ता नहि बता सकैत छी। हमर सभ्यता मे छोटछीन समाज रहितहुँ लोक अपनहि बहुत रास वैज्ञानिक आविष्कार केलक। ई आविष्कार बूझू आवश्यकताक कारणें होइत रहल। हम सब एखन बहुत

पैघ कम्प्यूटर फॉर्म चला लैत छी, प्रत्येक व्यक्ति लेल साइबोर्ग रूप मे परिवर्तित हेबाक व्यवस्था कऽ लेने छी। हम तीनू एतए साइबोर्गे रूप मे उपस्थित छी श्रीमान।"

जिलाधिकारी महोदय हिनका तीनू कें कहलखिन अपन मानवीय रूप धारण करबा लेल। ई सब असमर्थता प्रकट केलखिन। एकेटा सम्भव छल जे ओतए सामने मे उपस्थित कोनो व्यक्तिक डुप्लिकेट बनि जाथि। ताहि सँ मीटिंग मे बाधा हेबाक बेसी सम्भावना छलै, कारण भीडियो रेकॉर्डिंग चलि रहल छलै तें अन्त मे निर्णय भेल जे एहिना गोला रूप मे बनल रहल जाए।

अरुणजी प्रश्न केलखिन—"एतेक दिन तक अपने सब पोखरि मे, झील मे, अकास मे, जे विभिन्न करतब देखेलियै से कोना करैत छलियै किछु बता सकै छी?"

उत्तर देलनि उति—"एतए सब किछु कें दोहराएब तऽ फेर अपने सब मीटिंग छोड़ि भागि जाएब। एतबे बूझि लिअऽ जे हमर एहि रूप मे बाहरी आवरण मे अनेको सेन्सर लागल छै, आ किछु एहन सूक्ष्म यन्त्र जाहि सँ दू तरहें हम सब अपन रक्षा कऽ सकै छी—एक तऽ विभिन्न रंगक प्रकाश उत्सर्जित कऽ कए आ दोसर कने बिजलीक झटका लगा कए। संगहि किछु उच्च आवृत्तिक ध्वनि सेहो बहरा सकैत छै। हमरा सब कें आत्मरक्षा लेल एतेक उपाय करए पड़ैत अछि। लोक कहने होएत जे हम सब माछक शिकार करैत छी से मात्र देखेबा लेल, एतुका लोकक उत्सुकता जगेबाक लेल, हम सब एहि रूप मे कोनो तरहक भोजन कइए नहि सकैत छी। माछ पकड़ि जरूर लैत छलियै मुदा नजरि घुमा कए ओकरा फेर जल मे छोड़ि दैत छलियै।"

जिलाधिकारी आब प्रश्न केलखिन—"पहिल बेर ई गोला सब माहीपुरक पोखरि मे आ कनकटोली लग के चऽरक झील मे उतरल। तकर बाद दू सालक लेल कोनो घटना नहि भेलै। एकर की कारण?"

उत्तर देलखिन असि "श्रीमान, पहिनहि कहलहुँ जे हमरा सब कें धरतीक उपर के भूगोलक ज्ञान किछु नहि छल। हम सब जखन बाहर निकललहुँ तखन बूझू बौआइते रहैत छलहुँ। पहिल बेर जतए मैथिली बाजब सुनलियै ओतहि उतरि गेलहुँ ई सोचि जे एहि इलाका मे सम्बन्ध स्थापित कएल जा सकैत छै। अपन योजनाक अनुसार बच्चा सबहक बीच दोस्ती करबाक प्रयास करबाक छल। बहुत छोट बच्चा नहि जे गोला देखि डराइये जाइत, तहिना वयस्क लोक सेहो नहि जे कौतुहलवश हमरा सबहिक शिकार करबाक प्रयास करैत आ बातचीतक तादात्म्य कखनहु स्थापित हेबे नहि करैत। दस-बारह बरखक उमेरक बच्चा संग एकसरे मे दोस्ती करब नीक जँचल। किन्तु समस्या छल ओकरा कोना आकर्षित करबै, दोस्ती करब? एहि लेल चॉकलेट तऽ हमरा सब लग छल किन्तु बच्चा कें किछु काल संग रखबा

लेल एतुका खेल सबहक कोनो ज्ञान नहि छल। छओ सौ वर्ष के कटल सभ्यता लूडो कतए बुझितै? सब बच्चा शतरंज सँ आकर्षित नहिए होइत।

हम सब बच्चा सबहिक बीच अदृश्य रूपें आबि ई आधुनिक खेल सब सीखल। जतए कतहु बाहर मे, आङन मे, चबूतरा पर, चौकी पर बच्चा सब एहन खेल खेलाइत देखबा मे आबए, हम सब नुका कए बैसि जाइ आ सीखैत रही। एही क्रमें एकाध ठाम फेकल बोर्ड, गोटी आदि भेटल जे हम सब अपन टापू लऽ गेलहुँ प्रैक्टिस करबा लेल। एकसर खेलाइत बच्चा भेटब सेहो कठिन छलै ने। प्रायः दू वर्ष एही सब मे बीत गेल।

सोचियौ अपने श्रीमान, यदि एकटा गोला अपनेक एही कार्यालय परिसर मे उतरि जाइत आ चिचिया कए कहैत—"हम जिलाधिकारी महोदय संग मीटिंग करए चाहैत छी" तखन अपने लोकनिक की प्रतिक्रिया होइत? धन्य कही अनुक साहस के जे खतराक सब सम्भावना कें नकारैत हमरा संग जेबा लेल तैयार भेल। ओतबे नहि, ओकरे साहसक आधार पर शैलेशजी सपरिवार ओहि टापू कें देखलनि आ अपन अनुभव अपने कें कहलनि। अपने सबहिक उदारता आ जिज्ञासु स्वभावक कारण आइ हम तीनू गोटे एहि मीटिंग मे बैसल छी।"

असिक एहि व्याख्या पर ककरो सन्देह नहि भेलै। अविनासजी अपन महत्वपूर्ण प्रश्न दगलनि—"ओतए सरकार कोना बनैत छै आ सरकारी काज कोना संचालित होइत छै?"

एकर उत्तर देलखिन यमि—"सरकार आ सरकारी काजक गूढ़ अर्थ हम सब नहि बुझलहुँ। हमरा सब मात्र एगारह सदस्यक एकटा शासकीय समिति बनौने छी, जकर चुनाव सब साल होइत छै। एखन हम ओहि समितिक सचिव छी। किछु मास बाद चुनाव हेतै आ सदस्य लोकनि बदलि जेताह। कियो सदस्य दू साल सँ बेसी समिति मे नहि रहि सकैत छथि। एतबे व्यवस्था छै। काज संचालन एतेक छोट जनसंख्या लेल कोनो समस्या नहि छै, मिलि बैसि कए विचारि लेल जाइत छै।"

वैज्ञानिक विवेकजी प्रश्न केलखिन—"अहाँ सब जे खेला करैत छी, जेना कि पानि मे हेलनाइ, अकास मे उड़नाइ, माछ पकड़बाक अभिनय आदि एतए धरती पर विकसित कोनो ट्रेन्ड रोबोट सब किछु कए सकैत अछि। अपितु हमर तऽ कहब अछि जे अहाँ मे आ कोनो शत्रु देशक रोबोट जासूस मे कोनो अन्तर नहि छै। हमरा सब कें अहाँ कहैत छी जे संस्कृत आ मैथिली छोड़ि आन कोनो भाषा नहि जनैत छी, मुदा एकर की प्रमाण?"

उत्तर फेर यमि देलखिन—"श्रीमान, ई रोबोट शब्द हम अपनहि के मुह सँ सूनल

अछि। हम सब जे इंजीनियरिंग आ टेक्नोलोजी मे विकास कएल से अनु आ हुनकर पापा-मम्मी देखि आएल छथि। हमर तऽ इच्छे अछि जे अपने सब ओतए चली, सब किछु अपना आँखिएँ देखी। तैयो एतए अपने सबहिक जिज्ञासा शान्त करबा लेल हम दूटा वस्तु लेने आएल छी–एकटा गेंद जाहि सँ हमरा देश मे लोक क्रिकेट खेलाइत अछि, आ टेलीपैथीक व्यवस्था, जाहि सँ अपने सब एखनहि परिचित भऽ जाएब। गेंद राखि लेल जाओ अपन तकनीकी अध्ययन लेल। एहि सँ निश्चिते पता चलि जाएत जे हम सब धरती पर अवस्थित कोनो देशक जासूस छी अथवा स्वविकसित समाज। एहि मे किछु बात शैलेशजी सेहो बता सकैत छथि कारण ओ हमर सबहक देश घुमलनि आ पुस्तकालय आदि सेहो देखलनि।"

एहि पर शैलेशजी अपन स्पष्टीकरण देलखिन–"हम हिनका सबहिक पुस्तकालय मे बहुत समय बितौलहुँ। हिनका लोकनिक वैज्ञानिक विकासक अपन शब्दावली संस्कृत मे छनि आ बहुत जटिल शब्द सब छै। हमहीं मुख्य मुख्य शब्दक समतुल्य एतुका प्रचलित शब्द सब हिनका सब कें सिखाओल। यदि ई सब अपन मूल शब्द बजितथि तऽ मीटिंग मे किनको किछु बुझबा मे नहि अबैत।"

अविनासजी अगिला प्रश्न केलखिन–"हम सब कोना विश्वास करू जे अहाँक सभ्यताक दोसर सदस्य सब पृथ्वीक आन देश मे नहि गेल आ सम्बन्ध स्थापित नहि केलक। जहिना एतए तीनटा गोला हमरा सबहिक संग गप कऽ रहल छी तहिना कतहु आन देश मे ओहने गोला सब कोनो आन लोक सब के संग मीटिंग कऽ रहल होथि आ कि पहिनहि कऽ लेने होथि आ नियमित रूपें ओहो लोक अहाँक ओहि जलमग्न टापू मे जाइत-अबैत होथि से तऽ असम्भव नहि।"

एहि प्रश्न पर तीनू गोला कने घबरेला। फेर उत्तर यमि देलखिन–"अपनेक प्रश्नक उत्तर अपने स्वयं जानि सकैत छी। धरती पर कोन तरहक देश सब छै आ कतए की विकास भेल छै से हमरा सब कें कोनो ज्ञान नहि अछि। अपितु एतहु मिथिला मे वर्तमान मे कोन तरहक भूगोल छै, कोन तरहक प्रशासन छै आ कतए कोन तरहक विकास भेलै सेहो हम सब नहि जनैत छी। हमर पुरान पुस्तक सब मे धरतीक भूगोलक विस्तृत चर्चा भेटबो नहि कएल ने हम सब कहियो सीखल। एतेक छोट टापू आ मात्र किछु लाख के जनसंख्या बला जगह मे हम सब सेना नहि रखने छी। सेना आदिक जे किछु वर्णन हम सब पुरान किताब सब मे पढ़ने छी ताहि अनुसार हमरा सब कें सम्भवो नहि छल। भाग्यबस एखन तक हम सब कोनो तरहक आक्रमण सँ बचल छी। भविष्य मे की हेतै से हम नहि जनै छी।"

जिलाधिकारी महोदय आगू प्रश्न केलखिन–"कहू तऽ जे किछु दिन पहिने कनकटोली गाम लग झील मे जे गोला उतरल छल ओकरा पर सैकड़ो गोली बरसाओल गेलै मुदा ओकर कोनो असरि नहि पड़लै। से कोना सम्भव भेलै?"

एहि बेर उत्तर देलखिन उति–"श्रीमान, एकर सोझ उत्तर अछि जे हमर उपरका सतह सिलिकनक नैनो पदार्थ सँ बनल अछि। तहिना अछि ओ गेंद। एकर मजगूती एतेक बेसी छै जे कोनो साधारण शक्ति सँ एकरा तोरब सम्भव नहि। जरूरति भेला पर एकरा कने खोलल जा सकैत छै जाहि सँ हम सब यांत्रिक हाथ आ पाँखि बहार कए सकी। हमर ई रूप अपना ओजनक हजारो गुणा भार तक उठा सकैत अछि। एतुका चारिटा मनुष्य कें हम आसानी सँ उठा सकैत छी।"

वैज्ञानिक विवेक प्रश्न केलखिन–"करीब दू-अढ़ाइ साल पहिने एक बेर किछु मिनट लेल आकाश मे रंग बिरंगी सूर्य जकाँ किछु उगि आएल छल आ ओतबे काल हेतु हमरा सबहिक संचार व्यवस्था अस्तव्यस्त भऽ गेल छल। एहि विषय मे अहाँ सब कें किछु बूझल अछि?"

"जी श्रीमान, ओहि बेर अनेक गोला एक संग एतए आएल छल, जकर सम्मिलित प्रभाव सँ ओ दृश्य बनल छलै। हमरा सब कें नहि बूझल अछि कोन तरहक संचार टेक्नोलॉजी अपने सब व्यवहार करैत छी। यदि ओहि मे पैघ बिजलीक झटका बाधक होइ तऽ सम्भवतः ओना भेल हेतै। मुदा हमरा सब एहि सँ अनभिज्ञ छलहुँ। विश्वास राखू ई सब जे कएल गेलै से मात्र अपने सबहिक ध्यान आकर्षित करबा लेल, कोनो दुश्मनी भाव सँ नहि। मिथिला हमरा सबहिक मूल स्थान थिक, ओहि मातृभूमिक प्रति शत्रुता कोना करबै?"

विवेकजी अगिला प्रश्न दगलनि–"सूनल अछि अपने सब अंतरिक्ष यात्रा सेहो करैत छी, कतहु अंतरिक्ष मे अपन लोक सब कें सेहो बसौने छी। ई सब कोना सम्भव भेल?"

"साइबोर्ग रूप मे आबि गेला पर हमरा सब कें बाहर जेबाक साहस भेल। हमर इंजीनियर लोकनि पैघ पाइपक सहारा सँ समुद्रक नीचा सँ सतह तक एकटा सुरंग तैयार केलनि। ओहि बाटे हम सब बहुत जल्दीए बाहर निकलि कए उड़बा मे सक्षम भऽ गेलहुँ। तकर बाद अंतरिक्ष यात्रा आसान भऽ गेल। करीब पचास वर्ष पहिने हम सब अंतरिक्ष मे एक ठाम एहिना समुद्र देखल। ओतए अपन किछु लोक कें बसाओल।"

"अपनेक जलमग्न टापू पर कोन तकनीक सँ संचार व्यवस्था चलैत छै? अपने सब एखन एतए छी तऽ अपना देश सँ कोन तकनीक द्वारा सम्पर्क बनौने छी?"–विवेकजी अपन महत्वपूर्ण प्रश्न उठौलनि।

"एकर उत्तर लेल हमरा ओतहि अपन वैज्ञानिक कें पूछऽ पड़त। यदि आदेश हो तऽ हम हुनका संग सम्बन्ध स्थापित करी।"

"जरूर जरूर, हम सब एहि प्रश्नक उत्तर निश्चिते जानए चाहैत छी।"

असि किछु फुसफुसेलनि, हुनका माथ पर एकटा एन्टेना जकाँ दंड उगि आएल। ओ वैज्ञानिकक पूछल प्रश्न दोहरा देलखिन। कोनो बहुत दूर के जगह सँ उत्तर आएल–"संचार व्यवस्था कठिन नहि छै, मुदा अनुपम जरूर छै। बेसी विस्तार तऽ वैज्ञानिक लोकनि जखन एतए औताह तखने बुझथिन, एतबा हम बता दैत छी जे धरती पर एकरा स्थापित करबा मे ने कोनो बेसी खर्चा लगतै आ ने बेसी जगहेक काज हेतै।"

"खर्चक बात छोड़ू, की ओ तकनीक विद्युतचुम्बकीय तरंगक उपयोग करैत छै?"

"जी नहि, हम सब अन्य नाभिकीय कण के व्यवहार करैत छी।"

"अपने सब की चाहैत छी?"–जिलाधिकारी महोदय सब बात कें निचोरैत पुछलखिन।

"हम सब एहि देशक संग सम्बन्ध स्थापित करए चाहैत छी। अबैत छी हम सब एखनहुँ एहि इलाका मे किन्तु अनधिकृत रूपें, से ठीक नहि लगैत छै। एहन व्यवस्था हो जाहि सँ दूनू ठामक लोक अधिकार पूर्वक आएल गेल करथि, लूरि बुद्धिक आदान-प्रदान कऽ सकथि आ औद्योगिक प्रगति सँ परिचित होथि। तकनीकी विकास मे हम सब सहयोग करबा लेल सेहो तैयार छी। संगहि एहि पाँच-छओ सौ वर्षक अवधि मे हमरा सबहिक ज्ञान मे जे रिक्तता आबि गेल अछि तकरो हम सब भरए चाहैत छी।"–सचिव यमिक अनुरोध छल।

"मुदा एहि मे सबसँ पैघ बाधा अछि आवागमनक तरीका। एकेटा तरीका आ सेहो अहीं लोकनि कें बूझल अछि। मानि लिअऽ एतए सँ केओ यात्री गेल, ओकरा अपना घुरबाक कोनो उपाय नहि छै यदि अपने लोकनि मदति नहि करियै। यदि भविष्य मे कहियो सम्बन्ध मे कटुता आबि गेल तखन ओ यात्री सब फँसि जाएत।"–अविनासजी अपन शंका व्यक्त केलनि।

"से बात तऽ श्रीमान एखनहु धरतीए पर भऽ सकैत छै। यदि दू देशक बीच एना होइ आ एक देश दोसर देशक यात्री कें बन्दी बना लिअए तखन कोन उपाय हेतै?"–असि प्रतिप्रश्न केलखिन।

"धरती पर होइत झगड़ा लेल कम सँ कम जेनेवा कन्वेन्सन छै, यूएनओ छै, अन्तर्राष्ट्रीय कोर्ट कचहरी छै, किछु पंचैती कएल जा सकैत छै। ओतबे नहि, सेनाक सहायता सेहो लेल जा सकैत छै। मुदा अपने सबहिक देश एहि बन्धन सँ मुक्त अछि

तें ओतए खतरा बहुत बेसी छै।"–अरुण हुनका सबकें बुझा देलखिन।

"हमरा सबहिक देश मे युद्धक कोनो स्म्भावना नहि छै। पहिनहि बता देल जे हम सब कोनो प्रकारक सेना नहि रखने छी। जाहि तरहें हमरा सबहिक सभ्यताक विकास भेलै ओहि मे शत्रुक कोनो कल्पने नहि छलै। अपनेक डर हटेबाक लेल हम सब किछू चूनल लोक कें अपन तकनीक के प्रशिक्षण दऽ सकैत छी। तखन तऽ निश्चिन्त भऽ जाएब ने।"–यमि अपन पदक अनुरूप आश्वस्त करबै बला उत्तर देलखिन।

"एहि प्रस्ताव पर विचार कएल जाएत।"–अविनास जी बजला।

"हम सब कोनो अन्य उच्चाधिकारी सँ सेहो भेंट कऽ कए अपन पक्ष रखबा लेल तैयार छी। अपने कें कोड बुझले अछि, हमरा सब कें ओही कोड सँ बजाओल जा सकैत अछि। हम तऽ कहब जे निर्णय लेबा सँ पूर्व किछु अधिकारीगण हमर देश देखि आबथु, ई हमर आमंत्रण भेल।"–यमि अपन अनुरोध दोहरौलनि।

"अपनेक देशक भौगोलिक स्थिति जनबा लेल यदि एखन घुरबा काल एकटा छोटछीन चिप अपनेक शरीर पर साटि देल जाए तऽ कोनो हर्ज?"–वैज्ञानिक विवेक पुछलखिन।

"कोनो हर्ज नहि श्रीमान" यमि खुसी-खुसी उत्तर देलखिन। हुनका लागि रहल छलनि जे ई पैघ उपकार होएत।

"अपने सब देश, राज्य, मंडल, प्रमंडल आदि शासकीय इकाइ आदि के नाम आ काज, जे नागरिक शास्त्र मे पढ़ाओल जाइत छै, सँ परिचित छी?"–अविनासजीक जिज्ञासा छलनि।

"नहि श्रीमान, हम सब एहि रूप सब सँ परिचित नहि छी। इएह सब किछु तऽ ज्ञान मे रिक्तता अछि जे अपने सबहिक सम्पर्क मे आबि सीखए चाहैत छी।"

"सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रक्रिया जटिल छै, समय लागि सकैत छै। ताबत अपने सब एहिना अबैत जाइत रहू, जिनका अपन देश देखेबाक होअए, तिनका ओहिना उड़ा कए लऽ जइअनु, लऽ अबिअनु, प्रशासन दिश सँ कोनो बाधा नहि उपस्थित होएत। किछु विमर्श लेल अपने सब कें फेर बजाओल जा सकैत अछि आ हमहूँ सब प्रोग्राम बना कए एबे करब।" अविनासजी मीटिंग शेष होइ सँ पहिने अपन मन्तव्य सुना देलखिन।

"जेबा सँ पहिने अपने सब अल्पाहार कैए लेल जाओ", जिलाधिकारी ओतए उपस्थित सब व्यक्ति कें कहलखिन।

तीनू गोला एतबे कहलकनि–"श्रीमान, एहि सब लेल धन्यवाद। एहि रूप मे

हम सब कोनो भोजन करबा मे सक्षम नहि छी आ ने ओकर कोनो आवश्यकते रहैत छै।"

जेबा काल अरुण तीनू गोटेक शरीर मे एकटा छोट चिप साटि देलखिन। सब खुसी खुसी विदा भेलाह। विवेकजी एहि मीटिंग के बाद अपन रिपोर्ट सरकार कें पठौलनि—"अन्तरिक्ष विभागक अति गोपनीय यंत्र झील मे लगेबाक कोनो आवश्यकता नहि छै, ओहि सँ कोनो लाभ नहि होएत।"

एकर सूचना जिलाधिकारी कें सेहो भेटलनि। ओ सरपतिया चऽर मे चलैत काज कें तत्काल रोकबा देलखिन। झील मे जे किछु आकृति बनि गेल छलै तकरा तोड़बा देल गेल। झील अपन पुरान सौन्दर्य मे घुरि आएल।

टापूक खोज

जिलाधिकारी सँ भेल मीटिंग के फलस्वरूप उड़नछू गोलाक बारे मे बहुत किछु बात स्पष्ट भऽ गेल छलै। आब ओकरा सबहिक आएब जाएब आ विभिन्न क्रियाकलाप ओतेक रहस्यमय नहि लगैत छलै। आ ने ओकरा शत्रु मानबाक कोनो कारण छलै। बहुत किछु बात एखनहु रहस्ये बनल छलै तथापि खोज करबाक किछु सूत्र हाथ मे आबि रहल छलै।

मीटिंग के तत्काल बाद गेंद कें अंतरिक्ष विभागक नैनोलैब पठा देल गेल। ओतए जाँच केलाक बाद स्पष्ट भऽ गेलै जे कोना एहि तरहक गेंद सँ एतेक चिक्कन भूर सुशीलक क्रिकेट बैट मे भेल छलै। तैयो एहन पदार्थ बनाएब एतए सम्भव नहिए छलै। ई तऽ निश्चित भऽ गेल जे ई सभ्यता जतए कतहु छै, ओकर वैज्ञानिक आ तकनीकी प्रगति पृथ्वीक वर्तमान प्रगति सँ बहुत भिन्न आ उन्नत छै।

दिल्ली मे बैसल वैज्ञानिक विवेक अपन प्रयोगशाला मे गोला सबहिक शरीर मे साटल चिप सँ अबैत संकेतक अध्ययन कऽ रहल छलाह। उत्तरी प्रशान्त महासागर मे एक ठाम जा कए चिप संकेत देब बन्द कऽ देलकै। हुनका ओहि जगहक सही अक्षांस आ देसान्तर के पता लागि गेलनि। प्रिय पाठकवृन्द, एहि अति गोपनीय सूचना कें हम अपने सब कें बतबै सँ परहेज करब। विवेक कें बुझबा मे आबि गेलनि जे ओहि जगह पर गोला नीचा उतरब शुरू कऽ देलक। किएक चिप सँ संकेत आएब बन्द भेलै आ गोला कतेक नीचा गेल से एखनहु रहस्य बनले छलै।

आब प्रश्न उठलै ओतए कोना पहुँचल जाए। पहिने अंतरिक्ष विभाग कें भौगोलिक स्थिति बताओल गेल आ आग्रह कएल गेल जे अपन विभिन्न उपग्रह सँ ओहि इलाकाक जतेक चित्र लेल जा सकैत छलै से लऽ कए सूक्ष्म अध्ययन करथि आ हुनको एकर सूचना पठाबथि। करीब एक सप्ताहक बाद विवेक कें खबरि भेटलनि जे खास-खास समय मे कहियो कए ओहि इलाका मे करीब एक मीटर व्यास

के पाइप समुद्र तल सँ एक डेढ़ मीटर उपर उठैत छलै आ लगले बन्द भऽ कए जलक भीतर कम सँ कम दस मीटर गहराइ तक चल जाइत छलै। हाइ रिजोल्यूसन कैमराक चित्र सब अध्ययन केला सँ आसपास किछु सेमार सदृश वस्तु देखा पड़ैत छै जरूर किन्तु एहि लेल जहाज सँ लग जा कए अध्ययन जरूरी।

ओहि इलाकाक सर्वेक्षण कोना कएल जाए? पूरा प्रशान्त महासागर मे अमेरिका सहित अनेको देशक जहाज सब बौआइते रहैत छलै। नौसेनाक जहाज पठौला सँ सब देशक कान ठाढ़ भऽ जइतै जे किएक भारतीय नौसेनाक जहाज एहि सुदूर क्षेत्र मे आएल। यदि कोनो मालवाहक जहाजक मदति लेल जाइत तऽ बात कें गुप्त राखब सम्भव नहि बुझा रहल छलै। उच्चस्तरीय मीटिंग मे निर्णय लेल गेल जे ई काज नौसेना पर छोड़ि देल जाए, ओ जेना करए। नौसेना द्वारा एकटा गुप्त (Stealth) पनिडुब्बी विशेष रूप सँ तैयार कएल गेल। किछु चूनल नौसैनिकक संग कैप्टन अतुलक नेतृत्व मे वैज्ञानिक विवेक अपन सहकर्मी सलिल कें संग लऽ कए विदा भेलाह गोपनीय अभियान पर।

कैप्टन अतुल सैकड़ो पनिडुब्बी यात्राक अनुभवी छलाह आ अपना पनिडुब्बी कें नुका रखबा मे, जाहि सँ कोनो सोनार (SONAR) यंत्र द्वारा पकड़ल नहि जाथि, माहिर छलाह। निर्देशित जगह पर पहुँचब ओहि पनिडुब्बीक लेल कोनो कठिन काज नहि छलै। टेढ़-मेढ़ रस्ता सँ चलैत करीब दू सप्ताहक जलमग्न यात्राक बाद ओहि अक्षांस-देसान्तर पर पहुँचि गेलाह। ओतए पनिडुब्बी समुद्रक सतह पर आनल गेल। नीक संयोग कहू जे एहि इलाका मे दूर दूर तक कोनो जहाज नहि भेटलनि। वैज्ञानिक लोकनि इलाकाक अध्ययन करए लगला। कैप्टन अतुल सोनार यंत्र सँ आसपास जल मे डूबल वस्तुक खोज करए लगला। किछु नहि भेटलनि। एखनहु ई कहब कठिन छल जे कोनो गुप्त पनिडुब्बी कतहु नुकाएल अछि कि नहि।

जखन कोनो गोला उपर अबै अथवा भीतर जेबाक लेल उतरै तखन किछु क्षणक लेल एकटा पाइप उपर आबि जाइत छलै, ओकर ढक्कन अपने खुजि जाइत छलै, गोला कें बहरेला पर अथवा अन्दर ढुकि गेला पर ढक्कन अपने बन्द सेहो भऽ जाइत छलै आ फेर पाइप पानि मे डूबि जाइत छलै। कैप्टन अतुल कें एतेक विश्वास भऽ गेलनि जे एहि इलाका मे कोनो जहाज कहियो एबे नहि केलै। यदि आएल रहितै तऽ पाइप सँ टकराएल रहबे करितै आ एकर खोज भइए गेल रहितै। पाइप कें खोजबा लेल पनिडुब्बी पानि मे डूबल आ नीचा उतरए लागल। पाइपक ढक्कन करीब बीस मीटरक गहराइ पर भेटि गेलै। पाइप जाहि वस्तु सँ बनल छलै से प्रायः अभेद्य छलै। वैज्ञानिक सलिल ओहि पाइप सँ रेडियो तरंग पठबैक प्रयोग केलनि, तरंग परावर्तित भऽ गेलै। बुझबा मे आबि गेलनि जे किएक चिप सँ संकेत आएब बन्द भऽ गेल छलै।

आब पनिडुब्बी पाइप सँ सटि कए नीचा उतरए लागल जे नीचा समुद्रक पेन तक जा सकैत अछि की नहि। समुद्रक पेन सँ करीब पचास मीटर उपरे पाइप एकटा विशाल ग्रीनहाउस सदृश घेरा मे उतरि गेल छलै। एहि जगहक गहराइ प्रायः दस किलोमीटर छलै। पनिडुब्बी ओहि ग्रीनहाउस के चारू कात चक्कर लगबए लागल। ओहि घेराक देबालक मोटाइ के किछु अन्दाज जनबा लेल सलिल फेर प्रयोग केलनि। बहुत सही रिजल्ट तऽ नहि भेटलनि कारण एतहु पाइपे जकाँ सबटा तरंग शोषित भऽ जाइत छलै मुदा अनुमान लगौलनि जे दू अढ़ाइ मीटर सँ कम नहि छलै। बीच बीच मे देबाल पारदर्शी भऽ जाइत छलै। भीतर एकदम जीवन्त शहरक दृश्य। पूर्णतः आलोकित, सड़क सब पर रंग बिरंगी सिग्नल, लोक किन्तु ओएह उज्जर अथवा रंगीन ओवरऑल सदृश पोशाक मे। कतहु कतहु लोक सब नाच करैत, कतहु खेलक मैदान मे खेल करैत।

एक ठाम एहने पारदर्शी देबालक कात विवेकजीक अनुरोध पर पनिडुब्बी रुकि गेल। सब गोटे भीतरक सामूहिक नृत्यक आनन्द लेबऽ लगला। लागि रहल छलै जेना एखन कोनो पैघ उत्सव मनाओल जा रहल होइ। ओतए प्रकाश संयोजन एतेक सुन्दर छलै जे धरती पर बनाओल उत्तमोत्तम लेजर शो पर्यन्त एकरा तुलना मे तुच्छ लगैत। भीतर मे अनेक वाद्य यंत्र सेहो बाजि रहल छलै मुदा एतेक मोट देबालक बाहर किछु सुनबा मे नहि अबैत छलै। वादक लोकनिक हाथक गति सँ वाद्यक गुणक अन्दाज लगाओले जा सकैत छलै। महिला लोकनिक नृत्य मुद्रा, भाव-भंगिमा बहुते चित्ताकर्षक। कैप्टन अतुल भाव विभोर भऽ गेला। वैज्ञानिक विवेक चुटकी लेलखिन–"की यौ कैप्टन, सम्मोहित भऽ गेलहुँ की?"

"देखियौ विवेकजी, जेना अहीं एकरा सब के बारे मे बतौलहुँ, समस्त विश्व सँ सैकड़ो वर्ष सँ बिछुड़ल सभ्यता अछि। तेहन स्थिति मे एतेक सुन्दर प्रकाश संयोजन, एहन भावपूर्ण नृत्य अहाँ के आश्चर्यजनक नहि लगैत अछि की? धरतीक इंटरनेट तऽ एतए नहिएँ पहुँचल छै। कतए सिखलक ई नृत्य एतुका लोक? "–अतुल अपन वचाव मे तर्क देलखिन।

पनिडुब्बी फेर घुसकए लागल। प्रायः ठाम-ठाम पारदर्शी देबाल देखबा मे आएल। करीब दस किलोमीटर चललाक बाद पारदर्शी देबाल आ प्रकाश नहि देखैले, लगैत होइ जेना टापूक एहि भाग मे लोक नहि बसैत होअए। टापूक चारू कातक घेरा करीब एक सौ किलोमीटर छलै। जखन पनिडुब्बी पाइपक नजदीक आबि गेलै तखन

फेर पारदर्शी देबाल, आलोकित शहर आदि के दर्शन होबए लगलै। अभियान दल अनुमान लगेलक जे टापूक अधिकांश भाग जंगल आदि छलै। चारू कात घुरि अएलो पर कतहु कोनो प्रवेश द्वार नहि भेटलै।

फेर पनिडुब्बी उपर समुद्र तल पर आबि गेल आ वैज्ञानिक लोकनि लगला जाँचए जे कोन तरहें ढक्कन कें खोलल जा सकैत छै। पानिक भीतर ओ बहुत नीक सँ बन्द रहैत छलै। ओहुना पानिक दबाबक कारण ढक्कन अपनहि खुजिए नहि सकैत छलै। एकेटा उपाय छलै जे जखन ओ खुजै, कोनो जोगाड़ सँ ओकरा बन्द हेबा सँ रोकल जाए। जरूर ओहि मे विशेष सेन्सर लागल छलै जे गोला टा ओकरा खोलि सकैत छल। गोला सँ आब एतेक सम्बन्ध तऽ बनिए गेल छलै जे अपन उद्देश्य बतेला पर ढक्कन खोलबाओल जा सकए। मुदा वैज्ञानिक विवेक अपनहि स्कीम सँ ओहि मे उतरए चाहैत छलाह जाहि सँ टापू मे पहुँचला पर लोक कें अचम्भित कएल जा सकए। जखन एतेक नजदीक आबिए गेल छलाह तखन एहन स्कीम ताकब कठिन नहि छलै। खूजल ढक्कन कें रोकि रखबाक स्कीम हुनका दिमाग मे घुरिया रहल छलनि।

किन्तु समस्या दोसर छलै। दस किलोमीटर जलक दबाब ओ अपने कोना बर्दास्त करता? पनिडुब्बीक भीतर तऽ सुरक्षित छथि मुदा पाइप मे गेला पर अपना कें कोना बचेताह? नौसेनाक अधिकारी लोकनिक संग गप केलाक बाद ओ निर्णय लेलनि जे एहि बेर घुरि जाइ।

अगिला अभियान लेल दबाब प्रतिरोधी विशेष चैम्बर बनेबाक योजना बनल। विशेष चैम्बरक डिजाइन आरम्भ भेल। अति विशिष्ट नैनो-कम्पोजिट पदार्थ सँ एहन चैम्बर बनेबाक छलै जे एक मीटर सँ कने कम व्यास के होइ आ ओकर ओजन बहुत कम होइ। लम्बाइ दू मीटर राखल गेल, बाहर मे एकरा ठाढ़ करेबाक जोगार लगाओल गेल जाहि सँ ओहि मे ढुकल लोक ठाढ़ रहत अथवा नीचा खसा देला पर उतान भऽ कए सूति रहत। चैम्बर बनि गेला पर अभियान दलक सदस्य लोकनि ओहि चैम्बर मे ढुकि कए दिन भरि बितेबाक अभ्यास सेहो करैत गेला। जे सब अनुभव भेलनि ताहि हिसाबें चैम्बर मे विशेष वस्तु सब रखबैत गेलाह। चैम्बर कें समुद्रक पेन सँ उपर उठेबा लेल साधारण घिरनी (pulley) आ रस्सीक व्यवहार करबाक विचार भेल। सब चैम्बर के नीचा मे कार के डिक्की जकाँ एकटा पेटी बनाओल गेल जाहि मे अन्य जरूरियात सामान राखल गेल। एकरा भीतर आ बाहर दूनू कात सँ खोलल जा सकैत छल। ओहि चैम्बर मे सबटा ढक्कन, गेट आदि मस्तिष्क संचालित सेन्सर सँ खुजैत छलै।

तीनटा एहन चैम्बर तैयार करबा मे करीब चारि मास समय लागि गेलै। तीनूटा चैम्बर पनिडुब्बी मे रखबाओल गेल। फेर नौसेनाक ओएह दल अभियान पर विदा भेल। निर्धारित स्थान पर पहुँचि पनिडुब्बी उपर सतह पर आबि गेल आ प्रतीक्षा करए लागल कोनो गोलाक आवाजाही के, जाहि सँ ढक्कन खूजि जाइ। अन्दर जाइत गोला विशेष सुरक्षित बुझेलनि विवेकजी कें, कारण ओ तीव्र गतिएँ नीचा खसल चल जाइत रहत, ओकरा उपर उठा कए देखबाक कोनो युक्तिए नहि भेटतै। एकर विपरीत बाहर आबि गेल गोला तऽ उड़ैत रहैत आ सब किछु देखि सकैत छल।

खाली समय मे ओ सब अगल-बगल मे पसरल सेमार सदृश वस्तुक सूक्ष्म अध्ययन केलनि। विशेष रूपें निर्मित ई सेमार असल मे अद्‌भुत सोलर पैनल छलै। सब मे नैनो फाइवर लागल जे पाइपक बाहरी देबाल सँ साटल। फाइवर एतेक पैघ आ लचीला छलै जे समुद्र मे कतबो लहरि अबौ, पैनल सँ पाइपक सम्पर्क कखनहु नहि छुटैत छलै। ई फाइवर नीचा सूर्यक प्रकाशक संग बिजली सेहो लऽ जाइत छल।

अभियान दल कें दू दिनक बाद संयोग भेटलनि कोनो गोला द्वारा भीतर जेबा काल ढक्कन खुजबाक। विवेकजी अपन स्कीम लगा कए तैयारे छलाह। जखने ढक्कन खुजलै आ गोला ओहि मे ढुकल, पनिडुब्बी सँ एकटा पैघ छड़ी बहरेलै आ पाइप मे फँसि गेलै। ने ढक्कन बन्द भेलै आ ने पाइप नीचा उतरलै। विवेकजी, सलिलजी आ कैप्टन अतुल कें भीतर जेबाक छलनि। उपर एबाक लेल योजना बनल जे विवेकजी पाइप सँ लेजर टॉर्च चमकेता, ओ प्रकाश पनिडुब्बी पर पड़िते संकेत भेटि जेतै आ घिरनीक मोटर चालू भऽ जेतै।

ई तीन गोटे अपन अपन विशेष चैम्बर मे बन्द भेलाह, चैम्बर कें रस्सी सँ बान्हल गेल आ अन्य नौसैनिक सब हिनका तीनू कें ऊर्ध्व भावें ओहि पाइप मे खसा देलकनि जाहि सँ नीचा पहुँचला पर ओ सब ठाढ़े रहथि।

किछुए काल मे ओ सब टापूक धरातल पर छलाह। हुनका आश्चर्य लगलनि जे नीचा मे पाइप सँ बाहर निकलबाक लेल बेस नीक व्यवस्था बनल छलै। बेरा बेरी तीनू गोटे पाइप सँ बहराए सतह पर ठाढ़ भेला। हिनका तीनू कें अद्‌भुत चैम्बर मे ठाढ़ भेल जे देखलक से डर सँ किकिआए लागल। ओहि टापूक इतिहास मे ई घटना अप्रत्याशित छलै आ ओहिना अभूतपूर्व जहिना पहिल बेर माहीपुरक बड़की पोखरि मे उड़नछू गोलाक उतरब। अन्तर एतबे छलै जे ओतए लोक मे कौतुहल भेल छलै, एतए अतिशय भय सँ पूरा टापू “त्राहि माम्, त्राहि माम्” करए लागल। कियो टापूक खतरा बला साइरेन बजा देलकै। लोक सब यत्र-कुत्र भागए लागल।

वैज्ञानिक विवेक घोषणा केलनि—“अपने सब कें भयाक्रान्त हेबाक कोनो काज

नहि, हम सब कोनो शत्रु नहि छी, ओही मिथिला सँ आएल छी जतए अपने सब किछु दिन पहिने गेल छलियै मीटिंग करै लेल। अपने असि, उति आ यमि महोदय कें बजबियनु।"

एहि घोषणा सँ डराएल लोक सब कने शान्त भेल। किछुए काल मे यमि ओतए उपस्थित भेलाह। विवेकजी हुनका अपन परिचय देलखिन आ बतौलखिन जे हुनके लोकनिक सुरक्षाक तैयारी मे एहि तरहक अभियान चलाओल गेल। घबरेबाक कोनो बात नहि। ओ लोकनि एतए किछु घंटा रहताह आ सब किछु देखथिन। तकर बाद जाहि बाटें आएल छथि ओही बाटें घुरि जएताह। एहि बीच पाइप बाटें कोनो आवागमन नहि होआए।

हुनकर इच्छा छलनि जे पहिने शासकीय समितिक एकटा मीटिंग बजाओल जाए, जाहि मे अपन किछु विचार रखताह तकर बाद कोनो गाइडक संग अनुसंधान प्रयोगशाला सब देखबा लेल जेताह।

चटपट मे केन्द्रीय पुस्तकालय मे मीटिंग बजाओल गेल। समितिक नव चुनाव भेल छलै, यमि आब सचिव नहि छलाह, हुनका बदला किरि सचिव भेल छलखिन। एगारहो सदस्य उपस्थित भेला। ई तीनू गोटे अपना चैम्बर मे बन्द ठाढ़े ठाढ़ ओहि मे भाग लेलनि। हिनका सबहिक आग्रह पर यमि, असि आ उति सेहो उपस्थित भेला।

विवेकजी अपन बात शुरू केलनि–"हम सब एतए कोना पहुँचलहुँ से बूझब जरूरी नहि, एतबे बूझि लिअऽ जे अपने सब मिथिलाक सन्तान छी, आ हमरा सबहिक संग सम्बन्ध बनबैक इच्छुक छी, तें हमरा सबहिक ई कर्तव्य अछि जे एहि टापूक सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ कएल जाए। अपने सब सेना नहि रखने छी। नीके केने छी। एखन अपनेक जे व्यवस्था अछि से बहुत सीमा तक अभेद्य कहल जा सकैछ। किन्तु भविष्य मे की हेतै से नहि कहि। आइ अपनेक ओ गेंद यदि कोनो विकसित देशक हाथ पड़ि लागि जाइ तऽ ओहि मे उपयुक्त तकनीक कें खोजबा लेल ओ देश धरती आ समुद्रक एक एक इंच छानि मारत। एहन टेक्नोलॉजी धरतीओ पर विकसित भऽ गेल छै जे कतहु नुकाएल रहब बेसी दिन तक सम्भव नहि।

हमरा सबहिक बीच जाहि कोनो तरहक सम्बन्ध होएत, ओ मुख्यतः राजनैतिक निर्णय हेतै, किन्तु एतेक बूझि लेब जरूरी जे अपनेक एहि टापूक बाह्य सुरक्षा आब भारत सरकारक जिम्मा आबि गेलै।

हम राजनीति विज्ञान, इतिहास, समाज शास्त्र आदिक किछु आधुनिक किताब लेने आएल छी। अपने सब ओकर अध्ययन करू जाहि सँ अगिला मीटिंग मे

राजनीतिक प्रश्न सब के समुचित उत्तर दऽ सकबै आ अपन भविष्यक बारे मे निर्णय लऽ सकब।

आब हम अनुसंधान प्रयोगशाला सब देखब। एकटा गाइड संग कऽ देल जाओ"–विवेकजी अगुताएल छलाह। कैप्टन अतुल कें मोन मे किछु दोसरे योजना छलनि। हुनका प्रयोगशाला देखबा मे रुचि नहि छलनि।

"हमर टापूक मुख्य वैज्ञानिक मिति एतहि छथि, ओ समितिक सदस्य सेहो छथि, ओएह अपने सब कें सब किछु देखेता आ बुझेता"–ई कहि यमि मिति कें इशारा केलखिन। ओ आगू आबि एकटा वाहन पर बैसला आ पाछू मे हिनका दूनूक चैम्बर बान्हि लेलनि आ निकलि गेला।

कैप्टन अतुल किरि कें कहलखिन ओहि टापूक नृत्य केन्द्र देखेबा लेल जतए महिला लोकनि नाच सीखैत होथि। किरि खुसी-खुसी हुनका लेने गेलखिन ओहि स्थल पर आ दर्शक दीर्घा मे ठाढ़ करा देलखिन। अतुल एतए महिला लोकनिक नृत्य देखि विस्मित छलाह। संगहि एतुका महिलागणक सौन्दर्य पर मोहित भऽ गेला। आँखि आ नाक के बनाबट जरूर किछु परिवर्तित भऽ गेल छलै किन्तु एखनहु हिनका लोकनिक रूप लावण्यक तुलना मे कोनो बम्बइया सिनेतारिका तुच्छे लगतनि। किछु नृत्यांगना सँ ओ गपो केलनि। पता चललनि जे नृत्यक सब शैली एहि टापू मे अपनहि विकसित भेलै। विज्ञान आ इंजीनियरिंग के विकासक तुलना मे एहू विधाक विकास कोनो कम आश्चर्यजन्क नहि छलै।

मिति वैज्ञानिकद्वय कें अपन सबटा मुख्य प्रयोगशाला देखा देलखिन। समुद्र सँ कच्चा माल के उत्खनन, ओकर अनेक चरण मे प्रसंस्करण, तैयार धातुक विभिन्न उपयोग, नैनो लैब, अनेक तंरहक कम्पोजिट आदि बनेबाक उपकरण, सौर ऊर्जा भंडारण, कम्प्यूटर फार्म, साइबोर्ग प्रयोगशाला सब किछु विवेक आ सलिल कें उत्तम कोटिक बुझेलनि। किन्तु ओ दूनू भूखल छला देखबा लेल संचार यंत्र। मिति पहिने संचार सेवाक सिद्धान्त पर एकटा प्रेजेन्टेसन देलखिन तखन देखा देलखिन छोट ताजिया सदृश यंत्र जाहि मे ओ विशेष नाभिकीय कण बनैत छलै, जे विद्युतचुम्बकीय तरंगे जकाँ प्रकाशक वेग सँ चलैत छलै, कोना ओहि मे प्रसारित होइ बला संकेत मिज्झर कएल जाइत छलै, कोना ओकर संचारण (transmission), अभिग्रहण (reception), विश्लेषण (analysis) आदि होइत छलै, से अंग-अंग खोलि कए बुझा देलखिन। आब ओ दूनू धरतीक प्राणी संतुष्ट भेला। बहुत पैघ रहस्य सँ परदा हटल।

विवेक मिति सँ एकटा महत्वपूर्ण प्रश्न केलखिन–"हमरा ई अपने देखा देलहुँ,

बुझा देलहुँ, आत्मीय लोक जानि कए। की साधारण टूरिस्ट कें सेहो ई सब ओहिना देखेबै?"

मिति एहि प्रश्नक उत्तर नहि देलखिन। किछु काल चुप रहलाक बाद एतबे बजला–"एहि विषय पर हम सब विचार करबे नहि केलियै। समिति कें निर्णय लेबाक चाही।"

"जरूर, समिति मे अपने सदस्य छी। समय आबि गेल अछि जे एकदम फरिछा कए एक एकटा उत्पाद, कला, विज्ञान सब किछु के बारे मे बहस करू जे साधारण टूरिस्ट कें की सब देखेबै आ की नहि। संगहि जाहि इलाकाक वस्तु सब नहि देखेबै ओकरा कोना कए घेरब आ गोपनीय राखब ताहू लेल विचार विमर्श जरूरी। छोट टापू पर कियो टूरिस्ट टहलितो-टहलितो बहुत किछु अपनहि देखि लेत। ओ कतए जाएत आ कतए नहि से निर्णय हेबाक चाही।"

मिति जखन अपन काज समाप्त केलनि तखन विवेक हुनका सँ अनुरोध केलखिन–"हम किछु यंत्र अपनहु लेने आएल छी। अपनेक प्रयोगशाला मे अपने सबहिक उपस्थिति मे हम किछु प्रयोग करए चाहैत छी। एहि प्रयोगक जे किछु अवलोकन हेतै, तकरा अति गोपनीय राखल जाएत। की एकर अनुमति भेटतै?"

"कोनो तरहक विस्फोट, आगि, जल अथवा कोनो विषाक्त गैस आदि नहि ने बहरेतै? एतए हमर प्रयोगशाला कें कोनो क्षति नहि ने होएत?"

"से सब किछु नहि हेतै, अपने देखैत जइयौ"–विवेक हुनका आश्वस्त केलखिन। मिति मानि गेलखिन। विवेक तखन ईहो आग्रह केलखिन जे यदि ओ चाहथि, अपन कोनो दू-तीन सहकर्मी कें बजा सकैत छथि। मिति कें ई विचार पसिन्न पड़लनि। ओ दू गोटे कें बजौलनि।

विवेक सलिलक संग प्रयोग शुरू करबा सँ पहिने ओकर सिद्धान्त आ लक्ष्य उपस्थित वैज्ञानिक लोकनि कें बुझा देलखिन। रोबोटिक हाथ बहार कऽ कए अपन यंत्र सब खोलि सेहो सब कें परिचय करा देलखिन। तखन लगला प्रयोग करए। हुनकर मूल उद्देश्य छलनि सिलिकन आ कार्बन नैनो टेक्नोलॉजी मे समानता आ अन्तर बुझनाइ। करीब दू घंटा मे ई काज समाप्त भेल। तकर बाद ई सब घुरबाक योजना बनौलनि।

विदा हेबा काल मिति लजाइते पुछलखिन–"अपने सब पाइपक भीतर कोना ढुकलियै?"

विवेक कने मुसकिया देलनि। तखन हुनका बुझा देलखिन–"अपने वैज्ञानिक छी, बहुत किछु सोचि सकैत छी। अपने कें बूझल छल जे पछिला बेर जखन यमि

मीटिंग करबा लेल उपर गेल छलाह तखन हुनका गोला रूपी शरीर मे हम सब एकटा चिप साटि देने छलिएनि। ओएह चिप सँ प्राप्त संकेतक आधार पर विश्लेषण करैत हम सब समुद्र तल पर पाइपक जगह ताकि लेल। ओतए हम सब नौसेनाक पनिडुब्बी सँ आएल छलहुँ। अपने लोकनिक सोलर पैनल आदि सेहो अध्ययन कएल। ओही अध्ययन मे बुझलियै जे पाइप कोना खुजै आ बन्द होइत छै। बस, तकर बाद तऽ छोटछीन वैज्ञानिक बुद्धि।

किन्तु आब एही सम्बन्ध मे हमं किछु विशेष कहए चाहैत छी। जाबत लोक कें सन्देह नहि भेल छै ताबत बर बेस, जखने सन्देह हेतै, अनेकानेक उपग्रह मे लागल हाइ रिजोल्यूसन कैमरा द्वारा द्वारा ओकर फोटो लेल जा सकैत छै आ विस्तृत अध्ययन कएल जा सकैत छै। एखन अपने लोकनि कियो-कियो कखनहु कए उपर जाइत छी अथवा नीचा अबैत छी तखन ओ ढक्कन खुजैत छै। किन्तु सोचियौ जखन टूरिस्ट आबऽ लागत तखन आवागमन बढ़तै, पाइपक ओ ढक्कन दिन मे कतेक बेर खुजतै, बन्द हेतै। तखन उपर मे उपग्रह बला ओहि असंख्य आँखि सँ अपना कें कतेक दिन तक बचैने रहबै? ताही लेल ओहि जगहक नौसैनिक सुरक्षाक बहुत बेसी आवश्यकता भऽ गेलैए। ओतबे नहि, हम ईहो सलाह देब जे आब ओहने पाइप टापूक अन्य कतहु दूरस्थ भाग मे बैसा दियौ जाहि सँ एकेटा मार्ग नहि रहतै आ भीड़ कम हेतै। हमरा अहाँक बीच अनेकानेक विषय पर एखन विमर्श करबाक अछि। एखन हम सब चलैत छी।"

मिति अपन गाड़ी सँ हिनका दूनू कें ओहिना केन्द्रीय पुस्तकालय तक लेने एलखिन। कैप्टन अतुल पहिनहि सँ ओतए ठाढ़ छलाह। ओतए किरि आबि हिनका तीनू कें हाथ जोड़ि कहलखिन–"अपने सब अतिथि बनि कए एलियै, किन्तु एहन कवच मे बान्हल आएल छी जे हम सब कोनो तरहें सत्कार करबा मे असमर्थ छी। आर किछु नहि, एकटा तुच्छ वस्तु स्वीकार कएल जाओ।" ओ तीनू कें एकटा कए चॉकलेटक पैकेट देलखिन। ई तीनू अपन रोबोटिक हाथ सँ चॉकलेट लेलनि आ भितरे मे खेलनि। अपूर्व स्वाद। तीनू गोटे विश्वक प्रायः सब भाग मे घुमले छला मुदा कतहु एहि तरहक चॉकलेट नहि खेलनि।

घुरती मे यमि आ किरि विवेक कें अनुरोध केलखिन अपन सरकार सँ हिनका सबहिक बीच सम्बन्धक चर्चा करबा लेल। विवेक मोन पारि देलखिन ओहि किताब सब के बारे मे, कारण बहुत सम्भव छलै मीटिंग जल्दीए हेबाक।

पाइपक प्रवेश द्वार पर आबि विवेक लेजर टॉर्च सँ प्रकाश उपर फेकलनि, अपन तीनू चैम्बर कें लटकैत रस्सी सँ बन्हलनि आ उपर उठए लगला।

अभियान सँ घुरलाक बाद वैज्ञानिक विवेक अपन विस्तृत रिपोर्ट प्रधानमंत्री कार्यालय कें पठा देलखिन। संगहि अनुशंसा केलखिन जे अविलम्ब ओहि सभ्यताक संग उचित राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित कएल जाए जाहि सँ ओकर वैज्ञानिक लूरि हम सब शीघ्रातिशीघ्र सीखि सकी।

विवेकजीक रिपोर्ट पर अंतरिक्ष विभाग आ सेनाक विभिन्न अंगक मीटिंग भेल। विवेक बतौलनि जे अन्य वैज्ञानिक विकासक तुलना मे ओतुका संचार तकनीक अद्वितीय छै। विश्व मे एखन तक एहन तकनीक संचार लेल व्यवहार नहि कएल गेल छलै। भारत सरकारक आदेश सँ एकरा गोपनीये राखल गेल। हमहूँ बाध्य छी जे अपन पाठकगण कें ओ अद्वितीय सिद्धान्त नहि बता रहल छिएनि। मात्र अंतरिक्ष विभाग मे एकटा अति गोपनीय कोर कमेटी एकर सिद्धान्त सिखलक आ एकरा अपन कार्यक्रम लेल उपयोग करए लागल।

मिथिला प्रदेश

जलमग्न टापूक खोजक अभियान अपना गतिएँ चलल। एहि बीच माहीपुर गामक बच्चा सब कें कतेको बेर ओहि टापूक भीतर जेबाक अवसर भेटलै। पाठकगण, एतए स्पष्ट कए दी जे हिनका लोकनि कें जखन ओतुका गोला अपना संग लऽ जाइत छलनि तखन पाइप सँ उतरैते काल किछु एहन शारीरिक परिवर्तन आबि जाइत छलनि जे समुद्रक अतल गहराइ मे रहितो दबाबक अनुभव नहि होइत छलनि। वैज्ञानिक विवेक अपना अभियान मे गोला कें सम्मिलित नहि करए चाहैत छलाह, ओ अपना बुद्धिएँ धरतीक विज्ञानक अनुसार सब किछु केलनि। ताही कारण हुनका विशेष चैम्बर बनबए पड़लनि।

अनु गुड्डी उड़ा कए गोला कें बजबैक तरीका ककरो नहि कहने छलै। सुशील एकर खूब प्रचार केलक। इलाका मे सब कें बूझल भऽ गेलै जे तीन रंगक गुड्डी उड़ा कए गोला कें बजाओल जा सकैत छै किन्तु यात्राक खतरा कें सोचि किनको एहि तरहें टूर करबाक साहस नहि होइत छलनि। सुशील अपन टीम सँ एक खेप मे दू गोटे कें लऽ कए मासे मास ओतए जाइत रहल, खेला सब सीखैत आ खेलाइत रहल। ओहि जलमग्न टापू मे सेहो ओकर गिनती नीक खेलाड़ी मे होअए लगलै। आब ओ एकदम परिवर्तित सुशील छल। 'भेड़िया आया' बला सुशील जेना मरि गेल हो आ नवका सच्चरित्र सुशील जन्म लेने होअए। अपराधबोध सँ मुक्त भेला पर स्कूलहु मे ओकर क्रिकेट आ फुटबॉल खेला सुधरए लगलए।

अनु कें जलमग्न टापूक किछु स्थानीय बच्चा सब सँ घनिष्ठ मित्रता भऽ गेल छलै। तहिना ओकर मम्मी पहिले यात्रा मे बहुत रास महिला संग सखी-बहिनपाक सम्बन्ध स्थापित कऽ लेलनि। हुनका ओहि ठाम प्राचीन भित्तिकला, चित्रकला आ गीतनाद बहुत नीक लगलनि से सिखबा लेल नियमित रूपें जाए लगली। अनुक पापा जरूरे अपन बैंक सेवा मे व्यस्त छलाह आ हुनका दोसर बेर समुद्रक भीतर टूर

करबाक अवसर नहि भेटलनि।

टापूक खोज भऽ गेल। एतुका वैज्ञानिक दल ओतए पहुँचबा मे सफल भेल। आब ओतए जेबा-एबा लेल गोला सबहिक सहायताक आवश्यकता नहि रहि गेलै। वैज्ञानिक विवेक शीघ्रातिशीघ्र ओहि टापूक वैज्ञानिक विकासक लाभ उठबए चाहैत छलाह। भारत सरकार पर दबाब बनल राजनीतिक सम्बन्ध बनाबक हेतु, कारण एखनहु ई निश्चित रूपें नहि कहल जाए सकैत छल जे आन कोनो देश ओहि टापूक खोज नहिए केलक।

एहि जलमग्न सभ्यता सँ कोन तरहक सम्बन्ध स्थापित कएल जाए? एहि पर विदेश विभाग मे बहुत माथापच्ची भेल। ई तऽ धरतीक कोनो देश नहि छलै, देशक नामो नहि छलै, यूएनओक सदस्य नहि छलै। संगहि एकरा लग किछु अति विकसित तकनीकी जानकारी छलै जकरा गोपनीय रखबाक छलै। एहन स्थिति मे दिल्लीक दूतावासक मध्य एकरा कोन देश बता कए दूतावास खोलल जइतए? दोसर पेंच समस्या छल जे ई गोला सब तऽ उपरे सँ उड़ैत देश मे प्रवेश कऽ जाएत। एकर कोन पासपोर्ट चेक करबै, कोना एकरा लेल कस्टम्स चेकपोस्ट बनाएब, ई अपना संग की आनत आ की लऽ जाएत तकर कोना हिसाब राखब?

एहि बहसक बीच एकटा कनिष्ठ अधिकारी अति क्रांतिकारी प्रस्ताव देलखिन– "की हम सब मानि बैसल छी जे ओ स्वतंत्र देश छै? एखन तक एहन कोनो संकेत हमरा सब कें नहि भेटल अछि। यदि हम सब ओहि भूखंड कें देशक एकटा राज्य बना दियै तऽ सब समस्या अपनहि खतम भऽ जाएत। ओकर सुरक्षाक भार हम सब उठाइये लेलियै। यदि हवाइ द्वीप आ अलास्का सन भूखंड संयुक्त राज्य अमेरिकाक राज्यक रूप मे रहि सकैत छै, अंडमान द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप जखन भारतक अंग बनल रहि सकैत अछि तखन समुद्रक गर्भ मे बसल एकटा छोट टापू भारतक राज्य किएक नहि बनि सकत?"

बात सबकें नीक लगलै। जलमग्न टापूक समाज हमरा सबहक संग सम्बन्ध स्थापित करए चाहैत छल, धरतीक सभ्यताक संग आब आगू आबऽ चाहैत छल। किन्तु हुनका सबहिक की इच्छा आकांक्षा छनि से नहि बूझल छलै लोक कें। एकर फरिछौहटि हुनका सबहक संग मीटिंग कइए कए होएत।

एखनहु मीटिंग लेल स्थानीय जिलाधिकारी कें आयोजनक भार देल गेल। ओ शैलेशजी कें खबरि पठा देलखिन–"कोनो गोला कें बजाए खबरि कऽ दिअनु जे हुनकर समितिक उच्चाधिकारी सब के संग भारत सरकारक प्रतिनिधि सम्बन्धक स्वरूप पर चर्चा करए चाहैत छथि। जतेक जल्दी ई मीटिंग आयोजित भऽ सकए

ओतेक नीक। आगूक प्रक्रिया जल्दी शुरू कऽ देल जाएत।"

शैलेशजी तहिना केलनि, असि बजाओल गेलाह, खबरि पठाओल गेल, ओतए अपना मे बहस भेल आ एक सप्ताह बादक समय लेल गेल। ओहि मीटिंग मे समितिक अध्यक्ष रिनि आ सचिव किरि उपस्थित छलाह। हुनका संग शैलेशजी आएल रहथि जिलाधिकारी कार्यालय।

भारत सरकार दिस सँ विदेश विभागक संयुक्त सचिव श्रीमान राजेश आ अवर सचिव श्रीमान तुफैल भीडियो लिंक द्वारा भाग लेलनि। राजेशजी ओहि जलमग्न सभ्यताक प्रतिनिधि लोकनि कें दूटा विकल्पक प्रस्ताव देलखिन। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय प्रचलन के अनुसार ई दूनू विकल्प एहि तरहें छल–

"पहिल विकल्प भेल स्वतंत्र देश। एहि लेल चाही अपन मुद्रा, संविधान, शासन तंत्र, विश्वक कोनो देश द्वारा मान्यता, अपन रक्षा करबाक क्षमता आदि, जे यूएनओ के चार्टर मे लीखल छै। भारत मान्यता देबा लेल आ रक्षा करबा लेल तैयार अछि किन्तु तखन रक्षाक खर्च किछुओ अंश वहन करए पड़त। ई कोन रूप मे होएत से विस्तार सँ चर्चा करए पड़त। जरूरी नहि जे एहि लेल मुद्रा देल जाए। यदि भारत सरकार कें अति दुर्लभ धातु सब, जकर उत्पादन समुद्रक पेन मे नीक जकाँ होइत छै, उचित मूल्यांकनक बाद देल जाइ तऽ एकटा नीक विनिमयक रस्ता खूजि सकत।

भारतक अतिरिक्त आन देश संग कोन तरहक सम्बन्ध बनाएब से अपनहि विचार करब। निकट भविष्य मे फेर यूएनओक सदस्यता लेल आवेदन देब जरूरी होएत। एहि लेल प्रतिनिधि कें कतेको मीटिंग मे जाएब जरूरी। संगहि विश्व मे प्रचलित संचार तकनीक सेहो लगबए पड़त। सब ठाम ई ठीको नहि होएत जे अपन गोपनीय तकनीक लगा दियै आ ने विश्वक सब देश एकर व्यवहारे कऽ पाओत।

स्वतंत्र देश बनला सँ स्वाभाविक छै जे पूरा विश्वक टूरिस्ट ओतए आओत। एकरा लेल साधारणतः एक प्रकारक परमिट, जकरा 'वीजा' कहल जाइत छै, देबए पड़ैत छै। अहाँक देश मे ओएह प्रवेश कऽ सकत जकरा वैध वीजा रहतैक आ ओतबे दिन रहि सकत जतेक दिन अहाँ चाहबै। एहि सब काज लेल एतए भारतक राजधानी दिल्ली मे दूतावास खोलए पड़त। अपना ओहि ठाम सेहो चेक आ कन्ट्रोलक व्यवस्था बनबए पड़त। कोनो टूरिस्ट एहन सामान लऽ कए नहि जाए जाहि सँ ओहि टापू कें कोनो तरहक क्षति पहुँचै। एहि तरहक बहुत बात छै जे विस्तार सँ आधुनिक राजनीति शास्त्रक अध्ययन केला पर बुझबै।"

ई प्रस्ताव सूनि लेला पर रिनि प्रश्न केलखिन–"की मुद्रा चलबै लेल आ ओकर मानकीकरण लेल भारत सरकारक सहायता भेटि सकैछ?"

"भारत सरकार अपने सब कें सब तरहें मदति करबा लेल प्रतिबद्ध अछि। जाबत अपने सब अपना पएर पर ठाढ़ नहि भऽ जाएब ताबत जे किछु सहायता मँगबै सब भेटत। एहि सब लेल एकटा द्विपक्षीय करार आवश्यक होएत। एतबे"–तुफैल स्पष्टीकरण देलखिन।

राजेशजी अपन प्रस्तावक चर्चा चालू रखलनि–"दोसर विकल्प अछि भारतक एकटा राज्य। एहि लेल किछु नहि करबाक अछि, जहिना काज करैत छी तहिना करैत रहू। भारत मे कतहु आवाजाही पर कोनो रोकटोक नहि रहत। एकेटा बात– यदि अपने सब साइबोर्ग रूप मे अबैत रहबै तऽ ओहि लेल भारत सरकार कें किछु नियम कानून बनबए पड़तै, कारण एखन तक भारतक सीमाक भीतर साइबोर्ग रूप मे कियो नहि चलैत फिरैत अछि। दोसर ईहो कारण रहतै जे एतुका लोक अपने सब कें कोनो शत्रु देशक रोबोट जासूस नहि बूझि लिअए ताहि लेल एक प्रकारक परिचय पत्र राखऽ पड़त। एतुका कोनो राज्यक पुलिस यदि माँगत तऽ ओ परिचय पत्र देखबए पड़त। एतहु सब नागरिक कें परिचय पत्र रहितहि छै।

राज्य बनि गेला सँ जहिना एतए धरती पर एक राज्य सँ दोसर राज्य लोक टूरिस्ट रूपें अथवा नोकरी करबा लेल जाइत अछि तहिना ओतहु जाएत। ओतेक गहराइ पर धरतीक लोक कोना रहत तकर तकनीकी समाधान दूनू ठामक वैज्ञानिक मिलि कए ताकि लेता।

अपने सबहिक जे किछु वैज्ञानिक अनुसंधान गोपनीय रखबाक अछि से भारत सरकारक नियम द्वारा गोपनीय राखल जाएत। एहि मे कोनो बाधा उत्पन्न नहि होएत, अपितु बूझि लिअऽ जे नीके रहत। भारत सरकार मे अनेको अनुसंधान काज कें गोपनीय राखल जाइते छै, सबटाक लेल समुचित नियम बनल छै आ ओकरा चुनबाक लेल स्थापित प्रक्रिया छै। टापू मे प्रचलित अपन रीति नीति, सामाजिक व्यवहार सब किछु सुरक्षित राखि सकैत छी, जेना एतए बहुतो जनजाति करैत अछि। अपने सब कें ओही तरहक संरक्षण भेटत जाहि तरहक संरक्षण अंडमान द्वीपक मूल निवासी सब कें छै।

विदेशी टूरिस्ट लेल सब प्रक्रिया भारत सरकारक अधीन रहतै। ओहि टापू मे जेबा लेल अलग सँ नियम बना लेल जेतै जेना कि एखन देशक कतेक भाग मे परमिट सिस्टम छै।"

एहि पर उपस्थित जिलाधिकारी महोदय राजेशजी सँ अनुमति लैत अपन बात रखलनि–"सुनबा मे आएल अछि जे हिनका लोकनिक किछु दियाद अंतरिक्ष मे कोनो ग्रह पर, जतए एहिना समुद्र छै, सेहो रहैत छथिन। ओकरा बारे मे हिनका

लोकनिक विचार सेहो पूछल जाए आ भारत सरकारक की सिद्धान्त होइछ सेहो हिनका लोकनि कें बता देल जाए।"

रिनि अपन स्पष्टीकरण देलखिन–"ओना हम सब भारत सरकारक कोनो निर्णय के विरोध नहि करबनि, किन्तु एतबे कहब जे ओहि ग्रह कें हमरा लोकनिक अधीन नहि बूझल जाए।"

राजेशजी हुनकर दुविधा कें बुझैत सरकारक नीति बता देलखिन–"अंतरिक्ष लेल एखन कोनो देश अधिकार करबाक स्थिति मे नहि एलैकए। वर्तमान मे अंतरिक्ष कें विभिन्न देशक प्रतिस्पर्धा सँ काते राखल गेल छै।"

ई सूनि किरि आ रिनि दूनू बहुत आश्वस्त भेलाह। किरि कने धखाइते बजला– " की राज्यक नाम मिथिला राज्य देल जा सकैत छै?"

फेर बुझेलखिन श्रीमान तुफैल–"अपने सब यदि ओहने निर्णय लेबै आ अपना समिति द्वारा सर्वसम्मति सँ प्रस्ताव पास करा कए भारत सरकार कें पठा देबै तऽ जरूरे एहि पर विचार कएल जाएत।"

"एहि दूनू प्रस्ताव पर अपना मे विस्तार सँ चर्चा करए पड़त। हम सब एक मास बाद अपन चूनल प्रस्ताव शैलशजी द्वारा पठा देब"–किरि अनुरोध केलखिन।

ई विचार सबकें नीक लगलै। एतेक पैघ निर्णय लेल एक मासक समय किछु नहि भेलै। राजेशजी उपस्थित सब व्यक्ति कें धन्यवाद दैत मीटिंग समाप्तिक घोषणा केलनि। किरि आ निमि, जे ओहिना एखनहु गोलाक रूप मे छला, कें संग कए शैलेशजी आबि गेलाह अपना गाम।

ओतए उड़बा सँ पहिने किरि शैलेशजी कें बतौलखिन–"हम सब आधुनिक राजनीति शास्त्र आ अन्तर्राष्ट्रीय प्रचलन किछु नहि बूझि रहल छिऐ। पछिला बेर वैज्ञानिक विवेक किछु पोथी लेने आएल छलाह तकर अध्ययन कऽ रहल छी। राजनीति शास्त्रक गूढ़ विन्दु पर हम सब अनिर्णयक स्थिति मे आबि सकैत छी। तेहना स्थिति मे अपने कें मदति करए पड़त।" शैलेशजी सब तरहक मदतिक आश्वासन देलखिन आ गोला रूपी पाहुन सब उड़ि गेला अपना घर।

टापू पहुँचि किरि तत्काले समितिक एकटा आपातकालीन मीटिंग बजौलनि, सब सदस्य कें भारत सरकारक विदेश मंत्रालय सँ भेल मीटिंग के बारे मे जानकारी देलखिन आ दूनू वैकल्पिक प्रस्तावक प्रति सब कें बाँटि देलखिन। सब सदस्य कें पन्द्रह दिनक भीतर एकर गहन अध्ययन करैत अपन विचार देबा लेल अनुरोध कएल गेल।

पन्द्रह दिन बाद समितिक मीटिंग बजाओल गेल। ओहि मे वैज्ञानिक मिति

अपन विचार रखलनि—"हमरा सब एकटा पैघ डेग उठा लेने छी। गलती कहियौ कि ठीक, पहिल बेर भेल मीटिंग के बाद जे चिप साटि देल गेल ताहि सँ वैज्ञानिक लोकनि कें भौगोलिक स्थितिक पता लागिए गेलनि। हम सब अपनहु दिस सँ विज्ञान आ टेक्नोलॉजीक प्रगतिक चर्चा करबे केलहुँ, हुनका लोकनि कें एतए एबाक आ एकर जानकारी देबाक नोते दऽ एलिएनि। ओहो सब होशियारी देखौलनि, बिना हमरा सबकें कोनो पूर्व सूचना देने अपनहि बुद्धिएँ एतए पहुँचि गेलाह। ओहू समय हमरा सँ फेर कहू एकटा गलती भैए गेल आ सब किछु देखा-बुझा देलिएनि। आब हम सब हुनका लोकनि कें एतए एबा सँ कोनो तरहें नहि रोकि सकैत छिएनि। तखन स्वतंत्र देशक जे किछु मानदंड होइ, हम सब कोना कए ओकरा लागू करब? वैज्ञानिक विवेक हमरा व्यावहारिक बुद्धि देलनि जे अनेरे जकरा-तकरा एतेक गोपनीय जानकारी नहि उपलब्ध कराबी। हम सब अपने कहियो एहि दृष्टिकोणें सोचबो नहि केलियै से हम पहिनहि समितिक मीटिंग मे बता देने छी।"

अध्यक्ष रिनि चिन्ता व्यक्त करैत विचार देलनि—"यदि हम सब ओहि पाइप कें नष्ट कऽ कए आन ठाम दोसर पाइप लगा ली तखन?"

मिति कें हँसी छुटलनि, बजलाह—"दोसर पाइप लगेबाक विचारो हुनके सबहिक देल अछि। निश्चित ओ लोकनि समुद्रक सतह पर जहिना ई पाइप तकलनि तहिना दोसरो ताकि लेता। खोलबाक लूरि सेहो भैए गेल छनि।"

मीटिंग मे एहिना बहुत बात पर चर्चा भेल। ने हुनका लोकनि कें स्वतंत्र देशक रूप मे रहब उचित बुझा रहल छलनि आ ने भारतक एकटा राज्यक रूप मे रहब। अनिश्चयक मुख्य कारण छल राजनीति शास्त्रक अज्ञानता।

अन्त मे पूर्व सचिव यमि अपन विचार रखलनि—"की हर्ज जे हम सब एक बेर धरतीक कोनो लोक संग विमर्श कऽ ली? हमर विचार जे शैलेशजी कें एतए बजाओल जाए।" ई विचार सबकें मान्य भेलै। किरि बता देलखिन जे ओ पहिनहि सँ शैलेशजी कें एहि लेल तैयार कऽ लेने छथि।

असि फेर दौड़ाओल गेला अनुक घर। अनुक मम्मी अकचकैली, पुछलखिन—"अनायास एबाक कारण?"

"शैलेशजी कतए छथि?"

"ओ तऽ बैंक मे छथि, घुरबा मे देरी हेतनि।"

"हम आएल छी हुनका लऽ जेबा लेल। हम सब किछु निर्णय नहि लऽ पाबि रहल छी। हुनकर मदति चाही। हम फेर कहिया आबी?"

अनु पापा कें फोन लगेलक आ सब बात कहलकनि। हुनका तऽ दूनू प्रस्ताव

बुझले छलनि आ किरिक अनुरोध सेहो। ओ रवि दिन जेबाक बात स्वीकार केलनि। अनु इशारा सँ असि कें कहि देलखिन जे सब गोटे ओतए जाएत, ओहिना तैयार भऽ कए आबथि।

अगिला रवि दिन असिक संग शैलेशजी सपरिवार पहुँचला समुद्र मे डूबल टापू पर। अनु आ विभारानी तऽ लागि गेली अपन पुरान सखी बहिनपाक संग, अपने शैलेशजी बैसला समितिक अत्यन्त महत्वपूर्ण मीटिंग मे। एही मीटिंग मे निर्णय लेबाक छलै एहि भटकल बिसरल मैथिल सन्तानक घर वापसीक प्रक्रिया। ताहि लेल एहि मीटिंग मे विशेष रूपें आमंत्रित छला पछिला पाँच वर्षक समितिक सब सदस्य लोकनि।

बिना कोनो भूमिका के शैलेशजी अपन भाषण शुरू केलनि—"हम दूनू प्रस्ताव पर गहन चिन्तन केलहुँ। आगू बढ़बा सँ पहिने हमर एकटा प्रश्नक उत्तर दिअऽ। पछिला बेर हम एकर व्यवहार नहि देखने रही तें शंका बनल अछि। अपने सब एतए कोन मुद्राक व्यवहार करैत छिऐ?"

उत्तर देलखिन अध्यक्ष रिनि—"एतए हम सब परिवार जकाँ सब दिन रहलहुँ। किछु सौ के जनसंख्या सँ बढ़ैत किछु लाख तक पहुँचल छी किन्तु सिद्धान्त एखनहु ओएह रखने छी। सब सम्पत्ति सरकारी बूझि, जे व्यक्ति जाहि काज मे दक्ष छथि, हुनकर उत्पाद के यथोचित मूल्यांकन कए हुनकर आवश्यकताक वस्तु दऽ देल जाइत छनि। निजी सम्पत्तिक कोनो चर्चे नहि। शिक्षा, स्वास्थ्य आदिक चिन्ता समितिए करैछ। लोक कथी लेल निजी सम्पत्ति जमा करत? एहि छोट टापू मे एहन की छै जे ओकरा उपलब्ध नहि हेतै आ कीनए पड़तै?"

शैलेश जी एहि पर बुझेलखिन—"बर बेस। किन्तु जखन एहि टापू कें टूरिस्ट लेल खोलि देबै तखन तऽ किछु सोचऽ पड़त। मानि लिअऽ कोनो टूरिस्ट किछु विशेष उत्पाद, एकटा सुन्दर चित्रे किएक नहि होअए, अपना संग लऽ जाए चाहैत हो तखन ओकरा सबटा वस्तु फोकटे मे नहि ने दऽ देबै। कतेक कें फोकट मे दैत रहबै? एही लेल मुद्राक काज होइत छै।

आब हम अपन बात आगू बढ़बैत छी। एतेक छोट जनसंख्या बला जे कोनो स्वतंत्र देश धरती पर छै से मात्र कहबा लेल स्वतंत्र। कोनो ने कोनो महाशक्तिक उपनिवेश जकाँ बनि कए रहैत अछि। अपने सबहिक संग पैघ बाधा अछि जे जलक भीतर जाहि मानव रूप मे रहि आएल छी ओहि रूप मे उपर मे जाएब सम्भव नहि होएत।"

एहि बात पर वैज्ञानिक मिति बीचहि मे टोकि देलखिन—"हम किछु डिजाइन

तैयार कएल अछि। जखन अहाँक वैज्ञानिक विशिष्ट चैम्बर बना कए एतए आबि सकैत छथि तऽ हमहूँ सब ओकर विपरीत प्रभाव बला चैम्बर बना कए एही देहें धरती पर जा सकैत छी।" एतबा कहि ओ बगल मे राखल एकटा गिगबैग सदृश वस्तु हुनका देखा देलखिन। फेर कहलखिन–"वैज्ञानिक विवेक जे चैम्बर बना कए आएल छलाह ओ ठाढ़े रहैत छलै, हमर ई चैम्बर बहुत लचीला अछि। अपितु हम हुनको लेल एहन लचीला चैम्बर डिजाइन कऽ रहल छी, जल्दीए तैयार भऽ जाएत। लचीला चैम्बर रहला सँ बैसै उठै मे कोनो समस्या नहि रहतै, बुझियौ एक हिसाबें स्पेससूट जकाँ रहतै।"

शैलेशजी प्रशंसा करैत बजलाह–"ई तऽ उत्तम आविष्कार भेल। किन्तु एहि शरीरें यात्रा उड़ि कए नहि कऽ सकबै ने। जहाजे सँ यात्रा करए पड़त। धरतीक लोक हवाइ जहाज सँ यात्रा कऽ लैत अछि। किन्तु समुद्रक भीतर एतए हवाइ जहाज तऽ औतैक नहि।"

किरि जोड़लनि–"इएह एकटा कमी अछि, एखन तक जहाज हम सब बनेबे नहि केलहुँ। किन्तु मिति अपन टीम कें ओहू पाछू लगा देने छथिन, साल भरिक भीतरे तैयार भऽ जेबाक चाही।"

"बहुत नीक बात। तैयो हमरा लगैत अछि ई सब वैज्ञानिक समस्याक समाधान ताकि लेलो पर राजनीतिक समस्या रहिए जाएत। मुद्रा चाहबे करी। आरो बहुत प्रक्रिया छै। दिनानुदिन ई सब बढ़ले जाएत।

एतेक कम जनसंख्या मे नीक प्रशिक्षित सेना बनाएब कोना पार लागत? अनेक देश मे दूतावासक खर्चा वहन करए पड़त आ स्वतंत्र देश रहला सँ सब समय कोनो शत्रु देशक आक्रमणक खतरा बनले रहत। अपने सब जे टेक्नोलॉजी विकसित कऽ लेने छी ओकरा जनबा लेल अन्य देश कोनो सीमा तक जा सकैत अछि, पूरा टापू कें नष्ट सेहो करबा सकैत अछि"–शैलेशजी स्वतंत्र देशक विरोध मे तर्क देलखिन।

एहि तरहें बहस चलैत रहल। मिति एहि मे तटस्थ छलाह। हुनका राजनीति सँ कोनो सरोकार नहि छलनि। अन्त मे पूर्व सचिव यमि बजलाह–"हमरा सब के मूल उद्देश्य छल धरती पर मिथिलाक मुख्य धारा सँ जुड़ि कए कोनहुना माँ मिथिलाक सेवा करी। एतए हम सब जे वैज्ञानिक विकास केलहुँ ताहि सँ अपन जन्मभूमिक विकास करी, ओकर उत्थान करी। एहि मे हमरा बुझने स्वतंत्र देश बनला सँ हम सब उनटे दिशा मे चल जाएब।"

एतेक गम्भीर विचार कियो नहि सोचने छलाह। आब बहसक कोनो काज नहि रहि गेलै। अध्यक्ष रिनि अन्त मे बजलाह–"भारतक राज्य बनबा लेल हम सब तैयार छी। आब एकेटा बात–एकर नाम की होअए?"

किरि अपन पुरना विचार दोहरौलनि–"किएक ने हम सब एकर नाम मिथिला राज्य राखि दी?"

शैलेशजी एहि मे छोट संशोधन प्रस्तुत केलनि–"भारत मे राज्य सबहक जे नाम छै, अहूँ सब पढ़ने होएब, ओहि मे राज्य शब्द जोड़ल नहि छै। हमर विचार जे एकरा मिथिला प्रदेश कहल जाए। पहिनहु सँ उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश आदि छैके। नवका राज्य होएत मिथिला प्रदेश।"

ई विचार सबकें पसिन्न पड़लनि।

एहि ऐतिहासिक प्रस्ताव कें लिखबाओल गेल, उपस्थित सब सदस्यक हस्ताक्षर लेल गेल आ एक प्रति भारत सरकार कें पठेबाक लेल शैलेशजी कें दऽ देल गेल। असिक संग शैलेशजी सपरिवार घुरि अएला धरती पर। ओ आइ बहुत प्रसन्न छला आ किछु दुखी सेहो। प्रसन्नता एहि बातक जे एहि जलमग्न सभ्यता कें मुख्य धारा मे सम्मिलित करबा मे हुनको किछु योगदान भेलनि, दुख एहि बात लऽ कए जे धरती पर मैथिल लोकनि अलग राज्यक माँग करिते रहि गेला आ भेटल अलग राज्य समुद्रक अतल गहराइ मे। केहन बिडम्बना !

भारत सरकार द्वारा शीघ्रे एहि जलमग्न टापू कें 'मिथिला प्रदेश'क रूप मे मान्यता देबाक बात स्वीकार कएल गेल।

धरती पर एहि नव राज्य लेल एकटा स्थानीय कार्यालय स्थापित कएल गेल माहीपुर गाम मे। ई एक प्रकारें भारत सरकारक संस्थानक रूप मे कार्य करैत सांस्कृतिक केन्द्र भेल। ओहि केन्द्र मे गोला सब अबैत अछि तऽ साइबोर्गे रूप मे मुदा एतए इलाकाक किछु एहन लोक, जे बहुत दिन सँ गाम-घर छोड़ि देने छथि, के डुप्लीकेट रूप मे कार्यालय मे बैसैत अछि। एहि रूप मे काजो करबा मे सुविधा होइत छै।

एहि केन्द्रक बनला सँ क्षेत्रक विद्वान लोकनि कें जलमग्न सभ्यताक इतिहास पर अन्वेषण करबाक अवसर भेटलनि। ओहि सभ्यताक समस्त शोध कार्य, ग्रन्थ आदि मिथिलाक्षर मे रहलाक कारणें एतए सबकें फेर बिसरल मिथिलाक्षर सीखए पड़लनि। ओतबे नहि देशक वैज्ञानिक आ इंजीनियर लोकनि सब मिथिलाक्षर आ मैथिली भाषा सिखलनि। बिना सिखने हुनका ओहि उन्नत सभ्यताक विज्ञान आ इंजीनियरिंग के लाभ नहिए भेटि सकैत छलनि।

धरती परहक मिथिला सँ गीतक सीडी आदि खूब निर्यात भऽ रहल छै। किछु कलाकार ओतए जाकए अपन प्रोग्राम सेहो कऽ चुकल छथि। बहुत पुरान मैथिली

गीतनाद, जे एतुका लोक बिसरि गेल छल, ओतुका कलाकार आबि कए सुना दैत छथिन। यूट्यूब पर ओ पसरि रहल छै आ बेस लोकप्रिय भेल जा रहल छै।

स्थानीय जिलाधिकारी अनु कें सम्मानित केलखिन। ओकरे बुद्धि आ साहसिक प्रयास सँ पैघ रहस्यक पट खूजल। सब मिला कए उड़नछू गोलाक अवतरण सँ मिथिलाक बहुत विकास भेलै आ भेटलै अपन बिसरल सन्तानक अप्रतिम काजक सूत्र।

[redacted]